आदिवासी अस्मिता और हिन्दी साहित्य

Course Code: M23HD06DE

Discipline Specific Elective Course

Postgraduate Programme in

Hindi Language and Literature

SELF LEARNING MATERIAL

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University of Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

SGOU

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

आदिवासि अस्मित और हिन्दी साहित्य

Course Code: M23HD06DE

Semester- IV

Discipline Specific Elective Courses
Postgraduate Programme in Hindi
Self Learning Material

(Model Question Paper Sets)

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

आदिवासि अस्मित और हिन्दी साहित्य

Course Code: M23HD06DE
Semester- IV
Discipline Specific Elective Courses
Postgraduate Programme in
Hindi

Academic Committee

Prof. Dr. K. Ajitha
Dr. Jayachandran R.
Dr. R. Sethunath
Dr. Sunitha GopalaKrishnan
Dr. Herman P.J.
Dr. T. A. Anand
Dr. Praneetha P.
Dr. P.G. Sasikala
Dr. C. Balasubramanian

Development of the Content

Dr. Krishna Preethy A.R.

Review and Edit

Dr. Anagha A.S.

Linguistics

Dr. Veena J.

Scrutiny

Dr. Krishna Preethy A.R.
Christina Sherin Rose J.,
Dr. Sudha T.
Dr Indu G. Das.

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Jobin J.

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

First Edition
October 2025

Copyright
© Sreenarayanaguru Open University

ISBN 978-81-990686-1-2

9 788199 068612

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have

firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the PG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P.

01-10-2025

SGOU

Contents

BLOCK 01	**आदिवासी संदर्भ**	**01**
इकाई 1	आदिवासी कौन?	02
इकाई 2	भारत में आदिवासी प्रश्न और आदिवासियों के आंदोलन, आर्थिक हाशिएकरण और आदिवासी, आदिवासी जन के अधिकारों का संयुक्त राष्ट्र संघ घोषणापत्र	09
इकाई 3	उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया और आदिवासियों का शोषण, आदिवासी समस्याएँ- भूख, गरीबी, हाशिएकरण, अन्धविश्वास, बेरोज़गारी, अस्तित्व संकट, विस्थापन, भूमि हस्तांतरण, नक्स्लवाद, भारत का वन अधिकार कानून	16
इकाई 4	विस्थापन और विलोपन (वैश्विक संदर्भ), विस्थापन का दंश	26
BLOCK 02	**अस्मितामूलक विमर्श और आदिवासी**	**35**
इकाई 1	स्मृति, इतिहास और अस्मिता, अस्मिता और सत्ता हाशिए की अस्मिताऐं आदिवासी अस्मिता	36
इकाई 2	विश्व में आदिवासी साहित्य के विभिन्न रूप- नेटिव अमेरिकन लिटरेचर कलर्ड लिटरेचर अफ्रिकन, अमेरिकन लिटरेचर ब्लैक लिटरेचर एबोरजिनल लिटरेचर इंडीजीनियस लिटरेचर	44
इकाई 3	अस्मितामूलक विमर्श और आदिवासी, आदिवासी विमर्श की परंपरा-पुरखा साहित्य, आदिवासी भाषाओं में लिखित साहित्य की परंपरा	52
इकाई 4	विविध आदिवासी आंदोलन-चुआर आंदोलन, संथाल आंदोलन, कोल आंदोलन, भूमिज आंदोलन, गोड आंदोलन, मुंडा आंदोलन	60
BLOCK 03	**समकालीन हिन्दी आदिवासी लेखन-कविता**	**69**
इकाई 1	आदिवासी कविताओं में अस्मिता और वजूद का स्वर, आदिवासी कविता: अंतर्वस्तु और मूल्यांकन, प्रमुख कवि- ग्रेस कुजूर, रोज केरकट्टा, हरिराम मीणा, महादेव टोप्पो, निर्मला पुतुल, वंदल टेटे, विजय सिंह मीणा	70
इकाई 2	निर्मला पुतुल और वाहरु सोनवणे की कविता में आदिवासियत	84
इकाई 3	महादेव टोप्पो और जसिंता केरकट्टा की कविता में आदिवासी	99
इकाई 4	रामदयाल मुंडा और मदन कश्यप की कविता में आदिवासी स्वर	112
BLOCK 04	**समकालीन हिन्दी आदिवासी कथा लेखन**	**124**
इकाई 1	आत्मकथात्मक लेखन और आदिवासी साहित्य, आदिवासी कहानियों का सांस्कृतिक पक्ष, आदिवासी कहानियों में संघर्ष एवं प्रतिरोध	125
इकाई 2	प्रमुख आदिवासी हिन्दी कहानीकार वाल्टर (भँगरा तरुण, पीटर पॉल एक्का, रोज केरकट्टा, मंगल सिंह मुंडा, विजय सिंह मीणा, राम दयाल मुंडा, रोज के एलिस एक्का)	132
इकाई 3	पीटर पॉल एक्का राजकुमारों के देश में (कहानी), हरिहर वैष्णव-मोहभंग (कहानी)	143
इकाई 4	मंगल सिंह मुंडा और हरिराम मीणा की कहानी	154

SGOU

BLOCK 01

आदिवासी संदर्भ

SGOU

Block Content

Unit 1 : आदिवासी कौन?

Unit 2 : भारत में आदिवासी प्रश्न और आदिवासियों के आंदोलन, आर्थिक हाशिएकरण और आदिवासी, आदिवासी जन के अधिकारों का संयुक्त राष्ट्र संघ घोषणापत्र

Unit 3 : उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया और आदिवासियों का शोषण, आदिवासी समस्याएँ- भूख, गरीबी, हाशिएकरण, अन्धविश्वास, बेरोज़गारी, अस्तित्व संकट, विस्थापन, भूमि हस्तांतरण, नक्स्लवाद, भारत का वन अधिकार कानून

Unit 4 : विस्थापन और विलोपन (वैश्विक संदर्भ), विस्थापन का दंश

इकाई 1

आदिवासी कौन?

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिवासी समुदाय की पहचान, जीवनशैली और संस्कृति को समझना।
- आदिवासियों के ऐतिहासिक संघर्षों और उत्पीड़न के कारणों की पहचान करना।
- भारतीय संविधान में आदिवासियों को मिलने वाली विशेष मान्यता और अधिकारों के बारे में जानना।
- आदिवासी समाज की सांस्कृतिक विविधता और उसकी सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना।
- स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नेताओं की भूमिका और उनके योगदान को समझना।

Background / पृष्ठभूमि

आदिवासी वे मानव समूह हैं जो विशेष भौगोलिक और पर्यावरणीय क्षेत्रों में निवास करते हैं, एक जैसी बोली बोलते हैं, समान जीवनशैली अपनाते हैं तथा अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं और पहचान को संरक्षित रखते हैं। वे सदियों से जंगलों, पहाड़ों और वनों में रहकर अपने धार्मिक विश्वासों, सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखते आए हैं। यद्यपि आदिवासी समाज में औपचारिक शिक्षा की सीमाएँ हो सकती हैं, फिर भी उनका जीवन प्रकृति, समाज और संस्कृति से गहराई से जुड़ा होता है। ये समुदाय इस भूमि के मूल निवासी माने जाते हैं, जिन्हें 'अबॉरिजनल' या 'आदि सन्तान' कहा जाता है, क्योंकि वे इस भूमि के प्रथम स्वामी रहे हैं। भारतीय संविधान ने इन्हें 'अनुसूचित जनजाति' के रूप में मान्यता प्रदान की है। उनका इतिहास संघर्ष, उपेक्षा और विस्थापन की पीड़ा से भरा हुआ है, फिर भी उनकी सामूहिकता, प्रकृति-निष्ठ जीवनशैली और सांस्कृतिक दृढ़ता ने उन्हें अपनी अस्मिता बनाए रखने की शक्ति दी है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदिवासी, पर्यावरण, जीवनशैली, परंपराएँ, सांस्कृतिक मूल्य, संघर्ष, उत्पीड़न, भारतीय संविधान, अनुसूचित जनजाति, शोषण, गरीबी, सामाजिक असमानता, महात्मा जोतिबा फूले, स्वतंत्रता संग्राम, वीर आदिवासी नेता, बिरसा मुंडा, सांस्कृतिक विविधता

Discussion / चर्चा

1.1.1 आदिवासी कौन?

- पारंपरिक जीवन और प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव

1.1.1.1 आदिवासी समाज का इतिहास और उत्पीड़न

- आदिवासी समुदायों को विस्थापित किया गया

आदिवासी समाज ने भारतीय इतिहास में कई संघर्षों का सामना किया है। प्राचीन काल में आर्य और अनार्य समुदायों के बीच संघर्षों के परिणामस्वरूप आदिवासी समुदायों को जंगलों और पहाड़ों में विस्थापित किया गया। उन्हें 'दैत्य', 'पिशाच', 'राक्षस' और 'असुर' जैसे अपमानजनक शब्दों से पुकारा गया, जिससे समाज में उनके प्रति नफरत और भय का माहौल बना। हालांकि, इन संघर्षों और उत्पीड़न के बावजूद, आदिवासियों ने अपनी संस्कृति, परंपराएँ और जीवनशैली को बनाए रखा और आज भी उन्हें अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

- संघर्ष केवल भूमि से जुड़ा नहीं था

महात्मा जोतिबा फूले ने आदिवासियों के संघर्ष को लेकर कहा था कि आदिवासी इस भूमि के पहले स्वामी थे और उन्हें जंगलों से विस्थापित किया गया। उनका यह संघर्ष केवल भूमि से जुड़ा नहीं था, बल्कि यह उनके सांस्कृतिक और सामाजिक अस्तित्व का भी था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में वीर आदिवासी नेताओं जैसे बिरसा मुंडा, तंट्या भील और शंकरशाह ने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। इन नेताओं का योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण था और उनके संघर्षों ने आदिवासी समाज को एकजुट किया।

1.1.1.2 आधुनिक भारत में आदिवासी

- भारतीय संविधान ने आदिवासी समुदायों को 'अनुसूचित जनजाति' (Scheduled Tribes) के रूप में मान्यता दी है।

आधुनिक भारत में आदिवासी शब्द का उपयोग उन समुदायों के लिए किया जाता है, जो विशिष्ट पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में रहते हैं और अपनी पारंपरिक जीवनशैली को बनाए रखते हुए स्वतंत्र रूप से जीवनयापन करते हैं। भारतीय संविधान ने आदिवासी समुदायों को 'अनुसूचित जनजाति' (Scheduled Tribes) के रूप में मान्यता दी है, जिसके तहत इन्हें विशेष कानूनी सुरक्षा और अधिकार प्रदान किए गए हैं। संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत, राष्ट्रपति को यह अधिकार है कि वह किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र के लिए विशिष्ट जनजातियों या समुदायों को अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता दे सकते हैं।

SGOU

1.1.1.3 आदिवासी समाज की पहचान

- आदिवासी समाज अपनी सांस्कृतिक विविधता, परंपराओं और जीवनशैली के लिए प्रसिद्ध है

आदिवासी समुदायों की पहचान उनके विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक तत्वों पर आधारित है। आदिवासी समाज अपनी सांस्कृतिक विविधता, परंपराओं और जीवनशैली के लिए प्रसिद्ध है। इनकी प्रमुख पहचान उनके पारंपरिक जीवन, प्रकृति के साथ गहरे संबंध और स्वायत्तता में है। आदिवासी अपनी स्थानीय संसाधनों जैसे भूमि, जल और वनस्पतियों पर निर्भर रहते हैं और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति उनका दृष्टिकोण सामूहिक और टिकाऊ होता है। वे बाहरी हस्तक्षेपों से बचते हुए अपनी परंपराओं और जीवनशैली का पालन करते हैं।

1.1.1.4 आदिवासी संस्कृति और जीवनशैली

- आदिवासी समुदायों का धर्म भी प्रकृति के प्रति सम्मानित होता है।

आदिवासी समाज की संस्कृति में प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा और सम्मान होता है। उनकी जीवनशैली सरल और उपयोगितावादी होती है, जिसमें एक दूसरे की सहायता और सामूहिकता का भाव प्रमुख होता है। आदिवासी समुदायों का धर्म भी प्रकृति के प्रति सम्मानित होता है। उनकी पूजा-पाठ प्रकृति से जुड़े होते हैं, जैसे पेड़-पौधे, जल और आकाश की पूजा करना। आदिवासी जीवनशैली में जाति और लिंग भेदभाव का अभाव होता है और सामूहिकता और समानता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

1.1.1.5 आदिवासी और मुख्यधारा समाज

- आदिवासी समुदाय अपनी भूमि, जल, वन और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं

आदिवासी समुदाय मुख्यधारा समाज से अलग जीवन जीते हैं। उनकी जीवनशैली प्रकृति और पारंपरिक संसाधनों पर आधारित होती है। आदिवासी समुदाय अपनी भूमि, जल, वन और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। बाजार अर्थव्यवस्था से इनकी दूरी अधिक होती है और इनका जीवन प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सामूहिकता पर आधारित होता है। हालांकि, आधुनिकता, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण ने इनकी जीवनशैली को प्रभावित किया है।

1.1.1.6 आदिवासी समस्याएँ और चुनौतियाँ

- आदिवासी समुदायों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

आधुनिक भारत में आदिवासी समुदायों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें भूमि अधिग्रहण, आर्थिक शोषण, सामाजिक असमानता, स्वास्थ्य और शिक्षा की कमी और लैंगिक भेदभाव प्रमुख हैं। भूमि अधिग्रहण और औद्योगिकीकरण के कारण आदिवासी क्षेत्रों से इनके पारंपरिक संसाधनों को छीन लिया जा रहा है। उदाहरण के लिए, भारत में 90% कोयला खदानें, 72% वन और 80% खनिज पदार्थ आदिवासी भूमि पर स्थित हैं, लेकिन इन संसाधनों का लाभ आदिवासियों को नहीं मिल रहा है। इसके कारण 85% आदिवासी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं और उनका विस्थापन भी जारी है।

1.1.1.7 भूमि अधिकारों का हनन

आदिवासी समुदायों को अपने भूमि और संसाधनों का स्वामित्व पूरी तरह से नहीं

SGOU

- पारंपरिक भूमि से विस्थापित किया जाता है।

मिल पाता। इसके परिणामस्वरूप उन्हें उनके पारंपरिक भूमि से विस्थापित किया जाता है और उनकी जीवनशैली पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। विकास के नाम पर भूमि अधिग्रहण और औद्योगिकीकरण के कारण आदिवासी क्षेत्रों से प्राकृतिक संसाधनों को छीन लिया जा रहा है।

1.1.1.8 आदिवासी शब्द का संवैधानिक विवाद

भारतीय संविधान ने आदिवासियों को 'अनुसूचित जनजाति' के रूप में मान्यता दी है, लेकिन आदिवासी शब्द को संवैधानिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आदिवासी शब्द उनके पहचान, संस्कृति और इतिहास को संदर्भित करता है, लेकिन इसे सरकारी दस्तावेजों में स्वीकार नहीं किया गया है। आदिवासी समाज को अक्सर 'गिरिजन', 'वनवासी' या 'जंगली' जैसे अपमानजनक शब्दों से संबोधित किया जाता है, जिससे उनकी पहचान और संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

1.1.1.9 आदिवासी धर्म और सांस्कृतिक पहचान

आदिवासी धर्म प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान पर आधारित है। आदिवासी पूजा-पाठ खुले आकाश में करते हैं और इनका कोई विशेष पूजा स्थल या इमारत नहीं होता। उनका धर्म प्राकृतिक तत्वों के सम्मान पर आधारित होता है, जिसमें पेड़, जल और सूर्य की पूजा की जाती है। भारतीय जनगणना में आदिवासियों के धर्म के लिए एक विशिष्ट कॉलम नहीं है, जिसके कारण उनकी धार्मिक पहचान को खतरा हो सकता है। यदि आदिवासियों को उनके धर्म के लिए एक विशिष्ट कॉलम दिया जाता, तो यह उनकी पहचान को मजबूत कर सकता और उन्हें एकजुट कर सकता।

1.1.1.10 आदिवासी अधिकार और संघर्ष

- आदिवासी समुदायों को अब भी शोषण और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है और उन्हें अपने अधिकारों के लिए जागरूकता बढ़ाने और संघर्ष करने की आवश्यकता है।

आदिवासी समाज आज भी अपने अधिकारों, भूमि, संसाधनों और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहा है। सरकार ने विभिन्न योजनाओं और आरक्षण प्रावधानों के माध्यम से आदिवासियों के विकास और संरक्षण के लिए कुछ कदम उठाए हैं, लेकिन इन योजनाओं का सही तरीके से पालन नहीं हो पा रहा है। आदिवासी समुदायों को अब भी शोषण और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है और उन्हें अपने अधिकारों के लिए जागरूकता बढ़ाने और संघर्ष करने की आवश्यकता है।

- वे अपने अधिकारों और पहचान के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

आदिवासी समुदाय भारतीय समाज का अभिन्न हिस्सा हैं, जिनकी अपनी संस्कृति, धर्म और पहचान है। वे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हुए अपनी पारंपरिक जीवनशैली को बनाए रखते हैं। हालांकि आदिवासी समाज को कई समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे भूमि अधिग्रहण, शोषण और सामाजिक असमानता, लेकिन वे अपने अधिकारों और पहचान के लिए संघर्ष कर रहे हैं। आदिवासी समुदाय की समस्याओं और उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उनके प्रति सहानुभूति दिखाना आवश्यक है, ताकि उनका सम्मान और समृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आदिवासियों का जीवन और संस्कृति भारतीय समाज के एक अभिन्न हिस्सा हैं, लेकिन वे लंबे समय से शोषण, उपेक्षा और संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं। कृषि, शिकार और वनोपज पर आधारित उनकी जीविका आज़ादी के साथ खतरे में पड़ी हुई है, क्योंकि उनके संसाधन लगातार छीने जा रहे हैं। औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण उनके पास अपने प्राकृतिक संसाधनों का कोई अधिकार नहीं बचा है, जिससे वे गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने को मजबूर हो गए हैं। इसके अलावा, उनका सामाजिक और सांस्कृतिक अस्तित्व भी संकट में है, क्योंकि उनकी पहचान को 'अनुसूचित जनजाति' के रूप में पहचानने की बजाय आदिवासी शब्द को उपेक्षित किया गया है।

आदिवासी संस्कृति, जो सामूहिकता, प्राकृतिक प्रेम और सरल जीवन शैली पर आधारित है, आज भी संरक्षित और सम्मानित नहीं की गई है। उनकी धार्मिक पहचान का अभाव और जनगणना में उन्हें उचित स्थान का न मिलना उनके आत्मसम्मान को चोट पहुँचाता है। आदिवासियों की आवाज़ अब पहले से अधिक मुखर हो रही है और वे अपनी पहचान, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

अंततः यह स्पष्ट है कि आदिवासियों को उनके अधिकारों और पहचान की पूर्ण मान्यता और सुरक्षा मिलनी चाहिए। उनकी संस्कृति और जीवनशैली को सम्मान दिया जाना चाहिए, ताकि वे समाज में अपनी अस्मिता के साथ सम्मान से जी सकें। सरकार और समाज की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे आदिवासी समुदाय के साथ न्याय करें और उन्हें उनके अधिकार प्रदान करें।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के आदिवासी समुदायों की जीविका पर प्रभाव को व्यक्त कीजिए।
2. भारत में 'आदिवासी' शब्द को संवैधानिक मान्यता न मिलने का आदिवासियों पर प्रभाव स्पष्ट कीजिए।
3. आदिवासी संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ और मुख्यधारा समाज से उनकी भिन्नताएँ व्यक्त कीजिए।
4. विकास परियोजनाओं के कारण आदिवासी समुदायों के विस्थापन और सरकार की नीतियों को स्पष्ट कीजिए।
5. आदिवासी समुदायों को उनकी धार्मिक पहचान पर आलेख लिखिए।

SGOU

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी कौन - रमणिका गुप्ता
2. आदिवासी चितंन की भूमिका - गंगा सहाय मीणा
3. उपनिवेशवाद और आदिवासी संघर्ष - हेरॉल्ड एस. तोपनो
4. आदिवासी समाज और शिक्षा-रामशरण जोशी
5. आदिवासी और विकास के भद्रलोक-अश्वनि कुमार पंकज
6. आदिवासी लोक और संस्कृति - रमेश चन्द मीणा
7. झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टीविस्ट के नोट्स - वीर भारत तलवार
8. हिंदी साहित्य का ज्ञानकोश - शंभुनाथ

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

भारत में आदिवासी प्रश्न और आदिवासियों के आंदोलन, आर्थिक हाशिएकरण और आदिवासी, आदिवासी जन के अधिकारों का संयुक्त राष्ट्र संघ घोषणापत्र

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भारत में आदिवासी समुदायों के संघर्षों और उनकी ऐतिहासिक यात्रा को समझा जा सकेगा।
- आदिवासी आंदोलनों और उनके नेताओं की भूमिका का विश्लेषण किया जा सकेगा, जिन्होंने अधिकारों के लिए संघर्ष किया।
- औद्योगिकीकरण और विकास परियोजनाओं के आदिवासी समाज पर होने वाले प्रभाव को समझने की क्षमता विकसित होगी।
- संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आदिवासी अधिकारों के घोषणापत्र की भूमिका और इसके महत्व को समझा जा सकेगा।
- आदिवासी समुदायों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं को समझने में गहरी समझ पैदा होगी।

Background / पृष्ठभूमि

भारत में आदिवासी समुदायों का इतिहास संघर्षों से भरा हुआ है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान और भूमि अधिकारों की रक्षा के लिए जारी रहे हैं। आदिवासी समाज, जो अपनी पारंपरिक जीवनशैली और संस्कृति के लिए जाना जाता है, ब्रिटिश काल से लेकर आज तक विभिन्न प्रकार के शोषण और उत्पीड़न का सामना करता आया है। औद्योगिकीकरण और विकास परियोजनाओं ने उनकी भूमि, जल और जंगलों पर अवैध कब्जा किया है, जिससे उनका अस्तित्व संकट में पड़ गया है। आदिवासी आंदोलन इतिहास में बिरसा मुंडा जैसे नेताओं द्वारा किए गए संघर्षों का हिस्सा रहा है, जिन्होंने उनके अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया। आज भी, आदिवासी समाज अपने पारंपरिक संसाधनों और सांस्कृतिक पहचान की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने आदिवासी अधिकारों के संरक्षण के लिए एक घोषणापत्र जारी कर उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अधिकारों की सुरक्षा की दिशा में एक वैश्विक कदम उठाया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदिवासी, संघर्ष, आंदोलन, अधिकार, औद्योगिकीकरण, भूमि अधिकार

SGOU

Discussion / चर्चा

1.2.1 भारत में आदिवासी प्रश्न और आदिवासियों के आन्दोलन

भारत में आदिवासी प्रश्न और उनके आंदोलनों का इतिहास अत्यंत समृद्ध और संघर्षों से भरा हुआ है। आदिवासी समाज, जो अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान, धर्म और जीवनशैली के लिए जाना जाता है, सदियों से साम्राज्यवादी शासन, ज़मींदारी व्यवस्था और औद्योगिकीकरण के खिलाफ संघर्ष किया है। आदिवासी समाज का आदिवासी प्रश्न मुख्य रूप से भूमि अधिकारों, संसाधनों के उपयोग और सामाजिक, आर्थिक न्याय से जुड़ा हुआ है।

1.2.2 आदिवासी समाज और उनका संघर्ष

आदिवासी समाज का प्रमुख संघर्ष उनकी भूमि, जल और जंगल पर नियंत्रण को लेकर है। ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान और उसके बाद से आदिवासी समुदायों को उनके पारंपरिक अधिकारों से वंचित किया गया। आदिवासी समाज की ज़मीनों पर अवैध कब्ज़े, खनिज संसाधनों की लूट और जंगलों की अंधाधुंध कटाई ने उन्हें अत्यधिक नुकसान पहुँचाया। उनके खिलाफ औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और विकास परियोजनाओं का सिलसिला जारी रहा, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान और अस्तित्व पर खतरे के बादल मंडराने लगे।

1.2.3 आदिवासी आन्दोलन

- बिरसा मुंडा का 'उलगुलान' आंदोलन (1899-1900) आदिवासी आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़ था

आदिवासी आंदोलनों की शुरुआत ब्रिटिश शासन के दौरान हुई थी। बिरसा मुंडा और तांत्या भील जैसे नेताओं ने आदिवासी समुदायों को जागरूक किया और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए संगठित किया। बिरसा मुंडा का 'उलगुलान' आंदोलन (1899-1900) आदिवासी आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़ था। उनके नेतृत्व में आदिवासियों ने ब्रिटिश शासन और ज़मींदारों के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष किया।

- आदिवासी समुदायों ने जंगल के अधिकारों के लिए संघर्ष।

आज भी आदिवासी आंदोलनों में भूमि अधिकार, विस्थापन और पर्यावरणीय न्याय पर जोर दिया जाता है। वर्तमान में भी आदिवासी समुदाय अपनी भूमि, जल और जंगल के अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं, खासकर जब बड़े औद्योगिक परियोजनाओं, खनन और जलवायु परिवर्तन के कारण उनके पारंपरिक संसाधनों पर खतरा उत्पन्न हो गया है।

1.2.4 आर्थिक हाशिएकरण और आदिवासी

- सामाजिक और आर्थिक हाशिए पर है।

आदिवासी समाज भारत में सबसे अधिक सामाजिक और आर्थिक हाशिए पर है। उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक विकास के संदर्भ में कई प्रकार की असमानताओं का सामना करना पड़ता है। उनका पारंपरिक जीवनशैली, जो मुख्यतः कृषि, शिकार और जंगलों से संसाधन जुटाने पर आधारित है, अब बाजार अर्थव्यवस्था से कट चुका है

SGOU

और इसके कारण वे आर्थिक रूप से पिछड़ते जा रहे हैं। आदिवासी समुदायों की हाशिए पर स्थित होने का कारण उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति है, जो उन्हें समाज के मुख्यधारा से बाहर कर देती है।

1.2.4.1 आदिवासी समाज का आर्थिक हाशिएकरण

आदिवासी समाज का आर्थिक हाशिएकरण कई कारणों से हुआ है:

- **भूमि अधिकारों का हनन:** आदिवासी समुदायों के पास पारंपरिक रूप से जो भूमि थी, उसे औद्योगिकीकरण, खनन और अन्य विकास परियोजनाओं के नाम पर छीन लिया गया। भूमि का नुकसान उनके रोजगार, संसाधनों और जीवनशैली पर सीधा असर डालता है।
- **शोषण और बेरोज़गारी:** आदिवासी लोग अक्सर खेतिहर मजदूरी और अन्य अल्पकालिक कामों में लगे होते हैं, जहाँ उन्हें बहुत कम वेतन मिलता है। इसके अलावा, आदिवासी समुदायों को अक्सर उनके काम का उचित मुआवजा नहीं मिलता और उन्हें कई प्रकार की सामाजिक और सांस्कृतिक असमानताओं का सामना करना पड़ता है।
- **शिक्षा और स्वास्थ्य में असमानता:** आदिवासी इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं बहुत खराब हैं। सरकार के विभिन्न योजनाओं के बावजूद, आदिवासी क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं की कमी है, जो उनके विकास में एक बड़ी रुकावट है।
- **आधुनिक अर्थव्यवस्था से कटाव:** आदिवासी समाज अभी भी अपनी पारंपरिक अर्थव्यवस्था पर निर्भर है, जो बाजार अर्थव्यवस्था और औद्योगिकीकरण के साथ तालमेल नहीं बिठा पा रही है। इसके कारण वे अक्सर वैश्विक विकास से पीछे रह जाते हैं और उनकी अर्थव्यवस्था के विकास की गति धीमी हो जाती है।

1.2.4.2 आदिवासी और औद्योगिकीकरण

- आदिवासियों को रोजगार की कमी और सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है।

औद्योगिकीकरण और खनन परियोजनाओं ने आदिवासी समाज के लिए गंभीर आर्थिक और सामाजिक समस्याएं उत्पन्न की हैं। बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण, जल स्रोतों की कमी और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन आदिवासी समाज के अस्तित्व को खतरे में डाल रहा है। साथ ही, आदिवासी लोग अपने परंपरागत जीवन को छोड़कर उद्योगों और शहरों में काम करने के लिए प्रवास कर रहे हैं, लेकिन उन्हें इन स्थानों पर रोजगार की कमी और सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है।

1.2.4.3 आधुनिक आदिवासी संघर्ष और विकास

आधुनिक आदिवासी संघर्षों में मुख्य रूप से उनकी भूमि, जल और जंगल के अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज़ उठाई जा रही है। आदिवासी नेताओं ने सरकारों

और कॉर्पोरेट कंपनियों से मांग की है कि उनकी भूमि और संसाधनों का निष्कलंक तरीके से उपयोग किया जाए और उन्हें उचित मुआवजा दिया जाए। वर्तमान आदिवासी आंदोलनों में पारंपरिक जीवनशैली की रक्षा और आदिवासी समुदायों के आर्थिक अधिकारों को सुनिश्चित करने की कोशिश की जा रही है।

- संस्कृति, पहचान और पारंपरिक अधिकारों के लिए संघर्ष

भारत में आदिवासी प्रश्न और उनके आंदोलनों का इतिहास संघर्षों से भरा हुआ है। आदिवासी समाज ने अपनी पहचान, अधिकारों और जीवनशैली की रक्षा के लिए विभिन्न आंदोलनों का हिस्सा बनकर सामाजिक और राजनीतिक बदलावों को प्रेरित किया है। आज भी, आदिवासी समाज कई समस्याओं का सामना कर रहा है, जिनमें भूमि अधिकारों का हनन, शोषण और आर्थिक असमानता प्रमुख हैं। इसके बावजूद, आदिवासी आंदोलनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वे अपनी संस्कृति, पहचान और पारंपरिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए तैयार हैं और इस संघर्ष के माध्यम से वे भारतीय समाज में अपनी सशक्त पहचान बनाने की दिशा में अग्रसर हैं।

1.2.5 आदिवासी जन के अधिकारों का संयुक्त राष्ट्र संघ घोषणापत्र

संयुक्त राष्ट्र संघ ने आदिवासी जनों के अधिकारों को मान्यता देते हुए 13 सितंबर 2007 को आदिवासी अधिकारों का घोषणापत्र अपनाया। इस घोषणापत्र में आदिवासी समुदायों के अधिकारों को मान्यता दी गई और उनके संरक्षण के लिए वैश्विक स्तर पर कदम उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। इसके प्रमुख पहलुओं में निम्नलिखित बिंदु शामिल हैं:

- आत्मनिर्णय का अधिकार प्रदान करता है।

आत्मनिर्णय का अधिकार: यह घोषणापत्र आदिवासी जनों को अपने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए आत्मनिर्णय का अधिकार प्रदान करता है। इसके तहत आदिवासी समुदायों को अपनी पहचान, संस्कृति और परंपराओं को बनाए रखने के साथ-साथ स्वतंत्र रूप से अपने विकास के लिए निर्णय लेने का अधिकार है।

- पारंपरिक भूमि और संसाधनों पर अधिकार।

- **भूमि और संसाधनों का अधिकार:** आदिवासी जनों को अपनी पारंपरिक भूमि और संसाधनों पर अधिकार प्राप्त है। उनके पास अपने क्षेत्र में रहने और वहां की प्राकृतिक संपदाओं का प्रबंधन करने का अधिकार है। यह अधिकार आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति को सुरक्षित रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- **स्वायत्तता और स्वशासन:** घोषणापत्र में यह भी स्पष्ट किया गया है कि आदिवासी जनों को स्वायत्तता और स्वशासन का अधिकार होना चाहिए, ताकि वे अपनी सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं का संचालन स्वतंत्र रूप से कर सकें।

- यह अधिकार उनके अस्तित्व के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है

- **सांस्कृतिक संरक्षण:** आदिवासी समुदायों को अपनी सांस्कृतिक पहचान, भाषा, परंपराओं और रीति-रिवाजों को संरक्षित करने का अधिकार है। यह अधिकार

SGOU

उनके अस्तित्व के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और उनके विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **विरोध और असहमति का अधिकार**: घोषणापत्र में आदिवासी जनों को यह अधिकार भी दिया गया है कि वे अपने अधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ आवाज उठाएं और किसी भी प्रकार के अत्याचार या शोषण का विरोध कर सकें।

संक्षेप में, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आदिवासी अधिकारों की यह घोषणापत्र आदिवासी जनों को उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की सुरक्षा प्रदान करने के लिए एक वैश्विक मान्यता है। यह आदिवासी समुदायों के लिए स्वतंत्रता, समानता और सम्मान सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

भारत में आदिवासी समाज ने लंबे समय से साम्राज्यवादी शासन, ज़मींदारी व्यवस्था और औद्योगिकीकरण के खिलाफ संघर्ष किया है, जिनका मुख्य मुद्दा भूमि अधिकारों, संसाधनों के उपयोग और सामाजिक-आर्थिक न्याय से जुड़ा है। आदिवासी आंदोलनों की शुरुआत ब्रिटिश शासन के दौरान हुई, जिसमें बिरसा मुंडा का 'उलगुलान' आंदोलन महत्वपूर्ण था। वर्तमान में आदिवासी समुदाय भूमि, जल और जंगल के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं, खासकर औद्योगिकीकरण और खनन के कारण उनके संसाधनों पर खतरा बढ़ा है। आदिवासी समाज आर्थिक और सामाजिक हाशिए पर है, उनका पारंपरिक जीवन अब बाजार अर्थव्यवस्था से कट चुका है, जिससे वे पिछड़ते जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2007 में आदिवासी अधिकारों का घोषणापत्र अपनाया गया, जो आदिवासी जनों को आत्मनिर्णय, भूमि अधिकार, स्वायत्तता और सांस्कृतिक संरक्षण का अधिकार प्रदान करता है, जो उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए एक वैश्विक मान्यता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. भारत में आदिवासी समुदायों को जिन प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें समझाइए।
2. बिरसा मुंडा के 'उलगुलान' आंदोलन का आदिवासी इतिहास में महत्व पर चर्चा कीजिए।
3. औद्योगिकीकरण ने भारत के आदिवासी समुदायों पर जो प्रभाव डाला है, उसे समझाइए।
4. संयुक्त राष्ट्र संघ के आदिवासी अधिकारों पर घोषणापत्र की प्रमुख बातों को समझाइए।
5. भारत में आदिवासी समुदाय आज भी अपनी ज़मीन और संसाधनों के लिए जो संघर्ष कर रहे हैं, उसे स्पष्ट कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी कौन - रमणिका गुप्ता
2. आदिवासी चितंन की भूमिका - गंगा सहाय मीणा
3. उपनिवेशवाद और आदिवासी संघर्ष - हेरॉल्ड एस. तोपनो
4. आदिवासी समाज और शिक्षा-रामशरण जोशी
5. आदिवासी और विकास के भद्रलोक-अश्वनि कुमार पंकज
6. आदिवासी लोक और संस्कृति - रमेश चन्द मीणा
7. झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टीविस्ट के नोट्स - वीर भारत तलवार
8. हिंदी साहित्य का ज्ञानकोश - शंभुनाथ

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया और आदिवासियों का शोषण, आदिवासी समस्याएँ- भूख, गरीबी, हाशिएकरण, अन्धविश्वास, बेरोज़गारी, अस्तित्व संकट, विस्थापन, भूमि हस्तांतरण, नक्सलवाद, भारत का वन अधिकार कानून

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भारत में आदिवासी समुदायों द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख समस्याओं को समझना।
- आदिवासी समाजों में अंधविश्वास, विशेष रूप से महिलाओं पर इसके प्रभाव को पहचानना।
- आदिवासी क्षेत्रों में बेरोज़गारी और पारंपरिक आजीविका के स्रोतों की हानि के कारणों को समझना।
- औद्योगिकीकरण और विकास के आदिवासी भूमि और संसाधनों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना।
- विस्थापन और भूमि हस्तांतरण के कारण आदिवासी समुदायों की पहचान और संस्कृति पर होने वाले प्रभाव को पहचानना।

Background / पृष्ठभूमि

भारत में आदिवासी समुदायों की एक लंबी और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर रही है, लेकिन वे आज भी कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इन समुदायों की अधिकांश आजीविका वनों, कृषि और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है, लेकिन औद्योगिकीकरण और विकास परियोजनाओं के कारण उनके पारंपरिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है। इसके अलावा, अंधविश्वास और कुप्रथाओं का प्रचलन आदिवासी समाज में गंभीर सामाजिक समस्याओं का कारण बन रहा है। बेरोज़गारी और पारंपरिक रोजगार के अवसरों की कमी भी उनके जीवन स्तर को प्रभावित कर रही है। भूमि हस्तांतरण और विस्थापन ने इन समुदायों की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को संकट में डाल दिया है। इसके साथ ही, नक्सलवाद जैसे संघर्ष भी आदिवासी इलाकों में बढ़ रहे हैं, जिससे इन समुदायों के बीच असुरक्षा और हिंसा का माहौल उत्पन्न हो रहा है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदिवासी समुदाय, औद्योगिकीकरण, अंधविश्वास, बेरोज़गारी, भूमि हस्तांतरण, नक्सलवाद

Discussion / चर्चा

उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया और आदिवासीयों का शोषण

उपनिवेशीकरण और आदिवासी समुदायों के बीच संघर्ष एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक परिघटना रही है। जब भी सभ्य और शक्तिशाली उपनिवेशी राष्ट्रों ने आदिवासी क्षेत्रों पर कब्जा किया, तब आदिवासी समुदायों ने अपनी ज़मीन, संस्कृति और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष किया। आदिवासियों का यह संघर्ष न केवल सैन्य लड़ाइयों में था, बल्कि यह एक सांस्कृतिक, धार्मिक और अस्तित्व की लड़ाई भी थी।

उपनिवेशी ताकतों ने आदिवासी भूमि पर कब्जा करना, उनके संसाधनों पर नियंत्रण स्थापित करना और उनकी परंपराओं को नष्ट करने का प्रयास किया। इससे आदिवासियों को अपने जीवन के बुनियादी अधिकारों से वंचित किया गया और उन्हें शारीरिक, मानसिक और सांस्कृतिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। उदाहरण के तौर पर, उत्तरी अमेरिका में सियोक्स और अन्य आदिवासी समुदायों ने उपनिवेशी शासन के खिलाफ लंबी और कठिन लड़ाईयां लड़ीं, जैसे कि लिटिल बिग हॉर्न की लड़ाई, जिसमें उन्होंने अमेरिकी सैनिकों को भारी पराजय दी। इसी तरह, ऑस्ट्रेलिया में आदिवासी समुदायों ने भी उपनिवेशीकरण के खिलाफ संघर्ष किया, हालांकि इन संघर्षों की व्यापकता उत्तरी अमेरिका के मुकाबले कम थी।

इस संघर्ष का एक प्रमुख पहलू यह था कि आदिवासी समुदायों ने अपनी पारंपरिक जीवनशैली और पहचान को बचाने के लिए विभिन्न तरीकों से प्रतिरोध किया। युद्ध और संघर्ष के बावजूद, आदिवासी समुदाय अपनी भाषाओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक धरोहर को बचाने में सफल रहे। जैसे-जैसे उपनिवेशी शासन ने दबाव डाला, आदिवासी समुदायों ने गुरिल्ला युद्ध प्रणाली अपनाई, संपत्ति और जानवरों को नष्ट किया और अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिए प्रयास जारी रखे।

उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष के साथ-साथ, आदिवासी समुदायों ने राजनीतिक संगठनों और आंदोलनों के माध्यम से भी अपनी पहचान और अधिकारों की रक्षा की। उदाहरण स्वरूप, 20वीं सदी में विभिन्न देशों में आदिवासी संगठनों ने राजनीतिक चेतना को बढ़ावा दिया और उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष जारी रखा। जैसे कि 1944 में उत्तरी अमेरिका में 'नेशनल कांग्रेस ऑफ अमेरिकन इंडियंस' का गठन हुआ और 1952 में बोलेविया में आदिवासियों ने भूमि सुधार के लिए संघर्ष किया।

इस प्रकार, उपनिवेशीकरण ने आदिवासी समाजों पर गहरा प्रभाव डाला, लेकिन उनके संघर्ष, उनके सामूहिक प्रतिरोध और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता ने यह साबित किया कि वे अपनी पहचान और अस्तित्व को बचाने में सक्षम थे। उनके संघर्ष और संघर्षों का इतिहास आज भी हमें यह सिखाता है कि किसी भी प्रकार के उपनिवेशीकरण के बावजूद, किसी भी संस्कृति और समाज को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सकता।

1.3.2 आदिवासी समस्याएं

आदिवासी समाज कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है, जिनमें अंधविश्वास, बेरोज़गारी, अस्तित्व संकट, विस्थापन, भूमि हस्तांतरण और नक्सलवाद शामिल हैं। इन समस्याओं का गहरा असर उनके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन पर पड़ता है। इन समस्याओं को विस्तार से समझने के लिए निम्नलिखित उपखंडों में चर्चा की जाएगी:

1.3.2.1 अंधविश्वास

आदिवासी समाज का सांस्कृतिक ढांचा अत्यंत पुरातन और पारंपरिक विश्वासों पर आधारित होता है। इनमें प्रकृति, आत्मा, देवता और अदृश्य शक्तियों में गहरी आस्था देखने को मिलती है। इन्हीं विश्वासों के कारण तंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक, जादू-टोना जैसी परंपराएँ समय के साथ विकसित हुईं, जो पहले एक सांस्कृतिक विशेषता मानी जाती थीं। लेकिन आज के समय में यह परंपराएँ कई बार अंधविश्वास और सामाजिक हिंसा का रूप ले चुकी हैं। आदिवासी क्षेत्रों में जब कोई व्यक्ति अचानक बीमार पड़ता है या किसी अप्राकृतिक घटना की व्याख्या नहीं हो पाती, तो उसे भूत-प्रेत या टोने-टोटके से जोड़ दिया जाता है। इसका सबसे बड़ा नुकसान यह होता है कि लोग वैज्ञानिक चिकित्सा को नजरअंदाज कर पारंपरिक ओझा-गुनी के पास जाने लगते हैं, जिससे न केवल बीमार व्यक्ति की जान जोखिम में पड़ती है, बल्कि आर्थिक और मानसिक नुकसान भी होता है।

इन अंधविश्वासों में सबसे खतरनाक प्रथा है 'डायन बिसाही', जो विशेष रूप से महिलाओं के खिलाफ हिंसा और उत्पीड़न का माध्यम बन चुकी है। जब किसी गाँव में लगातार बीमारियाँ फैलती हैं, बच्चों की मौत होती है या फसलें नष्ट होती हैं, तो इन घटनाओं का दोष अक्सर किसी अकेली या बुजुर्ग महिला पर डाल दिया जाता है। उसे डायन घोषित कर समाज से बहिष्कृत किया जाता है, प्रताड़ित किया जाता है, कभी-कभी तो उसकी हत्या तक कर दी जाती है। उदाहरण के तौर पर, झारखंड के गुमला जिले में 2021 में चार महिलाओं को डायन करार देकर पेड़ से बांधकर मारा-पीटा गया। यह केवल अंधविश्वास का मामला नहीं था, बल्कि सत्ता और पितृसत्तात्मक सोच का परिणाम भी था, जिसमें महिलाओं को कमजोर समझ कर निशाना बनाया गया। कई बार यह प्रथा संपत्ति हथियाने, निजी दुश्मनी निकालने या विधवाओं को समाज से अलग-थलग करने के बहाने के रूप में उपयोग की जाती है। इस तरह की घटनाएँ महिलाओं के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन हैं और यह भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के लिए अत्यंत शर्मनाक हैं।

इन कुप्रथाओं को रोकने के लिए केवल कानूनी प्रावधान पर्याप्त नहीं हैं, जब तक कि समाज में शिक्षा, जागरूकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास नहीं किया जाए। झारखंड, ओडिशा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में 'डायन प्रथा प्रतिषेध अधिनियम' लागू हैं, लेकिन इनका प्रभाव सीमित है क्योंकि स्थानीय स्तर पर पुलिस, पंचायत और समाज

- आदिवासी समुदायों में जादू-टोना, डायन बिसाही जैसे अंधविश्वास प्रचलित हैं।

में जागरूकता की कमी है। इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच, महिलाओं का सशक्तिकरण और शिक्षा का प्रचार-प्रसार अंधविश्वास को समाप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। समाज को यह समझना होगा कि बीमारियाँ चिकित्सा विज्ञान से ठीक होती हैं, न कि तंत्र-मंत्र से। जब तक हम सामूहिक रूप से इस मानसिकता में बदलाव नहीं लाएंगे, तब तक आदिवासी समाज में महिलाओं के खिलाफ हो रही हिंसा और शोषण को नहीं रोका जा सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि राज्य, समाज और शिक्षा संस्थाएं मिलकर एक व्यापक अभियान चलाएँ, जो न केवल इन कुप्रथाओं को समाप्त करे बल्कि आदिवासी संस्कृति को सकारात्मक रूप से संरक्षित भी रखे।

1.3.2.2 बेरोज़गारी

- आजीविका के लिए कृषि और वनों पर निर्भर रहते हैं।

आदिवासी क्षेत्रों में बेरोज़गारी एक गंभीर समस्या बन चुकी है। अधिकांश आदिवासी लोग अपनी आजीविका के लिए कृषि और वनों पर निर्भर रहते हैं, लेकिन औद्योगिकीकरण और विकास परियोजनाओं के कारण इन संसाधनों पर संकट आ गया है।

1.3.2.3 पारंपरिक रोजगार के स्रोतों का समाप्त होना

- बेरोज़गारी बढ़ी है।

आधुनिक विकास और औद्योगिकीकरण के कारण आदिवासी क्षेत्रों में उनके पारंपरिक रोजगार के स्रोत जैसे कृषि और वन उत्पादों का दोहन किया गया है। इन पारंपरिक स्रोतों के बंद होने के कारण आदिवासी समुदायों को रोजगार के अवसरों की कमी का सामना करना पड़ रहा है, जिससे बेरोज़गारी दर बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप, आदिवासी परिवारों की आर्थिक स्थिति और भी खराब हो गई है।

1.3.2.4 अस्तित्व संकट

- आजीविका वनों, जल और जंगलों पर निर्भर रही है।

आदिवासी समाज के अस्तित्व का संकट कई कारणों से उत्पन्न हुआ है। उनकी आजीविका वनों, जल और जंगलों पर निर्भर रही है, लेकिन बाहरी विकास कार्यों, खनन और औद्योगिकीकरण के कारण उनके पारंपरिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है।

1.3.2.5 प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

- औद्योगिकीकरण के कारण उनकी भूमि पर कब्जा किया जा रहा है।

आदिवासी समुदाय अपनी भूमि और जंगलों पर निर्भर रहते हैं, लेकिन औद्योगिकीकरण के कारण उनकी भूमि पर कब्जा किया जा रहा है। खनन, उद्योग और विकास परियोजनाओं के कारण आदिवासियों को अपने संसाधनों से वंचित किया जा रहा है, जिससे उनका अस्तित्व संकट में पड़ गया है। यदि यह स्थिति बनी रही तो उनका पारंपरिक जीवन और संस्कृति समाप्त हो सकती है।

1.3.2.6 विस्थापन

- औद्योगिकीकरण और अन्य परियोजनाओं के कारण उत्पन्न होती है

आदिवासी समाज को विस्थापन की समस्या का सामना करना पड़ता है, जो विकास कार्यों, औद्योगिकीकरण और अन्य परियोजनाओं के कारण उत्पन्न होती है।

SGOU

1.3.2.7 विकास के नाम पर विस्थापन

- आदिवासी लोग अपनी भूमि और घरों से बाहर निकलने के लिए मजबूर।

विकास और औद्योगिकीकरण के कारण आदिवासी समुदायों को उनके पारंपरिक घरों और ज़मीनों से विस्थापित किया जा रहा है। बड़े बांधों, खनन परियोजनाओं और उद्योगों के निर्माण के कारण आदिवासी लोग अपनी भूमि और घरों से बाहर निकलने के लिए मजबूर हो गए हैं। यह विस्थापन उनके सामाजिक ताने-बाने को तोड़ता है और उनके जीवन में गंभीर प्रभाव डालता है।

1.3.2.8 भूमि हस्तांतरण

- सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान।

भूमि आदिवासी समाज के लिए केवल आर्थिक संसाधन नहीं बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान का भी प्रतीक है। लेकिन बाहरी कंपनियां और विकास परियोजनाएं आदिवासी भूमि पर कब्जा करने का प्रयास करती हैं।

1.3.2.9 भूमि अधिकारों का उल्लंघन

- आदिवासी भूमि पर कब्जा

आदिवासी समाज के पास अक्सर अपनी भूमि के अधिकार नहीं होते। बाहरी कंपनियां, सरकार और औद्योगिक परियोजनाएं आदिवासी भूमि पर कब्जा कर लेती हैं। भूमि हस्तांतरण के कारण आदिवासी लोग अपनी पहचान और संसाधनों से वंचित हो जाते हैं और उनकी सामाजिक स्थिति कमजोर हो जाती है। इसके अलावा, भूमि विवादों और संघर्षों के कारण आदिवासी समुदाय और भी असुरक्षित हो जाते हैं।

1.3.3 नक्सलवाद

- नक्सलवाद एक गंभीर समस्या

आदिवासी क्षेत्रों में नक्सलवाद एक गंभीर समस्या बन चुकी है। कई आदिवासी समूह नक्सलवादी आंदोलनों में शामिल हो गए हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि नक्सलवादी उनके अधिकारों की रक्षा करते हैं और उनके साथ हो रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं।

1.3.3.1 नक्सलवाद के कारण और परिणाम

- नक्सलवाद ने कई बार हिंसा और संघर्ष की स्थिति पैदा की है

नक्सलवाद का मुख्य कारण आदिवासियों के प्रति शोषण और उनके अधिकारों का उल्लंघन है। आदिवासी समुदायों को नक्सलवादी आंदोलनों का समर्थन इस कारण मिलता है क्योंकि वे महसूस करते हैं कि ये आंदोलन उनके अधिकारों की रक्षा करते हैं और उनके शोषण के खिलाफ लड़ते हैं। हालांकि, नक्सलवाद ने कई बार हिंसा और

SGOU

संघर्ष की स्थिति पैदा की है, जिससे आदिवासी समाज के बीच शांति और स्थिरता का संकट उत्पन्न हुआ है।

- समस्याओं का समाधान

आदिवासी समाज को अंधविश्वास, बेरोज़गारी, अस्तित्व संकट, विस्थापन, भूमि हस्तांतरण और नक्सलवाद जैसी गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब सरकार, समाज और आदिवासी समुदाय मिलकर काम करें और उनके अधिकारों का संरक्षण किया जाए। आदिवासी समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को पुनर्स्थापित करने के लिए प्रभावी नीतियाँ और योजनाएँ बनाई जानी चाहिए ताकि वे समाज में समान अवसर और सम्मान पा सकें।

1.3.4 भारत का वन अधिकार कानून

भारत का वन अधिकार कानून (वन अधिकार अधिनियम, 2006) उन समुदायों को कानूनी अधिकार प्रदान करने के लिए बनाया गया है, जो परंपरागत रूप से वनों पर निर्भर हैं, जैसे अनुसूचित जनजातियां और अन्य पारंपरिक वनवासी। यह अधिनियम उन समुदायों के वन संसाधन संबंधी अधिकारों को मान्यता देता है, जिन पर ये समुदाय अपनी आजीविका, निवास और अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकताओं के लिए निर्भर थे। औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक भारत में वनों के संरक्षण के संदर्भ में जनजातियों के पारंपरिक ज्ञान और वनों पर उनकी निर्भरता को पहले कभी कानूनी रूप से मान्यता नहीं मिली थी। इस अधिनियम के द्वारा, वनवासियों को उनके पारंपरिक तरीके से वनों का संरक्षण और प्रबंधन करने का अधिकार दिया गया है।

1.3.4.1 मुख्य उद्देश्य

वन अधिकार अधिनियम का मुख्य उद्देश्य वनवासियों के अधिकारों की रक्षा करना और वनों के संसाधनों का स्थायी उपयोग सुनिश्चित करना है। यह अधिनियम उन समुदायों के लिए एक सुरक्षा प्रदान करता है, जिनके पास वन संसाधनों का परंपरागत अधिकार है। इसके अंतर्गत, इन समुदायों को उनके पारंपरिक वनों का उपयोग करने का अधिकार दिया गया है, जैसे खेती, चराई, मछली पकड़ना, जलाशयों तक पहुँच और जैव विविधता का संरक्षण। साथ ही, यह अधिनियम उन अधिकारों की रक्षा करता है जो इन समुदायों को बिना पुनर्वास के उनके भूमि से बेदखल होने से बचाते हैं।

1.3.4.2 मुख्य अधिकार

वन अधिकार अधिनियम के तहत, वनवासियों को कई प्रकार के व्यक्तिगत और सामुदायिक अधिकार प्रदान किए गए हैं। इनमें स्व-खेती और आवास अधिकार शामिल हैं, जो वनवासियों को उनके पारंपरिक भूमि पर कब्जा करने का अधिकार देते हैं। इसके अलावा, सामुदायिक अधिकार जैसे चराई, मछली पकड़ने, जलाशयों तक पहुँच और पारंपरिक मौसम के अनुसार संसाधनों का उपयोग भी प्रदान किए गए हैं।

विशेष रूप से, पीवीटीजी (खास जनजातीय समूहों) के लिए आवास अधिकार और पारंपरिक-प्रथागत अधिकारों की मान्यता दी गई है। यह अधिनियम वनवासियों को उनके पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत की रक्षा करने का अधिकार भी देता है।

1.3.4.3 महत्वपूर्ण प्रावधान

वन अधिकार अधिनियम के तहत, ग्राम सभा और अधिकारधारियों को कई जिम्मेदारियां सौंप दी गई हैं, जिनमें जैव विविधता, वन्यजीवों और वनों के संरक्षण की जिम्मेदारी शामिल है। ये समुदाय अपने पारंपरिक तरीकों से वनों का संरक्षण करने के लिए उत्तरदायी होते हैं और किसी भी विनाशकारी कार्य को रोकने का अधिकार रखते हैं, जो उनके संसाधनों या संस्कृति को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा, यह अधिनियम भूमि अधिग्रहण और पुनर्वास से संबंधित उचित मुआवजा और पारदर्शिता के अधिकार प्रदान करता है, जिससे जनजातीय समुदायों को बेदखल किए जाने से बचाया जा सकता है।

1.3.4.4 उद्देश्य

वन अधिकार अधिनियम के प्रमुख उद्देश्यों में वनवासियों के साथ चिरकालिक अन्याय को समाप्त करना, उनकी भू-धृति, आजीविका और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना और वनों का संरक्षण शामिल हैं। इस अधिनियम के द्वारा, वन अधिकार धारकों के अधिकार और उत्तरदायित्वों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है, ताकि वे वनों का स्थायी उपयोग और जैव विविधता संरक्षण कर सकें। इसके अतिरिक्त, यह जनजातीय समुदायों के सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करने का भी एक प्रयास है।

1.3.4.5 संसाधन

वन अधिकार अधिनियम से संबंधित दस्तावेज़, जैसे कि अधिनियम, नियम, दिशानिर्देश और अक्सर पूछे जाने वाले सवाल (FAQs), यह सभी संसाधन इस कानून के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए उपलब्ध हैं। ये दस्तावेज़ वन अधिकारों के प्रबंधन और उनके सही उपयोग को सुनिश्चित करने में मदद करते हैं, साथ ही संबंधित अधिनियम और नीतियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

इस प्रकार, वन अधिकार अधिनियम, 2006 वनवासियों को उनके पारंपरिक अधिकारों की रक्षा करने और विकास के साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

SGOU

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आदिवासी समाज भारत में अंधविश्वास, बेरोज़गारी, अस्तित्व संकट, विस्थापन, भूमि हस्तांतरण और नक्सलवाद जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है। अंधविश्वास, विशेष रूप से जादू-टोना और डायन बिसाही जैसी कुप्रथाएं, महिलाओं को शारीरिक और मानसिक शोषण का शिकार बनाती हैं। बेरोज़गारी और पारंपरिक रोजगार के स्रोतों का समाप्त होना, जैसे कृषि और वन संसाधनों का दोहन, आदिवासी समुदायों की आर्थिक स्थिति को और बिगाड़ रहा है। विकास और औद्योगिकीकरण के कारण आदिवासी समाज के पारंपरिक संसाधनों का शोषण हो रहा है, जिससे उनका अस्तित्व संकट में पड़ गया है। विस्थापन और भूमि हस्तांतरण के कारण वे अपनी पहचान और संसाधनों से वंचित हो रहे हैं, जबकि नक्सलवाद के कारण हिंसा और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इन समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब सरकार, समाज और आदिवासी समुदाय मिलकर उनके अधिकारों का संरक्षण और प्रभावी नीतियों का पालन करें, ताकि वे समान अवसर और सम्मान पा सकें।

वन अधिकार अधिनियम, 2006 वनवासियों को उनके पारंपरिक अधिकारों की रक्षा करने और वनों के संसाधनों का स्थायी उपयोग सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कानूनी ढांचा प्रदान करता है। यह अधिनियम समुदायों को उनके जैव विविधता, सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आदिवासी समाज में अंधविश्वास के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं को समझाइए।
2. आदिवासी क्षेत्रों में बेरोज़गारी के मुख्य कारणों को व्यक्त कीजिए।
3. आदिवासी समाज को अस्तित्व संकट से कैसे प्रभावित किया जाता है, इसे समझाइए।
4. आदिवासी लोगों का विस्थापन किस प्रकार होता है और इसके प्रभावों को व्यक्त कीजिए।
5. आदिवासी समाज में भूमि अधिकारों की महत्ता को समझाइए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी कौन - रमणिका गुप्ता
2. आदिवासी चितंन की भूमिका - गंगा सहाय मीणा
3. उपनिवेशवाद और आदिवासी संघर्ष - हेरॉल्ड एस. तोपनो

4. आदिवासी समाज और शिक्षा-रामशरण जोशी
5. आदिवासी और विकास के भद्रलोक-अश्वनि कुमार पंकज
6. आदिवासी लोक और संस्कृति - रमेश चन्द मीणा
7. झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टीविस्ट के नोट्स - वीर भारत तलवार
8. हिंदी साहित्य का ज्ञानकोश - शंभुनाथ

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

विस्थापन और विलोपन (वैश्विक संदर्भ), विस्थापन का दंश

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- विस्थापन और विलोपन की अवधारणाओं को समझना और इनके वैश्विक प्रभावों को पहचानना।
- विस्थापन के कारणों, जैसे युद्ध, प्राकृतिक आपदाएं और विकास परियोजनाएं, को समझना।
- विलोपन के कारणों, जैसे पर्यावरणीय बदलाव और मानव गतिविधियां, को पहचानना।
- विस्थापन और विलोपन के बीच के संबंध को समझना और उनके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
- विस्थापन दंश के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक प्रभावों को समझना और इन समस्याओं के समाधान के लिए समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता को पहचानना।

Background / पृष्ठभूमि

विस्थापन और विलोपन दोनों गहरी मानव समस्याएं हैं जो आज की दुनिया में वैश्विक स्तर पर बढ़ रही हैं। विस्थापन में लोग अपने घर और भूमि से मजबूर होकर कहीं और जाते हैं, जो प्राकृतिक आपदाओं, युद्ध, या विकास परियोजनाओं के कारण होता है। उदाहरण के तौर पर, युद्ध, आतंकवाद और औद्योगिकीकरण के कारण बड़ी संख्या में लोग अपने स्थान से विस्थापित होते हैं। वहीं, विलोपन का मतलब है किसी प्रजाति, संस्कृति या समुदाय का समाप्त हो जाना, जो प्राकृतिक और मानवजनित कारणों से उत्पन्न होता है। यह न केवल जीवों के अस्तित्व के लिए खतरा है, बल्कि मानव सभ्यता और सांस्कृतिक धरोहरों के लिए भी गंभीर परिणाम ला सकता है। इन दोनों घटनाओं का आपसी संबंध है, क्योंकि विस्थापन के कारण कई समुदायों की सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक जीवनशैली का विलोपन हो जाता है, जो उनका अस्तित्व संकट में डाल देता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

विस्थापन, विलोपन, युद्ध, प्राकृतिक आपदाएं, विकास परियोजनाएं, विस्थापन दंश

SGOU

Discussion / चर्चा

1.4.1 विस्थापन और विलोपन (वैश्विक संदर्भ)

- वैश्विक स्तर पर मानवता को प्रभावित करती हैं

विस्थापन और विलोपन, दोनों ही शब्द सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण समस्याएं हैं जो वैश्विक स्तर पर मानवता को प्रभावित करती हैं। इन दोनों की जड़ें गहरे मानवीय अनुभवों में बसी हैं, जहाँ एक ओर विस्थापन का मतलब होता है किसी व्यक्ति या समुदाय का अपनी भूमि या घर से उखड़कर किसी अन्य स्थान पर जाना, वहीं विलोपन का अर्थ है किसी प्रजाति, संस्कृति, या समुदाय का समाप्त होना या विलुप्त हो जाना। ये दोनों घटनाएँ एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं और अक्सर इनका प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है। इन दोनों के बीच अंतर और उनके वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिकता को समझना ज़रूरी है।

1.4.1.1 विस्थापन

- लोग अपने मूल स्थान से पलायन करते हैं।

विस्थापन की प्रक्रिया में लोग या समुदाय अपने प्राकृतिक आवास, घर और भूमि से मजबूर होकर किसी अन्य स्थान पर जा बसते हैं। यह प्रक्रिया प्राकृतिक आपदाओं, युद्ध, राजनीतिक दबाव, आर्थिक कारणों और विकास परियोजनाओं के कारण हो सकती है। उदाहरण के तौर पर, युद्ध, आतंकवाद, या धार्मिक उत्पीड़न के कारण बड़ी संख्या में लोग अपने मूल स्थान से पलायन करते हैं। इसके अलावा, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण भी लोग विस्थापित होते हैं, जैसे कि बड़े बांधों, खनन परियोजनाओं या औद्योगिक विकास के लिए ग्रामीणों और आदिवासियों का स्थानांतरण।

1.4.1.1.1 वैश्विक संदर्भ में विस्थापन के कारण:

- आंतरिक अशांति के कारण

1. **राजनीतिक कारण:** युद्ध, धार्मिक संघर्ष और नस्लीय हिंसा के कारण बड़ी संख्या में लोग विस्थापित होते हैं। उदाहरण स्वरूप, युद्ध और आंतरिक अशांति के कारण सीरिया, इराक और अफगानिस्तान के लाखों लोग अपने घरों को छोड़कर शरणार्थी बन चुके हैं।

- औद्योगिकीकरण के कारण भी विस्थापन

2. **आर्थिक कारण:** विकास परियोजनाओं और औद्योगिकीकरण के कारण भी विस्थापन होता है। उदाहरण के रूप में, भारत में टिहरी बांध और नर्मदा बांध के कारण लाखों लोग विस्थापित हुए।

- प्राकृतिक आपदाएं भी विस्थापन का कारण

3. **प्राकृतिक आपदाएं:** बाढ़, भूकंप, तूफान जैसे प्राकृतिक आपदाएं भी विस्थापन का कारण बनती हैं। उदाहरण के रूप में, कोसी नदी के बार-बार आने वाली बाढ़ से बिहार में विस्थापन की समस्या उत्पन्न होती है।

1.4.1.2 विलोपन (Extinction)

- धीरे-धीरे या अचानक समाप्त हो जाना।

विलोपन का मतलब है किसी प्रजाति, संस्कृति, या समुदाय का धीरे-धीरे या अचानक समाप्त हो जाना। यह जीवों, संस्कृतियों और भाषाओं का समाप्त होना हो सकता है। विलोपन का कारण प्राकृतिक उत्पत्ति, मानवीय गतिविधियां, पर्यावरणीय परिवर्तन और अन्य कारक हो सकते हैं।

1.4.1.2.1 वैश्विक संदर्भ में विलोपन के कारण:

- पर्यावरणीय परिवर्तन के कारण

1. **प्राकृतिक कारण:** यह किसी विशेष प्रजाति के पर्यावरणीय परिवर्तन के कारण हो सकता है, जैसे जलवायु परिवर्तन, भूकंप और अन्य प्राकृतिक आपदाएं।

- प्रजातियों के विलुप्त

2. **मानवीय गतिविधियां:** मानवीय गतिविधियां, जैसे शिकार, वनों की कटाई और प्रदूषण, कई प्रजातियों के विलुप्त होने का कारण बनती हैं। उदाहरण स्वरूप, कई वन्यजीव प्रजातियां, जैसे कि चीता और हाथी, अवैध शिकार और वनों की कटाई के कारण विलुप्त हो गई हैं।

- मनुष्य अपने पारंपरिक तरीके को छोड़कर आधुनिकता की ओर बढ़ता है।

3. **सांस्कृतिक विलोपन:** कभी-कभी मनुष्य अपने पारंपरिक तरीके को छोड़कर आधुनिकता की ओर बढ़ता है, जिससे उसकी संस्कृति और परंपराएं धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं। उदाहरण के तौर पर, आदिवासी संस्कृतियों का विलोपन उनके पारंपरिक जीवनशैली और मान्यताओं के समाप्त होने से हो रहा है।

1.4.2 विस्थापन और विलोपन का आपसी संबंध:

- विस्थापन और विलोपन दोनों एक-दूसरे से संबंधित होते हैं।

विस्थापन और विलोपन दोनों एक-दूसरे से संबंधित होते हैं। जब लोग किसी कारणवश अपने मूल स्थान से विस्थापित होते हैं, तो उनकी संस्कृति, भाषा और पारंपरिक तरीके अक्सर समाप्त हो जाते हैं, जो विलोपन का कारण बनते हैं। जैसे, आदिवासी समुदायों के विस्थापन के कारण उनकी सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक जीवनशैली खत्म हो जाती है। इसके साथ ही, नए स्थानों पर उनकी सामाजिक स्थिति और संस्कृति को खतरा उत्पन्न होता है, जिससे उनका विलोपन भी संभव होता है।

1.4.2.1 वैश्विक दृष्टिकोण से विस्थापन और विलोपन:

आज की दुनिया में विस्थापन और विलोपन दोनों ही वैश्विक समस्याएं बन चुकी हैं। यह समस्या केवल एक देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर

SGOU

- विस्थापन और विलोपन दोनों एक-दूसरे से संबंधित होते हैं।

पर मानवाधिकारों, पर्यावरणीय न्याय और सामाजिक असमानताओं से जुड़ी हुई है। विस्थापन के कारण लाखों शरणार्थी और प्रवासी दुनिया भर में संकट का सामना कर रहे हैं, जबकि विलोपन के कारण कई प्रजातियाँ और संस्कृतियां संकट में हैं।

1. **मानवाधिकार:** विस्थापन से जुड़े मुद्दे मानवाधिकारों से जुड़े होते हैं। विस्थापित लोगों को उनके मूल अधिकारों, जैसे आवास, सुरक्षा और रोजगार, से वंचित किया जा सकता है।
2. **पर्यावरणीय प्रभाव:** विलोपन और विस्थापन दोनों पर्यावरणीय संकट से जुड़े हैं। उदाहरण के तौर पर, पर्यावरणीय परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग के कारण जैव विविधता का विलोपन हो रहा है, जो मानव जीवन और प्रकृति के लिए खतरे की घंटी है।

- विस्थापन और विलोपन वैश्विक समस्याएं हैं।

विस्थापन और विलोपन वैश्विक समस्याएं हैं जो पर्यावरण, समाज, राजनीति और मानवाधिकार से जुड़े विभिन्न मुद्दों को प्रभावित करती हैं। इन दोनों का परस्पर संबंध होने के कारण, इसका समाधान खोजने के लिए एक समग्र और सहयोगी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। एक मजबूत और समावेशी वैश्विक नीति, जो विस्थापितों और विलुप्त प्रजातियों के संरक्षण पर जोर देती है, इस समस्या को हल करने में मदद कर सकती है।

1.4.3 विस्थापन दंश (Displacement Trauma)

- केवल भौतिक स्थानांतरण तक सीमित नहीं होते, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक दृष्टि कोण से भी अत्यधिक कष्टदायक होते हैं।

विस्थापन दंश, विस्थापन के कारण होने वाले मानसिक, शारीरिक और सामाजिक प्रभावों को संदर्भित करता है। जब लोग अपने घर, भूमि, या देश से जबरन उखड़कर किसी अन्य स्थान पर जाते हैं, तो उनके जीवन में गहरे बदलाव आते हैं, जो केवल भौतिक स्थानांतरण तक सीमित नहीं होते, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक दृष्टिकोण से भी अत्यधिक कष्टदायक होते हैं। विस्थापन दंश उन दर्दनाक अनुभवों का समूह होता है, जिनका सामना विस्थापित व्यक्तियों को नए वातावरण में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से करना पड़ता है।

1.4.3.1 विस्थापन दंश के कारण

1. भावनात्मक और मानसिक पीड़ा

- मानसिक पीड़ा, दुःख और तनाव का सामना करना पड़ता है।

विस्थापन के दौरान लोग अपने घर, परिवार, संस्कृति और पहचान से वंचित हो जाते हैं। इस प्रक्रिया में उन्हें गहरी मानसिक पीड़ा, दुःख और तनाव का सामना करना पड़ता है। वे अपने पिछले जीवन और समुदाय से अलग हो जाते हैं, जिससे मानसिक विकार जैसे अवसाद (Depression), चिंता (Anxiety) और PTSD (Post-Traumatic Stress Disorder) जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। विस्थापितों के लिए अपनी खोई हुई पहचान और स्वाभिमान को फिर से हासिल करना कठिन हो सकता है, जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

2. सामाजिक अलगाव और पहचान का संकट

- सामाजिक अलगाव का कारण बनता है।

विस्थापन से व्यक्ति या समुदाय को सामाजिक रूप से अलग-थलग होने का अनुभव होता है। नए समाज में उनका स्वागत नहीं हो सकता और उन्हें अपने नए परिवेश में समायोजित होने में कठिनाई हो सकती है। यह सामाजिक अलगाव का कारण बनता है, जिससे वे अपनी पुरानी सांस्कृतिक पहचान को खोने और एक नई पहचान को अपनाने में संघर्ष करते हैं। यह सामाजिक दबाव और अपमान की भावना पैदा कर सकता है, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर पड़ता है।

3. आर्थिक असुरक्षा

- आर्थिक संकट को जन्म देता है।

विस्थापन के कारण व्यक्ति का रोजगार, आय और आर्थिक सुरक्षा प्रभावित हो सकती है। नई जगह पर उन्हें अपने कौशल का प्रयोग करने या रोजगार प्राप्त करने में मुश्किल हो सकती है, जो आर्थिक संकट को जन्म देता है। इसके अलावा, मुआवजे या पुनर्वास की प्रक्रिया भी लम्बी और कठिन हो सकती है, जिससे विस्थापितों की स्थिति और खराब हो जाती है।

4. सांस्कृतिक टकराव

- नई संस्कृति और मान्यताओं को अपनाने में समय लगता है।

जब लोग अपने पारंपरिक वातावरण से बाहर जाते हैं, तो वे अक्सर एक नई सांस्कृतिक और सामाजिक प्रणाली के साथ टकराते हैं। नई संस्कृति और मान्यताओं को अपनाने में समय लगता है और कभी-कभी वे अपने पुराने रीति-रिवाजों, धर्म और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने में असमर्थ हो सकते हैं। यह सांस्कृतिक विस्थापन और तनाव उत्पन्न कर सकता है, जो विस्थापितों के लिए और भी अधिक मानसिक बोझ का कारण बनता है।

1.4.3.2 विस्थापन दंश के सामाजिक और शारीरिक प्रभाव:

1. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं

- स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होता है।

विस्थापन दंश से शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। लगातार मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद से शारीरिक रोग जैसे सिरदर्द, पेट की बीमारियां, उच्च रक्तचाप और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इसके अलावा, विस्थापितों को अक्सर खराब चिकित्सा सुविधाओं और अपर्याप्त पोषण का सामना करना पड़ता है, जो उनके शारीरिक स्वास्थ्य को और खराब कर सकता है।

2. समाज में तनाव और अस्थिरता

- समाज में अस्थिरता उत्पन्न होती है।

विस्थापितों का सामाजिक ताना-बाना टूट जाता है, जिससे समाज में अस्थिरता उत्पन्न होती है। नए स्थानों पर विस्थापित लोग अक्सर अपराध, सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक संघर्षों का सामना करते हैं। इसके अलावा, यह नई जगह पर स्थानीय समुदाय के साथ तनाव पैदा कर सकता है, जो दोनों पक्षों के बीच असहमति और भेदभाव को बढ़ावा देता है।

SGOU

3. आत्म-संवेदनशीलता और पहचान संकट

- अपनी पहचान को लेकर संकट का सामना करना पड़ता है।

विस्थापन के बाद, व्यक्तियों और समुदायों को अक्सर अपनी पहचान को लेकर संकट का सामना करना पड़ता है। जब वे अपनी पुरानी जीवनशैली, भाषा और सांस्कृतिक पहचान को खो देते हैं, तो उन्हें अपने अस्तित्व के उद्देश्य और पहचान को फिर से खोजने में कठिनाई होती है।

- दीर्घकालिक संकट बन सकता है।

विस्थापन दंश एक गहरा और दर्दनाक अनुभव होता है, जो न केवल भौतिक स्थानांतरण से संबंधित होता है, बल्कि मानसिक, शारीरिक और सामाजिक स्तर पर भी इसके दूरगामी प्रभाव होते हैं। यह विस्थापित समुदायों और व्यक्तियों के लिए एक दीर्घकालिक संकट बन सकता है, जो उनके जीवन को चुनौतीपूर्ण बना देता है। समाज और सरकार की जिम्मेदारी है कि वे विस्थापितों की सहायता के लिए प्रभावी योजनाएं तैयार करें, ताकि उनका पुनर्वास और समाज में पुनः समायोजन सहज हो सके। इस संदर्भ में, मनोवैज्ञानिक सहायता, सामाजिक समर्थन और आर्थिक पुनर्वास कार्यक्रमों का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है, ताकि विस्थापन से उत्पन्न दंश को कम किया जा सके।

1.4.4 आदिवासी विस्थापन और विलोपन

- आदिवासी विस्थापन और विलोपन की समस्या आज कई विकास योजनाओं, जैसे बांधों के निर्माण, खनन और कंपनियों के कब्जे के कारण गहरा गई।

आदिवासी विस्थापन और विलोपन की समस्या आज कई विकास योजनाओं, जैसे बांधों के निर्माण, खनन और कंपनियों के कब्जे के कारण गहरा गई है। इन परियोजनाओं के कारण आदिवासी समाज को न केवल अपनी भूमि से विस्थापित होना पड़ता है, बल्कि उनकी संस्कृति, जीवनशैली और अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाते हैं।

- हजारों आदिवासी परिवारों को अपनी भूमि छोड़ने के लिए मजबूर

विस्थापनः बड़े बांधों के निर्माण, खनन और औद्योगिकीकरण की योजनाओं के कारण आदिवासी समुदायों को अपनी पुश्तैनी भूमि से विस्थापित किया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, स्वर्णरेखा परियोजना और अन्य बड़े बांधों के निर्माण में हजारों आदिवासी परिवारों को अपनी भूमि छोड़ने के लिए मजबूर किया गया है। विस्थापन के बाद इन परिवारों को पुनर्वास के लिए कृषि योग्य भूमि या उचित संसाधन नहीं मिल पाते, जिससे उनका जीवन और अस्तित्व संकट में पड़ जाता है।

- सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक ज्ञान धीरे-धीरे विलुप्त होने की कगार पर

विलोपन : आदिवासी समुदाय अपनी पारंपरिक जीवनशैली पर निर्भर रहते हैं, जो मुख्य रूप से कृषि और वन संसाधनों पर आधारित होती है। जब उनके पास भूमि और संसाधन नहीं होते, तो उनकी सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक ज्ञान धीरे-धीरे विलुप्त होने की कगार पर पहुँच जाते हैं। खनन, औद्योगिकीकरण और अन्य विकास योजनाओं के कारण आदिवासियों का पारंपरिक जीवन संकट में पड़ जाता है और उनका समाज धीरे-धीरे विघटन की ओर बढ़ता है।

- विस्थापन के बाद आदिवासियों को जो मुआवजा मिलता है

मुआवजा और पुनर्वासः विस्थापन के बाद आदिवासियों को जो मुआवजा मिलता है, वह अक्सर अपर्याप्त होता है और उनके जीवनस्तर के अनुकूल नहीं होता। मुआवजे के रूप में मिलने वाली राशि से वे कोई नया व्यवसाय नहीं शुरू कर पाते। इसके अलावा, पुनर्वास के लिए दी जाने वाली भूमि कृषि योग्य नहीं होती, जिससे उनका जीवन और

भी कठिन हो जाता है। इस प्रकार, विस्थापन और विलोपन की समस्या आदिवासी समाज के लिए गंभीर होती जा रही है।

कुल मिलाकर, आदिवासी विस्थापन और विलोपन के शिकार हो रहे हैं। इन समस्याओं को हल करने के लिए सरकारी योजनाओं में पारदर्शिता, उचित पुनर्वास और मुआवजे की प्रक्रिया की आवश्यकता है, ताकि आदिवासी समाज को अपनी पारंपरिक जीवनशैली और सांस्कृतिक पहचान को बचाने का अवसर मिल सके।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

विस्थापन और विलोपन समस्याओं का आदिवासी समुदायों पर विशेष प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वे अक्सर अपने पारंपरिक वनवास जीवनशैली, संस्कृति और भूमि से विस्थापित होते हैं। आदिवासी लोग वनों और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं और जब वे विकास परियोजनाओं, औद्योगिकीकरण, या राज्य की नीतियों के कारण अपने घरों और भूमि से बेदखल होते हैं, तो उनका जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। इन समुदायों का विस्थापन न केवल उनकी आजीविका और सांस्कृतिक पहचान को प्रभावित करता है, बल्कि यह उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डालता है।

आदिवासी समुदायों का विस्थापन अक्सर उनके पारंपरिक ज्ञान, भाषा और सांस्कृतिक धरोहर के विलुप्त होने की दिशा में भी ले जाता है। उदाहरण के लिए, जब आदिवासी लोग वन क्षेत्रों से विस्थापित होते हैं, तो उनके पारंपरिक कृषि और शिकार के तरीके खत्म हो जाते हैं, जिससे उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं पर बुरा असर पड़ता है। इसके अलावा, विलोपन की प्रक्रिया भी आदिवासी जनजातियों के लिए अत्यधिक हानिकारक हो सकती है, क्योंकि उनकी पहचान और परंपराएं धीरे-धीरे विलीन हो जाती हैं।

समाज, पर्यावरण और मानवाधिकार के संदर्भ में आदिवासी समुदायों को विशेष रूप से समग्र और संवेदनशील नीतियों की आवश्यकता होती है, जो उनके अधिकारों, संसाधनों और सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करें। उनके पुनर्वास के दौरान उनके परंपरागत जीवनशैली और संस्कृति की मान्यता देना आवश्यक है ताकि वे मानसिक और शारीरिक रूप से स्थिर रह सकें।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. विस्थापन और विलोपन के बीच संबंध को समझाएं और उदाहरणों के साथ इन दोनों घटनाओं के प्रभावों का विश्लेषण करें।

2. विकास परियोजनाओं के कारण विस्थापन की समस्या पर चर्चा करें और इसके सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करें।
3. विलोपन के कारणों का अध्ययन करें और यह कैसे मानव गतिविधियों के कारण और भी बढ़ सकता है, इस पर विचार करें।
4. विस्थापन दंश (Displacement Trauma) के मानसिक और शारीरिक प्रभावों पर एक विस्तृत निबंध लिखें।
5. प्राकृतिक आपदाओं और युद्ध के कारण विस्थापन के उदाहरण दें और इसके समाधान के लिए वैश्विक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर चर्चा करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी कौन - रमणिका गुप्ता
2. आदिवासी चितंन की भूमिका - गंगा सहाय मीणा
3. उपनिवेशवाद और आदिवासी संघर्ष - हेरॉल्ड एस. तोपनो
4. आदिवासी समाज और शिक्षा-रामशरण जोशी
5. आदिवासी और विकास के भद्रलोक-अश्वनि कुमार पंकज
6. आदिवासी लोक और संस्कृति - रमेश चन्द मीणा
7. झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टीविस्ट के नोट्स - वीर भारत तलवार
8. हिंदी साहित्य का ज्ञानकोश - शंभुनाथ

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 02

अस्मितामूलक विमर्श और आदिवासी

Block Content

Unit 1 : स्मृति, इतिहास और अस्मिता, अस्मिता और सत्ता हाशिए की अस्मिताऐं आदिवासी अस्मिता

Unit 2 : विश्व में आदिवासी साहित्य के विभिन्न रूप-नेटिव अमेरिकन लिटरेचर कलर्ड लिटरेचर अफ्रिकन, अमेरिकन लिटरेचर ब्लैक लिटरेचर एबोरजिनल लिटरेचर इंडीजीनियस लिटरेचर

Unit 3 : अस्मितामूलक विमर्श और आदिवासी, आदिवासी विमर्श की परंपरा-पुरखा साहित्य, आदिवासी भाषाओं में लिखित साहित्य की परंपरा

Unit 4 : विविध आदिवासी आंदोलन-चुआर आंदोलन, संथाल आंदोलन, कोल आंदोलन, भूमिज आंदोलन, गोंड़ आंदोलन, मुंडा आंदोलन

SGOU

इकाई 1

स्मृति, इतिहास और अस्मिता, अस्मिता और सत्ता हाशिए की अस्मिताऐं आदिवासी अस्मिता

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अस्मिता और इतिहास के बीच संबंध को समझता है।
- आदिवासी अस्मिता और सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा के लिए आवश्यक कदमों की पहचान प्राप्त करता है।
- विस्थापन और विलोपन की समस्याओं के सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों को समझता है।
- 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारतीय अस्मिता के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण घटनाओं को समझता है।
- हाशिए की अस्मिताओं के संघर्ष और उनके अधिकारों की स्थिति पर व्यापक दृष्टिकोण से परिचय प्राप्त करता है।

Background / पृष्ठभूमि

अस्मिता या पहचान का संबंध व्यक्ति और समुदाय की सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पहचान से है, जो समय, स्थान और समाज के संदर्भ में विकसित होती है। भारत में अस्मिता का विमर्श औपनिवेशिक शासन के दौरान गहरा हुआ, जब भारतीयों ने अंग्रेजों द्वारा उत्पन्न स्टीरियोटाइप्स के खिलाफ अपनी पहचान को पुनः स्थापित किया। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम भारतीय अस्मिता के पुनर्निर्माण का एक महत्वपूर्ण क्षण था, जिसने राष्ट्रीय एकता और पहचान को मजबूत किया। आदिवासी अस्मिता इस विमर्श का एक अहम हिस्सा है, जो उनकी पारंपरिक जीवनशैली, धर्म और सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ी होती है। शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव से आदिवासी समुदाय अपनी संस्कृति और पहचान को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। बाहरी समाज और राज्य की उपेक्षा और भेदभाव आदिवासी अस्मिता के लिए एक बड़ा संकट बन गए हैं। इस संदर्भ में अस्मिता की रक्षा समाज में समानता, न्याय और समावेशिता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अस्मिता, इतिहास, अस्तित्व, संरक्षण, पारंपरिक संस्कृति, सांस्कृतिक पहचान

SGOU

Discussion / चर्चा

अस्मिता

अस्मिता या पहचान एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक और दार्शनिक विचार है, जो किसी व्यक्ति या समुदाय की पहचान से जुड़ा होता है। यह शब्द लैटिन भाषा के 'आइडेंटिकस' शब्द से आया है, जिसका मतलब होता है 'वही' या 'समान'। जब अस्मिता की बात होती है, तो इसके साथ 'भिन्नता' यानी दूसरों से अलग होने की बात भी आती है। अस्मिता की चर्चा आमतौर पर तब होती है, जब कोई समूह समाज में अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाता है – जैसे महिलाएं, दलित, आदिवासी या फिर किसी खास इलाके के लोग। ये सभी पहचान के सवाल उत्तर-औपनिवेशिक सोच के साथ जुड़े हुए हैं, जहाँ लोग जातिवाद, पितृसत्ता और उपनिवेशवाद जैसे शोषण करने वाले ढाँचों का विरोध करते हैं।

अस्मिता को कई नजरियों से समझा जा सकता है। एक तरफ, किसी व्यक्ति की अस्मिता यह होती है कि वह खुद को कैसे देखता है और समाज उसे कैसे देखता है। दार्शनिक देकार्त ने कहा था – 'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ' – इसका मतलब है कि हमारी पहचान हमारे सोचने की शक्ति से जुड़ी है। वहीं डुर्कीम जैसे समाजशास्त्री ने कहा कि अस्मिता पूरी तरह समाज की देन होती है – यानी हम जैसे समाज में रहते हैं, वैसी ही हमारी पहचान बनती है।

अस्मिता के कई प्रकार होते हैं – जैसे धर्म के आधार पर (धार्मिक अस्मिता), जाति के आधार पर (जातिगत अस्मिता), भाषा, लिंग और राजनीति के आधार पर भी हमारी पहचान बनती है। आज के समय में अस्मिता को समझने के लिए दो तरीके भी अपनाए जाते हैं:

- समावेशिक अस्मिता – जो सबको साथ लेकर चलती है।
- एकांतिक अस्मिता – जो केवल एक ही खास समूह की पहचान को महत्व देती है।

अस्मिता की बातें सिर्फ आज की नहीं हैं। यह विचार आधुनिक समय और लोकतंत्र के साथ-साथ बढ़ा है। उदाहरण के तौर पर, इंग्लैंड में जब सामंतशाही (राजा और रजवाड़ों की सत्ता) खत्म होने लगी और वैज्ञानिक सोच बढ़ी (जैसे फ्रांसिस बेकन के विचार), तब ब्रिटिश पहचान ने एक नया रूप लिया। भारत में, 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम के बाद जब अंग्रेजों का राज था, तब भारतीयों की पहचान पर कई तरह के स्टीरियोटाइप (झूठी धारणाएं) थोपी गईं। लेकिन समय के साथ भारतीयों ने अपनी असली पहचान को दोबारा समझा और उसे मजबूत किया।

SGOU

दार्शनिकों ने अस्मिता को और गहराई से देखा है। हाइडेगर और पॉल रिकूर जैसे विचारकों ने अस्मिता को 'मृत्यु' और 'स्वत्व' (स्वयं की समझ) के संदर्भ में देखा – यानी हम कौन हैं, इसका एक पहलू यह भी है कि हम जीवन और मृत्यु को कैसे समझते हैं।

आज के भारतीय साहित्य में अस्मिता की चर्चा बहुत महत्त्वपूर्ण हो गई है। दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श और क्षेत्रीय विमर्श जैसे विषयों ने पुरानी राष्ट्रीय कहानियों को चुनौती दी है और उन लोगों की असली पहचान को सामने लाया है जिन्हें पहले नजरअंदाज किया गया था। इस तरह की पहचान सिर्फ किसी एक व्यक्ति की नहीं होती, बल्कि पूरी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान होती है। यह पहचान समय, जगह और समाज के बदलते हालात के साथ-साथ बदलती भी रहती है।

- पहचान सिर्फ किसी एक व्यक्ति की नहीं होती, बल्कि पूरी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान होती है

अंत में, अस्मिता का मतलब सिर्फ यह नहीं होता कि कोई इंसान खुद को कैसे देखता है, बल्कि यह भी होता है कि एक पूरा समाज या समुदाय किस तरह से अपनी पहचान बनाता है और उस पर गर्व करता है। यह विचार उन ताकतों के खिलाफ भी खड़ा होता है जो लोगों को दबाना चाहती हैं।

इतिहास और अस्मिता

इतिहास और अस्मिता दोनों ही महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं, जो समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत पहचान से गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं। इतिहास वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम अतीत के अनुभवों और घटनाओं को समझते हैं। यह एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक अनुक्रम के रूप में समाज के विकास और परिवर्तन को प्रकट करता है। इतिहास हमें अतीत की घटनाओं, संघर्षों, विजय-पराजयों और विचारों को जानने का एक महत्वपूर्ण जरिया प्रदान करता है, ताकि हम वर्तमान को बेहतर तरीके से समझ सकें। यह हमारे समाज के अस्तित्व, संरचनाओं और उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं को आकार देने में सहायक होता है। इतिहास में शोध और विश्लेषण के माध्यम से हम यह जान सकते हैं कि एक समाज ने अपने समय में किन परिस्थितियों का सामना किया और उस अनुभव के बाद समाज कैसे विकसित हुआ। इतिहास का यह वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन हमें सामूहिक पहचान और संस्कृति को समझने में मदद करता है।

- वर्तमान को बेहतर तरीके से समझ सकें।

अस्मिता की अवधारणा भी समाज और व्यक्ति के अस्तित्व से जुड़ी हुई है। अस्मिता केवल व्यक्तिगत पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के भीतर एक साझा पहचान की परिभाषा भी है। अस्मिता की समझ समय, स्थान और संस्कृति के अनुसार बदलती रहती है। यह उन मूल्यों, विचारों और पहचान के संकेतों के रूप में होती है जो समाज के विभिन्न वर्गों में व्यक्त होते हैं। अस्मिता का विमर्श समाज में भिन्नताओं को समझने और उनके विरोधी स्वरूपों को चुनौती देने का प्रयास है। इस विमर्श में महिलाओं, दलितों, आदिवासियों और अन्य सामाजिक रूप से वंचित समुदायों की आवाज़ें प्रमुख हैं, जो अपनी पहचान और अधिकारों की पुनः स्थापन की ओर अग्रसर

- अस्मिता का विमर्श समाज में भिन्नताओं को समझने और उनके विरोधी स्वरूपों को चुनौती देने का प्रयास है।

SGOU

होती हैं। अस्मिता का विचार इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल व्यक्ति की पहचान का सवाल है, बल्कि समाज की संरचनाओं और सत्ता के समीकरणों को भी प्रभावित करता है। अस्मिता के विभिन्न रूप जैसे जातिगत, धार्मिक, लिंग और भाषाई अस्मिता समाज के भीतर विभिन्न संघर्षों और पहचान की प्रक्रियाओं को उजागर करते हैं।

इतिहास और अस्मिता का संबंध एक दूसरे से गहरा है। इतिहास में समाज की पहचान, संघर्ष और विकास की कहानी छिपी हुई है। अस्मिता को केवल एक व्यक्तिगत विचार के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह एक सामूहिक और सामाजिक प्रक्रिया है, जो विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भों में विकसित होती है। उदाहरण के तौर पर, भारतीय इतिहास में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय अस्मिता की पुनः स्थापना का एक महत्वपूर्ण क्षण उत्पन्न किया, जहाँ भारतीयों ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ अपनी पहचान और स्वाभिमान को पुनः जागृत किया। इसके बाद, उपनिवेशवाद, जातिवाद और पितृसत्तात्मकता के खिलाफ अस्मिता का संघर्ष और भी गहरा हुआ और यह संघर्ष राजनीतिक विमर्श के साथ समाज के विभिन्न वर्गों में अस्मिता की अवधारणा को फिर से परिभाषित करता है।

- 1857 के स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय अस्मिता की पुनः स्थापना।

इसके अतिरिक्त, अस्मिता का विमर्श सामुदायिक पहचान के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। यह पहचान कभी समावेशी होती है, जो 'दूसरे' को अपने में समाहित करती है, तो कभी एकांतिक होती है, जो विशिष्ट समुदायों और समूहों के लिए अपनी अलग पहचान बनाती है। इस प्रकार, अस्मिता केवल एक विचार नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो समय के साथ विकसित होती है और समाज के भीतर संघर्षों के परिणामस्वरूप आकार ग्रहण करती है। समकालीन समय में, जैसे दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और आदिवासी विमर्श, इन सभी विमर्शों ने राष्ट्रीय पहचान और इतिहास के पारंपरिक दृष्टिकोणों को चुनौती दी है और वे समाज में सत्ता, शक्ति और असमानता की संरचनाओं को पुनः जांचने का कार्य कर रहे हैं।

- अस्मिता केवल एक विचार नहीं है।

इस प्रकार, इतिहास और अस्मिता का जुड़ाव समाज की पहचान, उसकी सांस्कृतिक धरोहर, संघर्ष और विकास के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। इन दोनों की समझ हमें न केवल अतीत के संदर्भ में समाज की स्थितियों को समझने में मदद करती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि वर्तमान और भविष्य में हमें कैसे एक समान, समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

हाशिए की अस्मिताएं

- सामाजिक और सांस्कृतिक पहचानें हैं।

हाशिए की अस्मिताएं वे सामाजिक और सांस्कृतिक पहचानें हैं जो समाज के मुख्यधारा से बाहर होती हैं और जिनकी स्थिति अक्सर अन्याय, भेदभाव और उपेक्षा का शिकार होती है। ये अस्मिताएं जाति, लिंग, यौन पहचान, सामाजिक वर्ग या अन्य किसी विशेषता के आधार पर हो सकती हैं, जिन्हें समाज में कमतर या हाशिए पर रखा जाता है।

- अस्मिताओं को अकसर अप्रत्यक्ष रूप से दबाया जाता है।

हाशिए की अस्मिताओं का अस्तित्व मुख्यधारा के नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों के खिलाफ संघर्ष की स्थिति में होता है। समाज में इस तरह की अस्मिताओं को अकसर अप्रत्यक्ष रूप से दबाया जाता है या उनके अस्तित्व को नजरअंदाज किया जाता है। इसलिए, हाशिए की अस्मिताएं अपनी पहचान, स्वतंत्रता और समानता के लिए संघर्ष करती हैं, ताकि उन्हें अपने अस्तित्व को पूरी तरह से स्वीकार किया जा सके और समाज में समान अधिकार मिल सकें।

इस संदर्भ में, हाशिए की अस्मिताएं अपनी पहचान को पुनः परिभाषित करने, समाज के स्थापित मानकों को चुनौती देने और समानता की दिशा में काम करने की आवश्यकता महसूस करती हैं।

आदिवासी अस्मिता

- आदिवासी अस्मिता केवल एक सामाजिक पहचान नहीं, बल्कि यह एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौतिक अस्तित्व का प्रतीक भी है।

आदिवासी अस्मिता एक ऐसी पहचान है जो आदिवासी समाज के सदस्य अपनी संस्कृति, परंपरा, भाषा, धार्मिक विश्वास और जीवनशैली से जुड़ी महसूस करते हैं। यह अस्मिता उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है, जिसे उन्होंने हजारों वर्षों से अपने परिवेश और समुदाय के साथ साझा किया है। आदिवासी अस्मिता केवल एक सामाजिक पहचान नहीं, बल्कि यह एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौतिक अस्तित्व का प्रतीक भी है। आदिवासी समाज का प्रत्येक पहलू, चाहे वह उनका पारंपरिक जीवनशैली हो, उनका धर्म, उनकी भाषा, या उनका सांस्कृतिक धरोहर, उनकी अस्मिता का एक अभिन्न हिस्सा है और इन्हें उनकी पहचान के रूप में सम्मानित किया जाता है।

आदिवासी अस्मिता के संरक्षण के लिए सबसे बड़ी चुनौती बाहरी समाज और राज्य द्वारा उनके परंपरिक जीवन और संस्कृति के प्रति उपेक्षा और भेदभाव है। शहरीकरण, वैश्वीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण आदिवासी समाज को अपनी सांस्कृतिक पहचान और जीवनशैली को बचाने का संकट उत्पन्न हो गया है। जैसे-जैसे आदिवासी समुदाय विकास और उन्नति के नाम पर बाहरी प्रभावों के संपर्क में आए हैं, उनकी पारंपरिक जीवनशैली, भाषा, धार्मिक विश्वास और सांस्कृतिक धरोहर खतरे में पड़ गई है। इन बाहरी प्रभावों से आदिवासी अस्मिता पर सीधा हमला हो रहा है, जिससे उनकी मौलिक पहचान और अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया है।

आदिवासी समाज की अस्मिता का संरक्षण यह सुनिश्चित करता है कि वे अपनी पारंपरिक संस्कृति, धर्म और जीवनशैली के अनुसार जी सकें। उनके धार्मिक विश्वास, रीतिरिवाज और सांस्कृतिक धरोहरों को सम्मान और सुरक्षा मिलनी चाहिए। आदिवासियों को अपनी सांस्कृतिक धारा के अनुसार जीवन जीने का अधिकार है और विकास की प्रक्रिया में उन्हें मुख्यधारा समाज से जोड़ने के बजाय उनकी शर्तों पर यह बदलाव किए जाने चाहिए।

समाज और सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आदिवासियों की अस्मिता पर कोई हमला न हो, जैसे उनकी धर्म-परंपराओं को नज़रअंदाज करना या जनगणना

में उन्हें अन्य धर्मों के तहत शामिल करना आदि आदिवासी अस्मिता पर सीधा हमला है। इसके लिए जरूरी कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि आदिवासी समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान, धर्म और भाषा के साथ जीवित रह सके, क्योंकि यही उनकी असली अस्मिता और पहचान की बुनियाद है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

अस्मिता एक गहरी और बहुआयामी अवधारणा है, जो केवल व्यक्तिगत पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की सामूहिक और सांस्कृतिक पहचान को भी व्यक्त करती है। यह विमर्श न केवल वंचित समुदायों की आवाज है, बल्कि यह सत्ता और समाज के संरचनाओं के प्रतिरोध के रूप में भी प्रकट होता है। अस्मिता का विचार विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्षों को उजागर करता है, जैसे दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और आदिवासी विमर्श, जो अपनी पहचान और अधिकारों के पुनः स्थापत्य की दिशा में काम कर रहे हैं। आदिवासी अस्मिता के संदर्भ में, यह उनके परंपराओं, धर्म और सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा की आवश्यकता को सामने लाता है, जो बाहरी प्रभावों के कारण संकट में है।

आदिवासी समाज की अस्मिता का संरक्षण इसलिए जरूरी है ताकि वे अपनी पारंपरिक जीवनशैली, धर्म, भाषा और सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रख सकें। शहरीकरण, वैश्वीकरण और औद्योगिकीकरण जैसे बाहरी प्रभावों से उनकी पहचान को खतरा हो सकता है और इसे बचाने के लिए समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। आदिवासी समाज को उनके धार्मिक विश्वासों और रीतिरिवाजों के साथ जीने का अधिकार मिलना चाहिए। इसके लिए सरकार और समाज को उनके अधिकारों का सम्मान करना चाहिए और विकास की प्रक्रिया को उनके शर्तों पर लागू करना चाहिए।

अस्मिता केवल व्यक्तिगत पहचान नहीं, बल्कि यह सामूहिक संघर्ष का परिणाम है, जो समय के साथ विकसित होता है। समाज में अस्मिता के विभिन्न रूपों को समझना और उनका सम्मान करना आवश्यक है, क्योंकि यही समाज की विविधता और समावेशिता को बढ़ावा देता है। अस्मिता पर विचार करने से हम न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को समझ सकते हैं, बल्कि समाज के भीतर समानता और न्याय की दिशा में भी कदम बढ़ा सकते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. अस्मिता और इतिहास के बीच संबंध को समझते हुए भारतीय समाज में अस्मिता की अवधारणा का विकास पर विचार करें।
2. आदिवासी अस्मिता और उनके सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा के लिए आवश्यक कदमों का विश्लेषण करें।

3. 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारतीय अस्मिता के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण घटनाओं का अध्ययन करें।
4. समकालीन भारतीय समाज में हाशिए की अस्मिताओं के संघर्ष और उनके अधिकारों की स्थिति पर प्रकाश डालें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी कौन - रमणिका गुप्ता
2. आदिवासी चितंन की भूमिका - गंगा सहाय मीणा
3. उपनिवेशवाद और आदिवासी संघर्ष - हेरॉल्ड एस. तोपनो
4. आदिवासी समाज और शिक्षा-रामशरण जोशी
5. आदिवासी और विकास के भद्रलोक-अश्वनि कुमार पंकज
6. आदिवासी लोक और संस्कृति - रमेश चन्द मीणा
7. झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टीविस्ट के नोट्स - वीर भारत तलवार
8. हिंदी साहित्य का ज्ञानकोश - शंभुनाथ

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

विश्व में आदिवासी साहित्य के विभिन्न रूप- नेटिव अमेरिकन लिटरेचर कलर्ड लिटरेचर अफ्रिकन, अमेरिकन लिटरेचर ब्लैक लिटरेचर एबोरजिनल लिटरेचर इंडीजीनियस लिटरेचर

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिवासी साहित्य के विभिन्न रूपों और शैलियों को समझता है।
- नेटिव अमेरिकी और आबोरिजिनल साहित्य के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भ को समझता है।
- आदिवासी साहित्य में विरोध, संघर्ष और न्याय के विषयों की पहचान होता है।
- स्वदेशी साहित्य के विकास, महत्व और वैश्विक प्रभाव को समझता है।

Background / पृष्ठभूमि

आदिवासी साहित्य का उद्भव विश्वभर के विभिन्न आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं और उनके जीवन के अनुभवों से हुआ है। यह साहित्य मौखिक परंपराओं, किंवदंतियों, गानों और अनुष्ठानों के रूप में प्रकट होता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी सांस्कृतिक ज्ञान और मूल्य को संप्रेषित करते हैं। यूरोपीय उपनिवेशवाद और आधुनिकता के प्रभाव से आदिवासी साहित्य में संघर्ष और प्रतिरोध की भावना प्रकट हुई है, जो उनके अस्तित्व और पहचान की रक्षा करने की आवश्यकता को दर्शाती है। यह साहित्य आदिवासी समुदायों की आवाज़ को समाज में स्थान दिलाने और उनकी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के प्रयास के रूप में कार्य करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

विश्वभर, किंवदंतियाँ, उपनिवेशवाद, अनुष्ठान, सांस्कृतिक धरोहर

Discussion / चर्चा

2.2.1 विश्व में आदिवासी साहित्य के विभिन्न रूप

विश्व में आदिवासी साहित्य के विभिन्न रूप मुख्य रूप से उनके सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक संघर्षों को व्यक्त करने वाले होते हैं। नेटिव अमेरिकी साहित्य, जो अमेरिका के आदिवासी समुदायों द्वारा रचित है, मुख्यतः मौखिक परंपराओं पर आधारित है, जिसमें मिथक, कथाएँ, गाने और अनुष्ठान शामिल हैं। यह साहित्य भूमि, आध्यात्मिकता और समुदाय के महत्व को दर्शाता है। आबोरिजिनल साहित्य, ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी समुदायों द्वारा रचित होता है, जिसमें उनकी सांस्कृतिक पहचान, भूमि से जुड़ी भावनाएँ और उपनिवेशी संघर्षों का चित्रण होता है। यह साहित्य अक्सर सामाजिक न्याय, भूमि अधिकार और आदिवासी जीवन के संघर्षों पर आधारित होता है। स्वदेशी साहित्य का उद्देश्य उन समुदायों की संस्कृति, परंपराओं और संघर्षों को संरक्षित करना होता है, जो उपनिवेशी ताकतों से अपने अस्तित्व और पहचान की रक्षा करते हैं। यह साहित्य मौखिक परंपराओं और कथाओं के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया जाता है। इन विभिन्न साहित्यिक रूपों में आदिवासी समुदायों का अपने संघर्ष, पहचान और सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करने का संदेश निहित होता है और ये साहित्य उनके अस्तित्व को सशक्त बनाने का काम करता है।

- अपने अस्तित्व और पहचान की रक्षा

2.2.1.1 नेटिव अमेरिकी साहित्य

नेटिव अमेरिकी साहित्य एक समृद्ध और विविधतापूर्ण साहित्य है, जो यूरोपीय उपनिवेशकों के अमेरिका आने से बहुत पहले अस्तित्व में था। यह साहित्य उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के हजारों आदिवासी समुदायों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। यह मुख्य रूप से मौखिक है, जिसमें कथाएँ, मिथक, गाने, प्रार्थनाएँ, भाषण और अनुष्ठान शामिल हैं, जो आदिवासी लोगों की भूमि, आध्यात्मिकता और समुदाय के साथ गहरे संबंधों को दर्शाते हैं। नेटिव अमेरिकी साहित्य के प्रमुख विषय अक्सर प्रकृति के साथ सामंजस्य, भूमि का पवित्रता, जीवन के चक्रीय रूप और समुदाय का महत्व होते हैं।

- नेटिव अमेरिकी साहित्य मुख्य रूप से मौखिक है

2.2.1.1.1 नेटिव अमेरिकी साहित्य में विभिन्न शैलियाँ शामिल हैं:

मौखिक कथाएँ: ये कथाएँ सत्य या काल्पनिक हो सकती हैं और प्रायः सृष्टि के मिथक, आदिवासी उत्पत्ति और संस्कृति नायकों के साहसिक कार्यों से संबंधित होती हैं। इन कहानियों में आंतरिक विचारों या भावनाओं के बजाय बाहरी क्रियाओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

गाने: नेटिव अमेरिकी मौखिक साहित्य का एक बड़ा हिस्सा गानों से बना होता है, जो दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा होते हैं और अक्सर आध्यात्मिक या अनुष्ठानिक महत्व

रखते हैं। गाने धार्मिक, सामाजिक या मनोरंजक हो सकते हैं और इनकी संरचना में प्रायः पुनरावृत्ति या क्रमिक विकास होता है।

अनुष्ठान नाटकः इस शैली में गान, अनुष्ठान और अनुष्ठान शामिल होते हैं। इन प्रदर्शनों में शब्दों को पवित्र माना जाता है और इनमें आध्यात्मिक शक्ति होती है। इन अनुष्ठानों को केवल विशेष लोग जैसे चिकित्सा पुरुष या शमां ही प्रदर्शन या व्याख्या कर सकते हैं।

उपदेशः नेटिव अमेरिकी समुदायों में सार्वजनिक भाषण का बहुत महत्व है। अनुष्ठानों के लिए ceremonial भाषण होते हैं और राजनीतिक मुद्दों को सुलझाने या समुदाय को संगठित करने के लिए गैर-आध्यात्मिक भाषण होते हैं, खासकर संघर्ष के समय में।

आत्मकथाः समय के साथ, नेटिव अमेरिकी लेखकों ने आत्मकथाएँ लिखनी शुरू की, जो व्यक्तिगत और सांस्कृतिक इतिहासों का दस्तावेजीकरण करती हैं। ये कृतियाँ अक्सर मिथक और व्यक्तिगत अनुभव का मिश्रण होती हैं, नकारात्मक रूढ़ियों का प्रतिकार करती हैं और आदिवासी जीवन के जटिल दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती हैं।

- नेटिव अमेरिकी साहित्य में विभिन्न शैलियाँ हैं।

कुल मिलाकर, नेटिव अमेरिकी साहित्य समुदाय, आध्यात्मिक जगत और भूमि के साथ संबंध के महत्व को दर्शाता है। यह विभिन्न रूपों और शैलियों में होता है, जैसे कि कथाएँ, गाने और प्रार्थनाएँ, जो आदिवासी लोगों के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रथाओं में गहरे से निहित हैं।

2.2.2 ब्लैक लिटरेचर

ब्लैक लिटरेचर (काले साहित्य) अमेरिकी साहित्य का केवल एक उपश्रेणी नहीं, बल्कि इसका अभिन्न और मूलभूत हिस्सा है। अमेरिका का इतिहास अश्वेत अनुभवों के बिना अधूरा है और इसी कारण उसकी साहित्यिक परंपरा भी पूर्ण नहीं हो सकती। ब्लैक लिटरेचर ने अमेरिकी समाज की जटिलताओं, उसकी विविधताओं और उसके संघर्षों को उजागर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इतिहास के विभिन्न दौरों में यह साहित्य दासता के अंधकारमय युग से लेकर नागरिक अधिकार आंदोलन और आधुनिक नस्लीय संघर्षों तक, लगातार समाज के उन असमान पक्षों को सामने लाता रहा है जिन्हें मुख्यधारा के कथानकों में अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। यह केवल अश्वेत समुदाय के दर्द और अनुभवों की गवाही नहीं देता, बल्कि सामाजिक चेतना को बढ़ावा देने, न्याय के लिए आवाज़ बुलंद करने और सांस्कृतिक पहचान को सशक्त बनाने का एक प्रभावशाली माध्यम भी है।

ब्लैक लिटरेचर केवल अश्वेतों की कहानियाँ नहीं है; यह अमेरिकी सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन की गहरी परतों को समझने का एक अनिवार्य स्रोत है। यह साहित्य हमें मानवता, न्याय, समानता और सह-अस्तित्व जैसे सार्वभौमिक मूल्यों का ज्ञान कराता है। अतः इसे किसी अस्थायी सामाजिक प्रतिक्रिया या आंदोलन के

उत्पाद के रूप में नहीं, बल्कि एक स्थायी और आवश्यक साहित्यिक विरासत के रूप में स्वीकार करना चाहिए और इसका सम्मान करना चाहिए।

यह साहित्य तीन महत्वपूर्ण आयामों को समेटे हुए है:

1. इतिहास का बोझ, इसमें दासता,जिम क्रो कानून, नस्लीय भेदभाव और नस्लीय उत्पीड़न की पीड़ा झलकती है।
2. वर्तमान की तात्कालिकता, यह आज भी चल रही नस्लीय हिंसा, पुलिस बर्बरता और सामाजिक अन्याय की तत्काल परिस्थितियों को सामने लाता है।
3. न्यायपूर्ण भविष्य की आशा, यह साहित्य समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के लिए एक प्रतिबद्धता का परिचायक है।

जेम्स बाल्डविन, टोनी मॉरिसन, ता-नेहिसी कोट्स और जेस्मिन वार्ड जैसे महान लेखकों के कार्य केवल साहित्यिक उत्कृष्टता नहीं हैं, बल्कि ये अमेरिकी समाज में अश्वेत समुदाय के अनुभवों की सच्ची और ज्वलंत गवाही भी हैं। इन लेखकों ने न केवल अपनी कहानियों के माध्यम से नस्लवाद की जटिलताओं को उजागर किया है, बल्कि उन्होंने व्यापक मानवता, पहचान और अस्तित्व के सवाल भी उठाए हैं।

2.2.2.1 ब्लैक लिटरेचर की विशेषताएँ और महत्व

- **संवाद की निरंतरता:** ब्लैक लिटरेचर किसी एक लेखक या काल तक सीमित नहीं है। यह एक ऐसे संवाद का हिस्सा है जो पीढ़ियों, विधाओं और भौगोलिक सीमाओं को पार करता है। यह संवाद इतिहास के विभिन्न दौरों से गुजरते हुए आज तक पहुँचा है और आज भी नए स्वर उसमें जुड़ रहे हैं। यह साहित्य कविता, उपन्यास, निबंध, आत्मकथा, नाटक और कई अन्य रूपों में मौजूद है।
- **समीक्षा और चुनौती:** ब्लैक लिटरेचर अक्सर उन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों की आलोचना करता है जो अश्वेतों और अन्य अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न को बनाए रखती हैं। यह साहित्य हमें इतिहास के वे पहलू दिखाता है जो अक्सर मुख्यधारा की किताबों में अनदेखे रह जाते हैं।
- **विविधता और गहराई:** ब्लैक लिटरेचर केवल पीड़ा की कहानियाँ नहीं सुनाता; यह प्रेम, परिवार, आत्म-खोज, सामाजिक न्याय, खुशी और सांस्कृतिक गर्व की भी कहानियाँ कहता है। यह साहित्य मानवीय अनुभव की विविधता को समेटे हुए है, जो इसे बहुआयामी और गहरा बनाता है।
- **सहानुभूति और क्रियाशीलता:** इस साहित्य को पढ़ना केवल एक बाहरी निरीक्षण नहीं है, बल्कि यह एक सक्रिय संवाद में भाग लेने जैसा है। यह पाठकों को न केवल समझने, बल्कि सामाजिक बदलाव के लिए सक्रिय होने की प्रेरणा भी देता है।

SGOU

ब्लैक लिटरेचर सिर्फ अश्वेतों की कहानी नहीं, बल्कि अमेरिकी समाज की सच्चाई और संघर्षों का प्रतिबिंब है। यह साहित्य हमें नस्लीय अन्याय के साथ-साथ मानवता, समानता और उम्मीद की सीख देता है। इसलिए इसे सिर्फ एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ न समझें, बल्कि एक जीवंत विरासत के रूप में अपनाएं जो हमें सोचने, समझने और बेहतर समाज बनाने की प्रेरणा देती है।

2.2.3 एकबारजिनल लिटरेचर

- आदिवासी समुदायों की परंपराओं, आध्यात्मिकता और सामाजिक संघर्षों से जुड़ा हुआ है

आबोरिजिनल साहित्य, ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी लोगों के इतिहास, संस्कृति और अनुभवों का एक गहरा और प्रभावशाली व्यक्तित्व है। यह साहित्य मुख्य रूप से आदिवासी समुदायों की परंपराओं, आध्यात्मिकता और सामाजिक संघर्षों से जुड़ा हुआ है, जो उपनिवेशीकरण, विस्थापन और न्याय की निरंतर लड़ाई का प्रतिविम्ब है। यह साहित्य अक्सर विरोध के विषयों से भरा होता है, विशेषकर भूमि अधिकार, सामाजिक न्याय और कानूनी पहचान से संबंधित, जो आदिवासी लोगों ने सदियों तक सहन किया। लेखकों जैसे मेलिसा लुकाशेंको ने आदिवासी साहित्य को 'विरोध साहित्य' के रूप में वर्णित किया है, जो न्याय, समझ और स्वीकृति के लिए एक आवाज के रूप में काम करता है।

- अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हैं।

आबोरिजिनल साहित्य की एक प्रमुख विशेषता इसकी भूमि और पर्यावरण के साथ गहरी कनेक्शन है। आदिवासी आध्यात्मिकता, जिसे 'ड्रीमिंग' कहा जाता है, आदिवासी लोगों की कहानी कहने की परंपराओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से वे अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हैं और अपने ज्ञान, किंवदंतियों और इतिहासों को पीढ़ी दर पीढ़ी पारित करते हैं। आदिवासी साहित्य समय-समय पर सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ को भी दर्शाता है, जैसे महान मंदी और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान आदिवासी समुदायों को होने वाली अत्यधिक कठिनाइयों को, जिन्होंने इन अनुभवों को साहित्यिक कृतियों में परिवर्तित किया।

- आदिवासी साहित्य को वैश्विक स्तर पर अधिक मान्यता मिली है।

हाल के दशकों में, आदिवासी साहित्य को वैश्विक स्तर पर अधिक मान्यता मिली है और अब इसे न केवल ऑस्ट्रेलिया में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा जा रहा है। आदिवासी लेखकों की लेखन शैलियों ने न केवल आदिवासी समाज की पहचान को सामने रखा, बल्कि उपनिवेशी इतिहास और आधुनिकता के संदर्भ में उनके संघर्षों को भी उजागर किया। इस प्रकार, आदिवासी साहित्य आज भी एक महत्वपूर्ण और विकसित हो रहा साहित्यिक रूप है, जो आदिवासी लोगों के सांस्कृतिक संघर्ष, उनकी भूमि से जुड़ी भावनाओं और उनके अस्तित्व की लड़ाई को प्रस्तुत करता है।

2.2.4 इंडोजीनियस लिटरेचर

स्वदेशी साहित्य, स्वदेशी लोगों द्वारा उत्पन्न साहित्य होता है, जो उनकी परंपराओं, इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाता है। यह साहित्य न केवल कला का एक रूप है, बल्कि यह स्वदेशी समुदायों के लिए प्रतिरोध का एक साधन भी है, जो उपनिवेशी ताकतों से अपने अस्तित्व और पहचान की रक्षा करने के लिए लिखा जाता है। स्वदेशी

SGOU

- साहित्य न केवल कला का एक रूप है।

साहित्य में मौखिक परंपराएं, कथाएँ और पारंपरिक ज्ञान का महत्व होता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है। इन साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से स्वदेशी लोग अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हैं और अपनी आवाज़ को प्रमुखता से व्यक्त करते हैं। साथ ही, साहित्य के माध्यम से वे न्याय, स्वायत्तता और सांस्कृतिक अस्तित्व के लिए संघर्ष भी करते हैं। इस साहित्य का अध्ययन करते समय यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह केवल एक साहित्यिक कृति नहीं है, बल्कि स्वदेशी समुदायों की पहचान और उनके संघर्षों का प्रतीक है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आदिवासी साहित्य विश्वभर के विभिन्न आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक पहचान, संघर्ष और इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह साहित्य न केवल आदिवासियों की परंपराओं और जीवनशैली को जीवित रखने का माध्यम है, बल्कि उनके अस्तित्व और अधिकारों की रक्षा करने का भी एक सशक्त प्रयास है। नेटिव अमेरिकी, आबोरिजिनल और स्वदेशी साहित्य जैसे विविध रूपों में आदिवासी समुदायों के जीवन, संघर्ष और सांस्कृतिक मूल्य प्रतिविंबित होते हैं। इन साहित्यिक रचनाओं में भूमि, आध्यात्मिकता और सामूहिक पहचान के महत्व को प्रमुख रूप से चित्रित किया जाता है।

आदिवासी साहित्य का उद्देश्य न केवल सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को उजागर करना है, बल्कि यह उनके आत्मसम्मान और स्वायत्तता की रक्षा करने का भी एक साधन है। इन रचनाओं के माध्यम से आदिवासी समुदाय अपनी आवाज़ को प्रकट कर सकते हैं और अपने अस्तित्व की लड़ाई जारी रख सकते हैं। इसके साथ ही, यह साहित्य आधुनिकता और उपनिवेशवाद के प्रभावों से निपटने का एक सशक्त तरीके के रूप में सामने आता है। इस प्रकार, आदिवासी साहित्य समाज के समक्ष उनके संघर्षों, सांस्कृतिक धरोहर और पहचान की महत्ता को पुनः स्थापित करने का कार्य करता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आदिवासी साहित्य के मौखिक रूपों और उनकी सांस्कृतिक परंपराओं का अध्ययन करें।
2. नेटिव अमेरिकी साहित्य के प्रमुख विषयों और शैलियों पर चर्चा करें।
3. आदिवासी साहित्य में विरोध और संघर्ष के तत्वों का विश्लेषण करें।
4. आबोरिजिनल साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ और उसकी सामाजिक-राजनीतिक भूमिका का अध्ययन करें।
5. स्वदेशी साहित्य के विकास और इसके प्रभाव को वैश्विक दृष्टिकोण से समझें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी कौन - रमणिका गुप्ता
2. आदिवासी चितंन की भूमिका - गंगा सहाय मीणा
3. उपनिवेशवाद और आदिवासी संघर्ष - हेरॉल्ड एस. तोपनो
4. आदिवासी समाज और शिक्षा-रामशरण जोशी
5. आदिवासी और विकास के भद्रलोक-अश्वनि कुमार पंकज
6. आदिवासी लोक और संस्कृति - रमेश चन्द मीणा
7. झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टीविस्ट के नोट्स - वीर भारत तलवार
8. हिंदी साहित्य का ज्ञानकोश - शंभुनाथ

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

अस्मितामूलक विमर्श और आदिवासी, आदिवासी विमर्श की परंपरा-पुरखा साहित्य, आदिवासी भाषाओं में लिखित साहित्य की परंपरा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिवासी अस्मिता विमर्श के माध्यम से आदिवासी समाज की पहचान, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा के महत्व समझता है।
- आदिवासी साहित्य के जरिए उनके जीवन, संघर्ष और सांस्कृतिक अस्मिता की वास्तविकता को समझता है।
- आदिवासी समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा की आवश्यकता के बारे में समझता है।
- आदिवासी साहित्य की मौखिक परंपरा और आधुनिक लेखन के बीच के अंतर को समझा जा सकता है।

Background / पृष्ठभूमि

आदिवासी अस्मिता विमर्श आदिवासी समुदाय की पहचान, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा का आंदोलन है। यह विमर्श आदिवासी समाज के अस्तित्व को बाहरी प्रभावों और शोषण से बचाने का एक संघर्ष है, जिसमें उनकी सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति की ओर अग्रसर होते हैं। आदिवासी समाज अपनी भाषा, परंपराओं और धार्मिक विश्वासों को संरक्षित करने की आवश्यकता महसूस करता है, ताकि उनका अस्तित्व और सांस्कृतिक पहचान बनी रहे। आदिवासी साहित्य इस विमर्श का एक अहम हिस्सा है, जो समुदाय के जीवन, संघर्ष और अस्मिता को अभिव्यक्त करने का एक प्रभावशाली साधन है। यह साहित्य आदिवासी समाज की आवाज़ को प्रमुखता से प्रस्तुत करता है और उनके अधिकारों के लिए एक मंच प्रदान करता है। आदिवासी अस्मिता विमर्श का उद्देश्य केवल सांस्कृतिक संरक्षण नहीं, बल्कि उनके सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों की भी रक्षा करना है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अस्तित्व, अग्रसर, सांस्कृतिक संरक्षण, अभिव्यक्त, अहम हिस्सा, मंच प्रदान

SGOU

Discussion / चर्चा

2.3.1 अस्मिता मूलक विमर्श और आदिवासी

आदिवासी समाज की अस्मिता विमर्श उस गहरे संबंध को दर्शाती है जो उनके सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। यह विमर्श केवल उनकी पहचान की बात नहीं करता, बल्कि उनके अधिकारों, उनकी स्वतंत्रता और उनके जीवन के मूल तत्वों के संरक्षण का संघर्ष भी है। आदिवासी समुदाय की अपनी विशिष्ट भाषा, रीति-रिवाज, परंपराएं और धार्मिक विश्वास हैं, जो उन्हें अन्य समुदायों से अलग पहचान देते हैं। अस्मिता विमर्श इस विशिष्टता को सुरक्षित रखने का प्रयास है ताकि उनकी सांस्कृतिक धरोहर अनछुई रहे और वे अपनी पहचान के साथ सम्मान से जी सकें।

इतिहास में आदिवासियों ने औपनिवेशिक शासन, आधुनिक सामाजिक-आर्थिक बदलाव और राजनीतिक दबावों का सामना किया है, जिन्होंने उनकी पारंपरिक जीवन शैली, ज़मीन और संसाधनों को प्रभावित किया। इन परिस्थितियों ने आदिवासी समाज को अपनी अस्मिता को बचाने और पुनः स्थापित करने की आवश्यकता महसूस कराई। इसलिए अस्मिता विमर्श उन प्रक्रियाओं का विरोध करता है जो उनकी संस्कृति और जीवनशैली को खतरे में डालती हैं, जैसे कि ज़मीन हड़पना, भाषाई और सांस्कृतिक उपेक्षा और राजनीतिक दबाव।

यह विमर्श आदिवासियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करता है और सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक सम्मान, तथा स्वशासन की मांग को मजबूत बनाता है। यह आंदोलन केवल संरक्षण का नहीं, बल्कि विकास और सम्मान के लिए भी है, जिससे आदिवासी समुदाय समृद्धि के साथ अपनी सांस्कृतिक जड़ों के साथ जुड़ा रह सके।

- सामाजिक और सांस्कृतिक उपेक्षाओं का विरोध

इस प्रकार, अस्मिता विमर्श आदिवासी समाज के लिए न केवल पहचान की लड़ाई है, बल्कि यह उनके जीवन, अधिकारों और भविष्य की सुरक्षा का भी माध्यम है। यह उन्हें बाहरी प्रभावों से बचाकर एक सशक्त और स्वतंत्र समुदाय के रूप में उभरने का अवसर प्रदान करता है।

2.3.1.1 आदिवासी अस्मिता विमर्श के प्रमुख मुद्दे निम्नलिखित हैं:

संस्कृति की रक्षा: आदिवासी समुदायों की अपनी विशेष संस्कृति, भाषा और परंपराएँ हैं। अस्मिता विमर्श इसे बाहरी शक्तियों द्वारा निगलने से बचाने की कोशिश करता है।

आधिकारिक पहचान: आदिवासी समुदायों को अपनी असली पहचान के रूप में स्वीकारने की आवश्यकता है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर उनकी स्थिति को सुदृढ़ कर सके।

SGOU

शोषण और संघर्ष : आदिवासी समाज का इतिहास लंबे समय से शोषण, उत्पीड़न और अन्याय से भरा हुआ है। अस्मिता विमर्श इस शोषण के खिलाफ आदिवासी समुदाय के संघर्षों की सही पहचान करता है।

सामाजिक और राजनीतिक अधिकार: आदिवासी लोगों के भूमि अधिकार, जल, जंगल और ज़मीन के अधिकार और उनके जीवन के मूलभूत अधिकारों की रक्षा के लिए यह विमर्श जरूरी है।

- आदिवासी समाज के जीवन, संघर्ष और अस्मिता को अभिव्यक्त करने का एक प्रभावशाली माध्यम

आदिवासी अस्मिता विमर्श में साहित्य की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि साहित्य आदिवासी समाज के जीवन, संघर्ष और अस्मिता को अभिव्यक्त करने का एक प्रभावशाली माध्यम है। आदिवासी साहित्य के जरिए, यह विमर्श आदिवासी समाज की पहचान और उनके अस्तित्व की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से आदिवासी लोग अपनी आवाज़ को समाज में ऊँचा करने का प्रयास करते हैं, ताकि उनकी पहचान और अधिकारों को सभी स्तरों पर मान्यता मिल सके।

- सांस्कृतिक और सामाजिक संघर्ष का प्रतीक नहीं है।

इस प्रकार, आदिवासी अस्मिता विमर्श केवल सांस्कृतिक और सामाजिक संघर्ष का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह एक समग्र जीवनदृष्टि है जो आदिवासी समाज की पहचान, उनके अधिकार और उनकी विरासत की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष करता है।

2.3.2 आदिवासी विमर्श की परंपरा पुरख साहित्य

- मौखिक परंपराओं पर आधारित है।

आदिवासी साहित्य की परंपरा और इतिहास एक गहरे और समृद्ध अनुभवों का परिणाम हैं, जो आदिवासी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक वास्तविकताओं को व्यक्त करते हैं। यह साहित्य मुख्यतः मौखिक परंपराओं पर आधारित रहा है, जिनमें गीत, कथाएँ, कहानियाँ, मिथक और प्रथाएँ शामिल हैं। आदिवासी समाज की पारंपरिक सृजनात्मकता और उनके जीवन-निर्वाह की प्रक्रियाओं को यह साहित्य दर्शाता है। आदिवासी साहित्य का विकास मौखिक साहित्य से हुआ, जो आज भी आदिवासी जीवन की गहरी समझ प्रदान करता है।

2.3.2.1 आदिवासी साहित्य की मौखिक परंपरा

- आदिम और मौखिक साहित्य है, जिसे उनके पूर्वजों द्वारा रचा गया था।

दुनिया भर के समाजों में लिखित साहित्य के पहले मौखिक साहित्य की परंपरा रही है। आदिवासी समाज के साहित्य को 'पुरखा साहित्य' कहा जाता है, क्योंकि यह उनका आदिम और मौखिक साहित्य है, जिसे उनके पूर्वजों द्वारा रचा गया था। इस साहित्य में आदिवासी समाज के मूल्य, विश्वास और जीवन-दर्शन की झलक मिलती है। आदिवासी चिंतक वंदना टेटे के अनुसार, आदिवासी समाज में लोक और शास्त्र का भेद नहीं होता, इसलिए साहित्य को भी एक सामान्य और निरंतर रूप में देखा जाता है। आदिवासी संस्कृति में पुरखों का अत्यधिक सम्मान होता है और उनके द्वारा रचित गीत और कथाएँ आदिवासी जीवन का अभिन्न हिस्सा होती हैं।

2.3.2.2 आदिवासी भाषाओं में रचित साहित्य की परंपरा

- आदिवासी साहित्य का पहला उपन्यास

आदिवासी भाषाओं में साहित्य की लिपियाँ डेढ़ सौ साल पहले विकसित होने लगी थीं। इस समय के दौरान कई आदिवासी भाषाओं में लेखन और मुद्रण की परंपरा शुरू हुई। लगभग सौ साल से अधिक समय से आदिवासी भाषाओं में लेखन की परंपरा बनी हुई है। मुंडारी भाषा में मेन्नस ओड़ेंय का 'मतुराअ कहनि' नामक उपन्यास आदिवासी साहित्य का पहला उपन्यास माना जाता है। इसके बाद और भी कई आदिवासी साहित्यिक रचनाएँ सामने आईं, जिनमें शौर्यगाथाएँ, प्रेम कहानियाँ और आदिवासी जीवन की विभिन्न प्रक्रियाओं का चित्रण किया गया।

- मौलिक विचार और दर्शन की अभिव्यक्ति

आदिवासी साहित्य का सबसे बड़ा विशेषता यह है कि, हालांकि इसकी विधाएँ बाहरी समाजों और भाषाओं से ली गई हैं, लेकिन इसे अपनी मातृभाषा में रचने के कारण आदिवासी लेखक मौलिक विचार और दर्शन की अभिव्यक्ति करने में सक्षम होते हैं। आदिवासी भाषाओं के साहित्य में बहुतायत से शौर्यगाथाएँ, कविताएँ और लोक कथाएँ पाई जाती हैं, जो उनके सामूहिक संघर्ष और संघर्ष के दौरान उनके द्वारा अनुभव की गई सामाजिक और सांस्कृतिक जटिलताओं को प्रस्तुत करती हैं।

2.3.2.3 समकालीन आदिवासी लेखन

- भारतीय भाषाओं में आदिवासी लेखकों ने लेखन की शुरुआत की।

आदिवासी साहित्य का समकालीन रूप पुरखा साहित्य और आदिवासी भाषाओं के साहित्य से प्रेरित है, लेकिन इसके साथ-साथ बाहरी साहित्य के प्रभाव को भी महसूस किया गया है। विशेषकर हिंदी, बंगला, तमिल, उड़िया आदि प्रमुख भारतीय भाषाओं में आदिवासी लेखकों ने लेखन की शुरुआत की। हिंदी में आदिवासी लेखन की शुरुआत लगभग तीन दशकों पहले मानी जा सकती है, जब आदिवासी लेखक अपने मूल भाषाओं को छोड़कर हिंदी में लिखने लगे।

- समकालीन आदिवासी लेखन

समकालीन आदिवासी लेखन में कविता, कहानी, उपन्यास, व्यंग्य, संस्मरण और यात्रा-वृत्तांत जैसी विविध शैलियाँ देखी जा रही हैं। इसमें प्रमुख नामों में रामदयाल मुंडा, सुशीला सामद, ग्रेस कुजूर, रोज केरकेट्टा, निर्मला पुतुल, वंदना टेटे, विजय सिंह मीणा और महादेव टोप्पो आदि शामिल हैं। इन लेखकों ने आदिवासी जीवन, उनके संघर्ष, उनके अधिकारों और उनकी सांस्कृतिक पहचान के मुद्दों पर लिखा है।

आदिवासी साहित्य में नए दृष्टिकोण, विचार और संवेदनाएँ उभरकर आई हैं और यह समाज की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के बारे में गहरी समझ प्रदान करती है। विशेष रूप से आदिवासी जीवन की कठोर सच्चाइयाँ, उनके अस्तित्व के लिए चल रहे संघर्ष और उनके संघर्ष के प्रतीक के रूप में यह साहित्य उभरा है।

2.3.2.4 आदिवासी साहित्य का महत्व और चुनौती

आदिवासी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह न केवल आदिवासी समाज के जीवन और संघर्ष को समझने में मदद करता है, बल्कि यह भी बताता है

SGOU

- बाहरी ताकतों और शोषण के खिलाफ है।

कि आदिवासी समुदाय किस तरह बाहरी ताकतों और शोषण के खिलाफ लड़ाई लड़ता है। यह साहित्य समाज की जटिलताओं, सांस्कृतिक धारा और बाहरी दबावों को बेहतर तरीके से समझने का अवसर प्रदान करता है।

- बड़ी चुनौती संरक्षण और संकलन की है।

आदिवासी साहित्य के विकास में सबसे बड़ी चुनौती इसके संरक्षण और संकलन की है। चूँकि आदिवासी भाषाओं में बहुत सी मौखिक परंपराएँ आज भी जीवित हैं, इनका संकलन करना और सही दृष्टिकोण से प्रकाशित करना आवश्यक है। यही कारण है कि आदिवासी साहित्य को व्यापक रूप से समझने के लिए और इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहूँचाने के लिए वैज्ञानिक और नकारात्मक पूर्वाग्रहों से मुक्त दृष्टिकोण से काम करने की जरूरत है।

आदिवासी साहित्य न केवल उनकी संस्कृति और इतिहास का दस्तावेज़ है, बल्कि यह उनके संघर्षों और जीवित रहने की यात्रा का भी प्रतीक है। इसके संरक्षण और संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि आदिवासी समाज की आवाज़ और उनके मूल्य, विश्वास और दृष्टिकोण समाज के सामने आ सकें।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आदिवासी अस्मिता विमर्श और साहित्य के संदर्भ में, यह कहा जा सकता है कि यह विमर्श आदिवासी समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान की रक्षा और समृद्धि के लिए एक संघर्ष है। यह एक निरंतर प्रक्रिया है, जो बाहरी उपेक्षाओं, शोषण और सांस्कृतिक समाहितिकरण के खिलाफ आदिवासी समाज के अस्तित्व और उनके मूल्यों की रक्षा करती है। अस्मिता विमर्श के माध्यम से आदिवासी समुदाय अपनी पहचान, अधिकार और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए जागरूकता फैलाने के साथ-साथ अपने सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास को सम्मानित करने का प्रयास करता है।

आदिवासी साहित्य की परंपरा, जो मौखिक परंपराओं से लेकर आज के समकालीन लेखन तक फैली हुई है, आदिवासी समाज के संघर्ष, सांस्कृतिक पहचान और अस्तित्व के प्रतीक के रूप में कार्य करती है। यह साहित्य न केवल आदिवासी समाज के मुद्दों और समस्याओं को सामने लाता है, बल्कि यह उन्हें सशक्त बनाने का भी काम करता है।

अंततः, आदिवासी अस्मिता विमर्श और साहित्य, दोनों ही आदिवासी समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों की पुष्टि करते हैं और उनके अस्तित्व के संघर्ष को स्पष्ट करते हैं। यह एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसे समाज के हर वर्ग द्वारा समझा और सराहा जाना चाहिए, ताकि आदिवासी समाज को अपने अधिकार, स्वतंत्रता और सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करने का अवसर मिल सके।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आदिवासी अस्मिता विमर्श के प्रमुख मुद्दों का विश्लेषण करें और उनका सामाजिक, सांस्कृतिक प्रभाव समझाएं।
2. आदिवासी साहित्य की मौखिक परंपरा और उसके विकास के इतिहास पर विस्तृत प्रकाश डालें।
3. समकालीन आदिवासी लेखन में साहित्यिक शैलियों और विचारों के परिवर्तन का विश्लेषण करें।
4. आदिवासी साहित्य के महत्व और उसके संरक्षण की चुनौतियों पर चर्चा करें।
5. आदिवासी साहित्य में शोषण और संघर्ष की अवधारणाओं को साहित्यिक उदाहरणों के साथ समझाएं।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी कौन - रमणिका गुप्ता
2. आदिवासी चितंन की भूमिका - गंगा सहाय मीणा
3. उपनिवेशवाद और आदिवासी संघर्ष - हेरॉल्ड एस. तोपनो
4. आदिवासी समाज और शिक्षा-रामशरण जोशी
5. आदिवासी और विकास के भद्रलोक-अश्वनि कुमार पंकज
6. आदिवासी लोक और संस्कृति - रमेश चन्द मीणा
7. झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टीविस्ट के नोट्स - वीर भारत तलवार
8. हिंदी साहित्य का ज्ञानकोश - शंभुनाथ

SGOU

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

विविध आदिवासी आंदोलन-चुआर आंदोलन, संथाल आंदोलन, कोल आंदोलन, भूमिज आंदोलन, गोड आंदोलन, मुंडा आंदोलन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिवासी शोषण के बारे में समझता है।
- आदिवासी आन्दोलन के बारे में परिचित होता है।
- भारतीय इतिहास में आदिवासी संघर्ष का महत्व समझता है।
- संथाल आंदोलन से परिचय प्राप्त करता है।

Background / पृष्ठभूमि

आदिवासी आंदोलन का इतिहास भारतीय समाज में शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक रहा है। यह आंदोलन विशेष रूप से आदिवासी समुदायों के भूमि अधिकारों की रक्षा के लिए हुआ, जिनकी ज़मीनों पर बाहरी ताकतों का कब्जा हो गया था। ब्रिटिश शासन ने आदिवासियों की पारंपरिक भूमि व्यवस्था को समाप्त किया और उन्हें भूमिहीन मजदूरों में बदल दिया, जिससे उनके जीवन-यापन में गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हुईं। इसके अलावा, अंग्रेजों द्वारा लागू की गई दमनकारी नीतियों, जैसे नए भूमि कर, राजस्व वसूली और प्रशासनिक हस्तक्षेप, ने आदिवासियों के जीवन को कठिन बना दिया। आदिवासी समुदाय के लिए अपने अधिकारों की रक्षा करना और बाहरी शोषण से मुक्ति पाना महत्वपूर्ण बन गया। इसी उद्देश्य से कई विद्रोहों ने जन्म लिया, जिनमें चुआर, कोल, भूमिज और मुंडा विद्रोह प्रमुख थे। इन आंदोलनों ने आदिवासियों के संघर्ष को एक दिशा दी और उनके अधिकारों के लिए न्याय की मांग की।

आदिवासी विद्रोहों ने भारत में उपनिवेशवाद के विरुद्ध प्रतिरोध की एक महत्वपूर्ण परंपरा का निर्माण किया। 18वीं से 20वीं शताब्दी के बीच, विभिन्न जनजातियों ने अपने अधिकारों, संस्कृति, भूमि और स्वायत्तता की रक्षा के लिए कई सशस्त्र संघर्ष किए। हल्बा, चुआर, संथाल, भील, मुंडा, कोल, हो, गोंड, खासी, कुकी और अन्य जनजातियों ने शोषणकारी कर नीतियों, जबरन मजदूरी, जंगलों पर प्रतिबंध और ज़मींदारी प्रथा के खिलाफ संगठित रूप से विद्रोह किया। इन आंदोलनों का नेतृत्व अक्सर स्थानीय नायकों जैसे तिलका मांझी, सिद्धू-कान्हू, बिरसा मुंडा, गोविंद गुरु, अल्लूरी सीताराम राजू और लक्ष्मण नाइक ने किया, जिन्होंने अपने समुदायों को सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक स्तर पर संगठित किया। ये विद्रोह ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक अस्मिता और स्वतंत्रता की

आकांक्षा के प्रतीक थे। यद्यपि इनमें से अधिकांश आंदोलनों को अंग्रेजों ने हिंसक तरीकों से दबा दिया, फिर भी इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को आधार और प्रेरणा प्रदान की तथा आदिवासियों की सामाजिक चेतना और राजनीतिक अधिकारों की नींव रखी।

Keywords / मुख्य बिन्दु

दमनकारी, व्यवस्था, राजस्व वसूली, प्रशासनिक हस्तक्षेप

Discussion / चर्चा

2.4.1 विविध आदिवासी आन्दोलन

- सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन है

आदिवासी आंदोलन एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन है, जिसका उद्देश्य आदिवासी समुदायों के अधिकारों, संस्कृति और पहचान की रक्षा करना है। इस आंदोलन का केंद्र बिंदु भूमि अधिकारों की रक्षा है, क्योंकि आदिवासी लोग अपनी आजीविका के लिए जंगलों, ज़मीन और जल संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। आंदोलन यह भी सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर, जैसे भाषा, परंपराएँ और धार्मिक विश्वास, बाहरी प्रभावों से सुरक्षित रहें, जो औपनिवेशिकता, भूमंडलीकरण और औद्योगिकीकरण के रूप में सामने आते हैं।

- असमानताओं को उजागर करते हैं

आदिवासी समाज का इतिहास शोषण, उत्पीड़न और सामाजिक बहिष्करण से भरा हुआ है और यह आंदोलन इन असमानताओं को उजागर करने और उन्हें समाप्त करने के लिए काम करता है। आदिवासी नेता और कार्यकर्ता सामाजिक न्याय, समावेशन और आदिवासी ज्ञान और संसाधनों की सुरक्षा की मांग करते हैं, ताकि यह बाहरी ताकतों द्वारा निगला न जाए। आंदोलन आदिवासी समुदायों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करता है और उनके खिलाफ हो रहे अन्याय के खिलाफ संघर्ष करता है।

- बुनियादी अधिकारों की मांग करती हैं

आदिवासी आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा राजनीतिक अधिकारों और स्वायत्तता की प्राप्ति है। इसमें आदिवासी समुदायों के लिए बेहतर राजनीतिक प्रतिनिधित्व, भूमि विस्थापन से सुरक्षा और बुनियादी अधिकारों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार तक पहुँच की मांग की जाती है। यह आंदोलन आदिवासी लोगों के लिए गरिमा, सम्मान और आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने की एक निरंतर लड़ाई है, जो उनके जीवन शैली और भविष्य की रक्षा के लिए आवश्यक है।

2.4.1.1 चुआर आंदोलन

चुआर विद्रोह (Chuar Rebellion) 18वीं शताब्दी के अंत में बंगाल के जंगल महल क्षेत्र में हुआ, जो मुख्य रूप से अंग्रेजों द्वारा किसानों पर बढ़ाए गए राजस्व, ज़मीन की नीलामी और अन्य आर्थिक असंतोष के कारण हुआ। चुआर समुदाय, जो जंगल में शिकार और कृषि करते थे, पहले स्थानीय ज़मींदारों के पाइक (सिपाही) हुआ करते थे और बदले में उन्हें ज़मीन मिलती थी। लेकिन अंग्रेजों ने उनकी ज़मीनें छीन लीं और पाइक की जगह बाहरी पुलिस नियुक्त कर दी। इससे चुआर लोग, किसान और पूर्व ज़मींदारों में भारी असंतोष फैल गया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह शुरू किया। रघुनाथ महतो ने 1769 में 'अपना गाँव अपना राज, दूर भगाओ विदेशी राज' का नारा देकर इस विद्रोह को व्यापक समर्थन दिलाया।

- अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह शुरू किया है।

इस विद्रोह में कई प्रमुख नेता जैसे रघुनाथ महतो, श्याम गंजम, सुबल सिंह और अन्य ने सक्रिय रूप से भाग लिया। अंग्रेजों ने इस विद्रोह को दबाने के लिए सैन्य कार्रवाई की, लेकिन विद्रोही ताकतों ने अंततः अंग्रेजों को ज़मीन वापस करने और कुछ राहत उपायों को स्वीकार करने पर मजबूर किया। 1800 में, पाइकों को उनकी ज़मीनें पुनः दी गईं और ज़मींदारों के अधिकारों की बहाली की गई। 1805 में इस व्यवस्था को औपचारिक रूप से मंजूरी मिली, जिसके बाद क्षेत्र में शांति स्थापित हुई। चुआर विद्रोह ने अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय जन आंदोलन की नींव रखी और यह संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गया।

- इस विद्रोह में कई प्रमुख नेता जैसे रघुनाथ महतो, श्याम गंजम, सुबल सिंह और अन्य ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

2.4.1.2 संथाल आंदोलन

संथाल हूल जो 30 जून 1855 को शुरू हुआ, भारत का पहला सशस्त्र जनसंघर्ष था, जिसे संथाल आदिवासियों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ा। संथालों के खिलाफ ज़मींदारों, महाजनों और अंग्रेजी प्रशासन के अत्याचारों ने उन्हें विद्रोह करने के लिए मजबूर कर दिया था। 'हूल' का अर्थ होता है क्रांति या आंदोलन और यह संथालों के शोषण, अत्याचार और अन्याय के खिलाफ एक संगठित युद्ध था। इस संघर्ष के नेतृत्व में सिद्धू, कान्हू, चांद और भैरव मुर्मू जैसे महान नायक थे, जिन्होंने 400 गाँवों के संथालों को एकत्रित किया और अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष की घोषणा की।

- संथालों के खिलाफ ज़मींदारों, महाजनों और अंग्रेजी प्रशासन के अत्याचारों ने उन्हें विद्रोह करने के लिए मजबूर कर दिया था।

संथाल हूल में संथालों ने 30 जून 1855 को भोगनाडीह गांव में एक सभा आयोजित की और यह ऐलान किया कि वे अब अंग्रेजों को कोई कर नहीं देंगे। इसके बाद यह संघर्ष अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ एक जन युद्ध में बदल गया। अंग्रेजों ने विद्रोह को दबाने के लिए सेना भेजी, लेकिन सिद्धू-कान्हू और उनके साथियों ने साहस और संघर्ष से अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई। हालांकि अंततः अंग्रेजों ने उन्हें पकड़कर फांसी दी, फिर भी यह संघर्ष आदिवासी समुदायों के अधिकारों और सम्मान की रक्षा का प्रतीक बन गया।

- जन युद्ध में बदल गया।

संथाल हूल आज भी भारतीय आदिवासी आंदोलनों में जीवित है और इसका प्रभाव आज भी देखा जाता है। आदिवासी समुदाय आज भी अपनी जल, जंगल और ज़मीन के अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं और संथालों की तरह वे शोषण और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। सिद्धू-कान्हू, चांद-भैरव और फूलो-झानो की शहादत ने आदिवासी समाज को एक नई दिशा दी और उनका संघर्ष आज भी समानता, न्याय और अधिकारों की रक्षा के लिए प्रेरित करता है।

- आदिवासी समुदाय आज भी अपनी जल, जंगल और ज़मीन के अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

2.4.1.3 कोल विद्रोह

कोल विद्रोह 1831-1832 के बीच छोटा नागपुर क्षेत्र में आदिवासी कोल लोगों द्वारा किया गया एक महत्वपूर्ण आंदोलन था। यह विद्रोह मुख्य रूप से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा लागू किए गए भूमि स्वामित्व और प्रशासनिक प्रणालियों के कारण हुआ, जिनसे कोल लोगों को आर्थिक शोषण का सामना करना पड़ा। अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में नई भूमि कर प्रणालियाँ और प्रशासनिक नियम लागू किए थे, जिनसे स्थानीय आदिवासी समुदायों की जीवन-यापन की स्थिति गंभीर रूप से प्रभावित हुई। इसके अलावा, कोल लोगों को शिक्षा और सरकारी नौकरियों से वंचित किया गया और उनकी ज़मीनों को कर्ज के रूप में जब्त कर लिया गया, जिससे उनका जीवन और भी कठिन हो गया।

- अंग्रेजों ने नई भूमि कर प्रणालियाँ और प्रशासनिक नियम लागू किए हैं।

विद्रोह के प्रमुख नेता बुधु भगत, जोआ भगत, झिंदराय मानकी और मदारा महत जैसे कोल जनजाति के लोग थे। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया और कई गाँवों और शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। शुरुआत में कोल विद्रोह सफल रहा, लेकिन अंत में अंग्रेजों ने सैन्य कार्रवाई करके विद्रोह को दबा दिया। हालांकि, इस विद्रोह के परिणामस्वरूप अंग्रेजों को छोटा नागपुर की भूमि स्वामित्व प्रणाली और प्रशासनिक

- अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया है।

नीतियों में सुधार करना पड़ा। यह विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखने वाला एक महत्वपूर्ण आंदोलन था, जिसने भविष्य में झारखंड आंदोलन को प्रेरणा दी।

2.4.1.4 भूमिज विद्रोह

भूमिज विद्रोह 1832 में गंगा नारायण के नेतृत्व में आदिवासी भूमिज समुदाय द्वारा किया गया था। यह विद्रोह उस समय के स्थानीय शोषण और ब्रिटिश प्रशासन द्वारा लागू की गई नई शासन व्यवस्थाओं के खिलाफ था। भूमिजों के खिलाफ अत्याचारों का मुख्य कारण था बड़ाभूम के ज़मींदार और पुलिस अधिकारियों द्वारा किए गए उत्पीड़न, घूसखोरी और ज़बरदस्त कर वसूली। आदिवासी समुदाय को न्याय की कोई उम्मीद नहीं थी, क्योंकि प्रशासन भ्रष्ट था और स्थानीय अधिकारियों द्वारा उनका शोषण किया जा रहा था। विद्रोह की शुरुआत 6 अप्रैल, 1832 को हुई, जब बड़ाभूम परगना के दीवान माधव सिंह की हत्या कर दी गई, जिसे गंगानारायण सिंह ने अंजाम दिया था। गंगानारायण का यह कदम अपने पिता के गद्दी के अधिकार को पुनः स्थापित करने के लिए था, क्योंकि कंपनी द्वारा लागू किए गए उत्तराधिकारी के नियमों ने उसे पैतृक संपत्ति से वंचित कर दिया था।

- नई शासन व्यवस्थाओं के खिलाफ है।

विद्रोह का मुख्य कारण था आदिवासी समुदाय की स्थानीय शासन व्यवस्था में हस्तक्षेप और ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियाँ, जो भूमिजों के लिए असहनीय हो गई थीं। गंगा नारायण की नेतृत्व क्षमता ने इस संघर्ष को मजबूती दी और इसने अंग्रेजी शासन को चुनौती दी। हालांकि 1833 में गंगा नारायण की मृत्यु के बाद यह विद्रोह शिथिल हो गया, लेकिन इसने अंग्रेजों को प्रशासनिक सुधारों के लिए मजबूर किया। इसके परिणामस्वरूप 1833 के रेगुलेशन XIII के तहत प्रशासन में व्यापक परिवर्तन किए गए, जिसमें राजस्व नीति में सुधार और छोटा नागपुर को दक्षिण-पश्चिम सीमांत एजेंसी का हिस्सा बनाया गया। भूमिज विद्रोह ने यह साबित किया कि आदिवासी समुदाय अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने में सक्षम थे और इसने भविष्य के आंदोलनों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

- भूमिज विद्रोह ने यह साबित किया कि आदिवासी समुदाय अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने में सक्षम थे और इसने भविष्य के आंदोलनों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

2.4.1.5 मुंडा उलगुलान (विद्रोह)

मुंडा उलगुलान (विद्रोह) 1899-1900 में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में छोटा नागपुर क्षेत्र में हुआ एक प्रमुख आदिवासी आंदोलन था। इसका मुख्य कारण मुंडा जनजाति के लोगों की भूमि से वंचित होना और उन्हें बाहरी (दिकू) ज़मींदारों द्वारा शोषित किया जाना था। ब्रिटिश शासन ने इनकी पारंपरिक भूमि व्यवस्था को बदल दिया, जिससे मुंडा लोग भूमिहीन मजदूर बन गए। इसके अलावा, आदिवासी परंपराओं और संस्कृति के खिलाफ उपनिवेशवादी हस्तक्षेप और मिशनरी गतिविधियाँ भी विद्रोह के प्रमुख कारण थे। बिरसा मुंडा ने आदिवासियों को जागरूक किया और उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया। उन्होंने मुंडा समाज के पुनरुत्थान का उद्देश्य रखा और बाहरी तत्वों से मुक्ति की दिशा में काम किया।

- मुंडा जनजाति के लोगों की भूमि से वंचित होना

बिरसा मुंडा का नेतृत्व आदिवासी आंदोलन को एक दिशा देने वाला था। उन्होंने 1894 में अंग्रेजों और दिकूओं के खिलाफ विद्रोह की घोषणा की और 'मुंडा राज' की स्थापना की बात की। 1899 में विद्रोह ने जोर पकड़ा, जब मुंडा समुदाय ने पुलिस स्टेशन, चर्च और सरकारी संपत्तियों पर हमले किए। हालांकि, 1900 में यह विद्रोह दबा दिया गया और बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर लिया गया, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। इस आंदोलन के बाद अंग्रेजों ने छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम, 1908 लागू किया, जो आदिवासियों के भूमि अधिकारों की रक्षा करता था। मुंडा उलगुलान ने यह साबित किया कि आदिवासी समुदाय में अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने की क्षमता है और बिरसा मुंडा ने अपनी शहादत के बाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी अमिट छाप छोड़ी।

- 1900 में यह विद्रोह दबा दिया गया है।

आज के संदर्भ में आदिवासी विद्रोहों का महत्व इतिहास की स्मृति, सांस्कृतिक अस्मिता और सामाजिक-राजनीतिक चेतना के रूप में अत्यंत प्रासंगिक है। इन विद्रोहों ने यह स्पष्ट किया कि आदिवासी समाज केवल शोषण के शिकार नहीं थे, बल्कि उन्होंने संगठित रूप से अन्याय का विरोध किया और अपने अधिकारों के लिए साहसपूर्वक संघर्ष किया। हल्बा, चुआर, संथाल, मुंडा, भील, कोल और अन्य जनजातीय आंदोलनों ने यह सिद्ध किया कि आदिवासी समाज में नेतृत्व, संगठन और बलिदान की अद्वितीय क्षमता थी। वर्तमान में जब आदिवासी समुदाय भूमि अधिग्रहण, वन अधिकार, विस्थापन, खनन, जल-स्रोतों के दोहन और पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहे हैं, तब ये ऐतिहासिक विद्रोह उन्हें संघर्ष की विरासत, आत्मसम्मान और सामूहिकता का बोध कराते हैं।

- आदिवासी समाज केवल शोषण के शिकार नहीं थे, बल्कि उन्होंने संगठित रूप से अन्याय का विरोध किया

इन आंदोलनों से प्रेरणा लेकर आज भी कई आदिवासी संगठन, सामाजिक कार्यकर्ता और युवा स्वतंत्रता, पहचान, अधिकारों और न्याय के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। आदिवासी क्षेत्रों में 'जल-जंगल-ज़मीन' के मुद्दों पर चल रहे जनांदोलन इन्हीं ऐतिहासिक संघर्षों की निरंतरता हैं। यह विमर्श मुख्यधारा समाज को यह याद दिलाता है कि विकास की प्रक्रिया तभी टिकाऊ और नैतिक होगी जब उसमें आदिवासी समाज की संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान, सामुदायिक मूल्य और जीवनशैली का सम्मान किया जाए। इसके बिना विकास का मतलब केवल विस्थापन, गरीबी और सामाजिक विघटन होगा।

- विकास की प्रक्रिया तभी टिकाऊ और नैतिक होगी जब उसमें आदिवासी समाज की संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान, सामुदायिक मूल्य और जीवनशैली का सम्मान किया जाए।

शिक्षा, साहित्य, इतिहास लेखन और नीति निर्माण में भी इन आंदोलनों की पुनर्व्याख्या हो रही है, जिससे आदिवासी इतिहास को उसका वास्तविक, सम्मानजनक और केंद्रीय स्थान मिल सके। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में अब इन आंदोलनों को गंभीरता से पढ़ाया और समझाया जा रहा है, जिससे नई पीढ़ी सामाजिक न्याय और समावेशी दृष्टिकोण को समझ सके। सरकार भी अब वन अधिकार अधिनियम, पेसा कानून और संथाल परगना जैसे संरचनात्मक प्रयासों के माध्यम से सुधार की दिशा में कार्य कर रही है। इस तरह, ये विद्रोह आज भी केवल अतीत की घटनाएँ नहीं, बल्कि वर्तमान संघर्षों की आवाज़, चेतना और दिशा हैं, जो एक न्यायपूर्ण और समावेशी भारत के निर्माण में सहायक हैं।

- स्कूलों और विश्वविद्यालयों में अब इन आंदोलनों को गंभीरता से पढ़ाया और समझाया जा रहा है

SGOU

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आदिवासी आंदोलन भारतीय समाज और इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है, जो आदिवासी समुदायों की पहचान, अधिकारों और संस्कृति की रक्षा के लिए लगातार संघर्ष करता रहा है। यह आंदोलनों ने न केवल अंग्रेजों और बाहरी शोषणकर्ताओं के खिलाफ आवाज उठाई, बल्कि आदिवासी समाज को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक भी किया। चुआर विद्रोह, कोल विद्रोह, भूमिज विद्रोह और मुंडा उलगुलान जैसे आंदोलनों ने आदिवासियों को भूमि अधिकारों, सामाजिक और राजनीतिक समानता की दिशा में संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया।

इन आंदोलनों का परिणाम यह रहा कि आदिवासी समुदायों को उनके अधिकारों का संरक्षण मिलने लगा और उनके शोषण को रोकने के लिए प्रशासनिक सुधार किए गए। हालांकि, इन आंदोलनों के अंत में आदिवासी समुदायों को कुछ विजय प्राप्त हुई, फिर भी इन संघर्षों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी और आदिवासी समाज के अधिकारों के लिए एक मजबूत आवाज़ उत्पन्न की। बिरसा मुंडा और अन्य आदिवासी नेता अपनी शहादत और संघर्ष के जरिए यह सिद्ध कर गए कि आदिवासी समुदाय सिर्फ शोषण का शिकार नहीं हो सकते, बल्कि वे अपने अधिकारों के लिए लड़ने में सक्षम हैं। इन आंदोलनों ने भारतीय समाज में समानता, न्याय और गरिमा की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आदिवासी आंदोलनों के प्रमुख कारणों और उनके प्रभावों का विश्लेषण करें।
2. मुंडा उलगुलान आंदोलन के महत्व और इसके परिणामों पर चर्चा करें।
3. कोल विद्रोह और भूमिज विद्रोह के बीच समानताएँ और अंतर स्पष्ट करें।
4. आदिवासी समाज की परंपराओं और संस्कृति की रक्षा के लिए किए गए आंदोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालें।
5. चुआर विद्रोह के सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों पर एक विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी कौन - रमणिका गुप्ता
2. आदिवासी चितंन की भूमिका - गंगा सहाय मीणा

SGOU

3. उपनिवेशवाद और आदिवासी संघर्ष - हेरॉल्ड एस. तोपनो
4. आदिवासी समाज और शिक्षा - रामशरण जोशी
5. आदिवासी और विकास के भद्रलोक - अश्वनि कुमार पंकज
6. आदिवासी लोक और संस्कृति - रमेश चन्द मीणा
7. झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टीविस्ट के नोट्स - वीर भारत तलवार
8. हिंदी साहित्य का ज्ञानकोश - शंभुनाथ

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 03

समकालीन हिन्दी आदिवासी लेखन-कविता

Block Content

Unit 1 : आदिवासी कविताओं में अस्मिता और वजूद का स्वर, आदिवासी कविता: अंतर्वस्तु और मूल्यांकन, प्रमुख कवि- ग्रेस कुजूर, रोज केरकट्टा, हरिराम मीणा, महादेव टोप्पो, निर्मला पुतुल, वंदल टेटे, विजय सिंह मीणा

Unit 2 : निर्मला पुतुल और वाहरु सोनवणे की कविता में आदिवासियत

Unit 3 : महादेव टोप्पो और जसिंता केरकट्टा की कविता में आदिवासी

Unit 4 : रामदयाल मुंडा और मदन कश्यप की कविता में आदिवासी स्वर

SGOU

इकाई 1

आदिवासी कविताओं में अस्मिता और वजूद का स्वर, आदिवासी कविता: अंतर्वस्तु और मूल्यांकन, प्रमुख कवि- ग्रेस कुजूर, रोज केरकट्टा, हरिराम मीणा, महादेव टोप्पो, निर्मला पुतुल, वंदल टेटे, विजय सिंह मीणा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिवासी कविता की सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि के बारे में समझता है।
- वे यह जान सकेंगे कि आदिवासी कविता केवल साहित्य नहीं, बल्कि अस्तित्व, प्रतिरोध और पहचान की अभिव्यक्ति है।
- आदिवासी कविता में अभिव्यक्त सामूहिक जीवन से परिचय प्राप्त करता है।
- समकालीन आदिवासी कवियों जैसे रामदयाल मुण्डा, अनुज लुगुन आदि के योगदान को पहचान सकेंगे।

Background / पृष्ठभूमि

आदिवासी कविता को सही मायनों में समझने के लिए हमें सबसे पहले आदिवासी जीवन-दर्शन को जानना होगा। यह दर्शन शहरी और बाज़ारवादी सोच से बिलकुल अलग है, क्योंकि यह सामूहिकता और सह-अस्तित्व पर आधारित है। आदिवासियों के लिए जल, जंगल और ज़मीन केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं हैं; वे इन्हें माँ मानते हैं और अपने अस्तित्व का आधार मानते हैं। इसलिए, उनकी कविता में जो गहरा प्रकृति-प्रेम दिखाई देता है, वह कोई कल्पना नहीं बल्कि उनके जीवन की सच्चाई है। यह कविता एक ऐसे न्यायपूर्ण और समतावादी समाज की बात करती है, जहाँ मनुष्य और प्रकृति के बीच कोई ऊँच-नीच नहीं है और सबका बराबर का महत्व है।

यह कविता उन लाखों लोगों की आवाज़ है जो आज़ादी के बाद भी लगातार शोषण और विस्थापन झेल रहे हैं। बड़े-बड़े विकास के प्रोजेक्ट (जैसे बाँध और खनन) जब उनकी ज़मीन छीनते हैं, तो उनका पूरा जीवन उजड़ जाता है। आदिवासी कविता इस विस्थापन की राजनीति और अन्याय के खलिाफ़ एक सशक्त हथियार है। यह केवल अपनी पीड़ा नहीं बताती, बल्कि यह प्रतिरोध करना सिखाती है। हमें यह समझना होगा कि इस कविता में जो पहचान का संकट और संघर्ष है, वह किसी व्यक्ति विशेष का नहीं बल्कि पूरे समुदाय का है, जो अपने पुरखों की संस्कृति, गौरव और अपने अधिकारों को बचाना चाहता है।

आदिवासी कविता की भाषा और शैली की सादगी को समझना भी बहुत ज़रूरी है। यह कविता सदियों पुरानी मौखिक परंपरा (गीत, कथाएँ, और लोकोक्तियाँ) से शक्ति लेती है, जिसे वे पुरखा साहित्य कहते हैं। इसलिए, यह कविता किताबी ज्ञान से ज़्यादा अनुभव और भावना को महत्व देती है। यहाँ कविता के नियम या अलंकार की

जटिलता नहीं है, बल्कि एक सरल, सीधा और सच्चा बयान है। यह हमें ध्यान में रखना चाहिए कि आदिवासी कविता का सौंदर्यबोध किसी दिखावे पर नहीं, बल्कि सत्यता और पारदर्शिता पर टिका हुआ है, जहाँ भाषा सीधे दिल से निकलकर अपनी बात कहती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सांस्कृतिक, भाषिक, साहित्यिक चेतना, कलम, तीर, जल, जंगल, ज़मीन, आदिवासी कवि, प्रतिरोध

Discussion / चर्चा

भारतीय साहित्य में आदिवासी कविता एक नई चेतना की तरह उभरी है। यह सिर्फ कविता नहीं, बल्कि एक जन-आवाज़ है, जो सदियों से चुप कराए गए लोगों के अनुभवों, संघर्षों और सपनों को शब्द देती है। जहाँ मुख्यधारा का साहित्य अक्सर आदिवासियों को 'दूसरा' या 'हाशिए का' कहकर अलग कर देता था, वहीं आदिवासी कवि अपनी कविता के माध्यम से कहते हैं, हम भी इस धरती के इतिहास, संस्कृति और भविष्य के बराबर हिस्सेदार हैं। उनकी कविताएँ जंगल, मिट्टी, नदी, पर्वत और मनुष्य, सबके बीच गहरे संबंध को महसूस कराती हैं, और बताती हैं कि असली सभ्यता वही है जो प्रकृति के साथ मिलकर जीती है न कि उसे जीतने या नष्ट करने की महत्वाकांक्षा में अपना अस्तित्व खो देती है।

3.1.1 आदिवासी कविताओं में अस्मिता और वजूद का स्वर

आदिवासी कविता भारतीय साहित्य में एक सशक्त और नई चेतना के रूप में उभरी है। यह केवल रचनात्मकता का प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक हस्तक्षेप का माध्यम भी है। इन कविताओं में आदिवासी समुदाय की

पहचान, संघर्ष, इतिहास और सपनों की गूंज सुनाई देती है। सदियों तक मौखिक परंपराओं में जीवित रही उनकी संस्कृति अब लेखन के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। यह लेखनी अब एक ऐसे तीर में बदल गई है जो केवल संवेदनाओं की नहीं, बल्कि अन्याय और असमानता पर आधारित व्यवस्थाओं की भी आलोचना करती है। आदिवासी कवि स्वयं को विषय नहीं, बल्कि समाज और साहित्य में परिवर्तन के सक्रिय साधक के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

- आदिवासी कविता समाज, संस्कृति और राजनीति में परिवर्तन की सशक्त आवाज़ है।

3.1.1.1 अस्मिता की खोज और इतिहास का पुनर्लेखन

आदिवासी अस्मिता का प्रश्न केवल जातीय नहीं, बल्कि मानवीय अस्तित्व का प्रश्न है। यह 'हम कौन हैं?' जैसी बुनियादी जिज्ञासा से आरम्भ होकर आत्म-पहचान की प्रक्रिया तक पहुँचता है। मुख्यधारा के इतिहास ने आदिवासी समाज को हाशिए पर रखा और उनके संघर्षों को अनदेखा किया। आदिवासी साहित्य इस मौन को तोड़कर अपना इतिहास स्वयं लिखता है। यह कहता है कि अस्मिता किसी बाहरी प्रमाण पर नहीं, बल्कि अपनी मिट्टी और संघर्ष से उत्पन्न चेतना पर आधारित है। इस तरह यह साहित्य पहचान को संघर्ष और आत्मनिर्भरता से जोड़ता है।

- आदिवासी साहित्य अपना इतिहास खुद लिखकर अस्मिता की नई परिभाषा देता है।

3.1.1.2 वजूद की लड़ाई और प्रतिरोध का स्वर

आदिवासी साहित्य अपने अस्तित्व की रक्षा और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रतीक है। विकास, औद्योगिकीकरण और खनन ने उन्हें भूमि और संस्कृति से विस्थापित किया। यह साहित्य सत्ता से सवाल करता है, 'हमारी ज़मीन किसके लिए छीनी गई?' इस संघर्ष में शब्द हथियार बनते हैं और सृजन आंदोलन का रूप ले लेता है। यह साहित्य दमन के खिलाफ आवाज़ उठाने के साथ आत्म-सशक्तिकरण का प्रतीक भी बनता है।

- आदिवासी साहित्य अस्तित्व की रक्षा और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष की आवाज़ है।

3.1.1.3 अस्मिता के निर्धारक तत्त्व

प्रकृति और आध्यात्मिकता

आदिवासी जीवन का केंद्र प्रकृति है। जंगल, नदियाँ और मिट्टी उनके लिए जीवंत आत्माएँ हैं। वे धरती को माँ का रूप मानते हैं। प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा उनके अस्तित्व की लड़ाई है। यह दृष्टि बताती है कि मनुष्य प्रकृति से अलग होकर जीवित नहीं रह सकता।

- प्रकृति आदिवासी जीवन और अस्मिता का आधार है

भाषा और लोक संस्कृति

भाषा आदिवासी अस्मिता की आत्मा है। यह उनके अनुभवों, मिथकों और स्मृतियों को संजोए रखती है। जब आदिवासी कवि अपनी बोली में लिखते हैं, तो वे अपनी सांस्कृतिक पहचान की घोषणा करते हैं। भाषा उनके आत्मसम्मान और राजनीतिक स्वायत्तता का प्रतीक बन जाती है।

- भाषा आदिवासी पहचान और सांस्कृतिक स्वायत्तता का प्रतीक है।

SGOU

स्त्री दृष्टि और सामूहिकता

- आदिवासी स्त्री कविता सामूहिक संघर्ष और जीवन शक्ति की प्रतीक है।

आदिवासी साहित्य में स्त्री सामूहिक चेतना की वाहक है। वह श्रम, प्रकृति और समुदाय के गहरे संबंधों को अभिव्यक्त करती है। उसकी चेतना व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक है, वह अपने पूरे समाज के दुःख-संघर्ष को शब्द देती है।

वैश्वीकरण और राजनीतिक चुनौती

- आदिवासी साहित्य वैश्वीकरण के दौर में संतुलित और मानवीय जीवन दृष्टि की रक्षा करता है

आदिवासी साहित्य राजनीति के झठे विकास-विमर्श को चुनौती देता है। यह बताता है कि आदिवासी सभ्यता टिकाऊ और संतुलित जीवन दृष्टि रखती है। वैश्वीकरण और बाज़ारवाद ने उनकी संस्कृति और स्वायत्तता पर खतरा पैदा किया है। फिर भी यह साहित्य पूँजी और सत्ता के केंद्रीकरण के विरुद्ध मानवता और प्रकृति-निष्ठ जीवन दृष्टि का समर्थन करता है। यह बाहरी शोषण के साथ-साथ आंतरिक असमानताओं से भी संघर्ष करता है।

- आदिवासी कविता जीवन, प्रकृति और आत्मसम्मान से जुड़े मानवीय अस्तित्व की गवाही है।

आदिवासी कविता अस्मिता, स्मृति और पुनर्निर्माण की यात्रा है। यह इतिहास के मौन को तोड़ती है, भाषा को नया जीवन देती है और मनुष्य व प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करती है। इसका संदेश है, विकास वही सच्चा है जो मनुष्य को उसकी मिट्टी और आत्मसम्मान से जोड़ता है। इसलिए आदिवासी साहित्य केवल एक साहित्यिक धारा नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की जीवित गवाही है जो बताता है कि धरती से जुड़ाव ही मनुष्य होने की सबसे गहरी पहचान है।

3.1.2 समकालीन हिन्दी आदिवासी लेखन-कविता

- यह साहित्य आदिवासी समाज की सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतिनिधित्व करता है।

समकालीन हिन्दी आदिवासी लेखन भारतीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसका उभार 1990 के दशक में हुआ, हालांकि इसकी जड़ें 1930-40 के दशक तक जाती हैं (सुशीला सामद, दुलायचंद्र मुंडा)। यह लेखन आदिवासी जीवन, दर्शन और संस्कृति का सजीव चित्रण करता है, जिसमें व्यक्ति नहीं बल्कि सामूहिकता और सामाजिकता को महत्व दिया गया है। इस लेखन की नींव वाचिक परंपरा और पुरखा

साहित्य की जीवंत परंपरा पर आधारित है। इसमें रामदयाल मुण्डा, बलदेव मुंडा, अनुज लुगुन, महादेव टोप्पो, ग्रेस कुजूर, और निर्मला पुतुल जैसे कवियों ने आदिवासी जीवन की पीड़ा, चेतना और प्रतिरोध को मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त किया है।

इस लेखन का केंद्रीय स्वर अस्मिता, प्रतिरोध और विद्रोह की चेतना से निर्मित है। यह शोषण, अन्याय, विस्थापन और सांस्कृतिक दमन के विरुद्ध आवाज़ उठाता है। अनुज लुगुन की कविताएँ ('गुरिल्ले का आत्मकथन', 'उलगुलान की औरतें') सामूहिक विद्रोह और अधिकार की भावना को सामने लाती हैं। ग्रेस कुजूर की 'जनी शिकार' आदिवासी स्त्रियों की शक्ति और संघर्ष का प्रतीक है। रामदयाल मुण्डा की कविताओं में प्रकृति और जीवन के सामंजस्य की गहरी अभिव्यक्ति है। इस लेखन में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन का केंद्र है।

- यह कविता विद्रोह और प्रकृति-केन्द्रित जीवन-दर्शन की सामूहिक चेतना को प्रकट करती है।

समकालीन आदिवासी कविता में स्त्री चेतना का विशेष स्थान है। निर्मला पुतुल ('क्या हूँ मैं तुम्हारे लिए') और जसिन्ता केरकेट्टा जैसी कवयित्रियाँ आदिवासी स्त्री के संघर्ष, लिंगभेद, हिंसा और बाज़ारवाद के खतरों को तीव्र स्वर में प्रस्तुत करती हैं। सरिता बड़ाइक जैसी कवयित्रियाँ भाषा के स्तर पर आदिवासी मातृभाषाओं की मौलिकता और वाचिक परंपरा की जीवंतता को बनाए रखती हैं। यह लेखन हिंदी को नई भाषिक संवेदनशीलता और ध्वन्यात्मक गहराई प्रदान करता है।

- आदिवासी स्त्री-कविता ने संघर्ष, अस्मिता और भाषा को नई शक्ति और दिशा दी है।

निष्कर्षतः, समकालीन हिन्दी आदिवासी कविता केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और वैकल्पिक दृष्टिकोण की वाहक है। सीमित संसाधनों के बावजूद, इसने साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई है। यह कविता सत्ता, पूँजी और शोषण के विरुद्ध लोकतांत्रिक प्रतिरोध का स्वर है। इसमें मनुष्य, प्रकृति और आत्मसम्मान के बीच संतुलन की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

- यह कविता सामाजिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक प्रतिरोध का प्रतीक है।

3.1.3 आदिवासी कविता अंतर्वस्तु और मूल्यांकन

आदिवासी कविता न केवल आदिवासी समुदाय के संघर्ष और दर्द को व्यक्त करती है, बल्कि यह उनके सांस्कृतिक और पारिस्थितिकीय अस्तित्व की रक्षा के लिए एक सशक्त माध्यम भी है। आदिवासी समाज की जीवनशैली और संघर्षों का चित्रण करने वाली इन कविताओं में सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक पहलुओं का गहरा विश्लेषण मिलता है। यह कविता न केवल आदिवासी समुदाय की पहचान और अस्तित्व को बचाने की लड़ाई है, बल्कि यह हमारे समग्र पारिस्थितिक तंत्र और पर्यावरण की सुरक्षा पर भी सवाल उठाती है।

- आदिवासी समाज की जीवनशैली और संघर्षों का चित्रण

3.1.4 आदिवासी समुदायों का संघर्ष और उनकी कविता

आदिवासी समुदायों का संघर्ष उनके अस्तित्व के लिए सिर्फ पहचान और भूमि के अधिकार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के लिए भी है। आदिवासी लोग सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीते आ रहे हैं, और उनकी जीवनशैली जैव विविधता की रक्षा करती है।

- आदिवासी लोग सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीते आ रहे हैं

परंतु, बाजारीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण उनके संसाधनों पर अतिक्रमण किया जा रहा है, जिससे न केवल उनकी सांस्कृतिक पहचान संकट में है, बल्कि समग्र पारिस्थितिकीय तंत्र भी खतरे में पड़ रहा है। आदिवासी कवि इस संघर्ष को कविता के माध्यम से व्यक्त करते हैं, जो उनके दर्द, विरोध और उम्मीदों का स्वर बनती है।

3.1.4.1 आदिवासी कविता का उद्देश्य

- आदिवासी समाज के संघर्ष को उजागर करती हैं

आदिवासी कविता का मुख्य उद्देश्य उनके अस्तित्व, अधिकारों और संस्कृति की रक्षा करना है। ये कविताएँ आदिवासी समाज के संघर्ष को उजागर करती हैं, जैसे भूमि हनन, गरीबी, विस्थापन, और शोषण के कारण उनकी मानसिक और शारीरिक पीड़ा। कविता इस संघर्ष को न केवल एक स्थानीय मुद्दा के रूप में देखती है, बल्कि इसे वैश्विक जागरूकता की आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत करती है। जैसे-जैसे आदिवासी समुदायों का शोषण बढ़ रहा है, वैसे-वैसे उनकी कविता में प्रतिरोध की भावना और आशा का स्वर भी प्रकट होता है।

3.1.4.2 आदिवासी कविता की अंतर्वस्तु

- दबावों को उजागर करती हैं

आदिवासी कविता की अंतर्वस्तु में मुख्य रूप से उनके सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक संघर्षों का चित्रण किया गया है। ये कविताएँ उन दबावों को उजागर करती हैं, जो आदिवासियों पर शोषण, विस्थापन, कर्ज और बंधुआ मजदूरी के रूप में डाले जाते हैं। इसके अलावा, आदिवासी महिलाओं का त्रिगुण भेदभाव, शोषण और समाज में उनकी उपेक्षा को भी इन कविताओं में कड़ी आलोचना की जाती है। उदाहरण के तौर पर, निर्मला पुतुल की कविता 'चुडका सोरेन से' आदिवासी महिलाओं के खिलाफ होने वाली यौन हिंसा और शोषण का नंगा रूप में प्रस्तुत करती है।

3.1.4.3 आदिवासी कविता का मूल्यांकन

- प्राकृतिक संसाधनों पर संकट

आदिवासी कविता का मूल्यांकन करते समय, हमें यह देखना चाहिए कि ये कविताएँ न केवल एक विशिष्ट समुदाय के संघर्ष का चित्रण करती हैं, बल्कि यह हमें समाज के अन्यायपूर्ण ढाँचे को भी समझाती हैं। इन कविताओं में आदिवासी समाज के अंतर्निहित मूल्यों, जैसे प्रकृति से जुड़ाव, सामूहिकता, और संघर्ष के प्रति उनकी अपार उम्मीदों को

दर्शाया गया है। इसके अलावा, आदिवासी कविता हमें यह भी समझाती है कि कैसे बाजारीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण आदिवासी संस्कृति, जीवनशैली और उनके प्राकृतिक संसाधनों पर संकट बढ़ रहा है।

- सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय दृष्टि कोण से भी महत्वपूर्ण संदेश देती हैं।

इन कविताओं का साहित्यिक मूल्य भी अत्यधिक है, क्योंकि ये न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण संदेश देती हैं। आदिवासी कविता में प्रतिरोध की आवाज़ होती है, जो न केवल आदिवासी समुदाय के दर्द को व्यक्त करती है, बल्कि समाज के सभी वर्गों को न्याय और समानता की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है।

- वैश्विक स्तर पर एकजुट होने की आवश्यकता का अहसास कराती है।

आदिवासी कविता न केवल आदिवासी समाज की पीड़ा और संघर्ष को व्यक्त करती है, बल्कि यह समग्र मानवता और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा की आवश्यकता को भी उजागर करती है। हमें आदिवासी समुदाय के अधिकारों और उनकी संस्कृति का सम्मान करते हुए उनके संघर्ष में उनका साथ देना चाहिए। कविता इस संघर्ष को न केवल एक समुदाय के रूप में प्रस्तुत करती है, बल्कि यह हमें वैश्विक स्तर पर एकजुट होने की आवश्यकता का अहसास कराती है। आदिवासी समाज का संघर्ष न केवल उनके अस्तित्व की रक्षा का प्रश्न है, बल्कि यह सम्पूर्ण पृथ्वी और मानवता के भविष्य से जुड़ा हुआ है।

3.1.5 प्रमुख कवि

आदिवासी कवि सामाजिक असमानता पर सवाल उठाती है और उसके पीछे छिपे शोषण के तंत्र को उजागर करती है। वह मुख्यधारा समाज की उपेक्षा और भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण को चुनौती देती है। साथ ही, उसके लेखन में आदिवासी समुदाय की पहचान, संघर्ष और अधिकारों की मजबूत माँग भी दिखाई देती है।

3.1.5.1 रोज केरकट्टा

रोज केरकेट्टा (जन्म: 5 दिसंबर, 1940) एक प्रमुख आदिवासी लेखिका, शिक्षाविद् और मानवाधिकार कार्यकर्ता हैं। उनका जन्म झारखंड के सिमडेगा जिले के कइसरा सुंदरा टोली गांव में खड़िया आदिवासी समुदाय में हुआ। वे अपनी शिक्षा के प्रति समर्पण

- रोज केरकेट्टा आदिवासी लेखिका, है।

के साथ आगे बढ़ी और रांची विश्वविद्यालय से एम.ए. और पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उनका शोध 'खड़िया लोक कथाओं का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन' पर था, जो उनकी लेखन शैली और आदिवासी समाज के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है।

- 'आधी दुनिया' नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन किया।

रोज केरकेट्टा ने खड़िया और हिंदी दोनों भाषाओं में अनेक साहित्यिक रचनाएँ की हैं, जिनमें खड़िया लोक कथाएँ, कहानियां, कविताएँ और निबंध शामिल हैं। उनके काम में आदिवासी समाज के जीवन, संघर्ष और संस्कृति को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने 'आधी दुनिया' नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन किया और आदिवासी महिलाओं के मुद्दों पर काम किया। इसके अलावा, उन्होंने कई सामाजिक संगठनों के साथ जुड़कर आदिवासी समुदाय के अधिकारों और कल्याण के लिए काम किया।

- राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कार मिले हैं।

रोज केरकेट्टा को उनके योगदान के लिए कई राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कार मिले हैं, जिसमें 2008 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा दिया गया रानी दुर्गावती राष्ट्रीय सम्मान भी शामिल है। वे आदिवासी महिलाओं के उत्थान और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए हमेशा सक्रिय रही हैं। उनका जीवन समाज सेवा, शिक्षा, और मानवाधिकारों के क्षेत्र में निरंतर समर्पित रहा है। वे सेवानिवृत्ति के बाद भी लेखन और सामाजिक कार्यों के माध्यम से अपने समुदाय की सेवा में लगी हुई हैं।

3.1.5.2 हरिराम मीणा

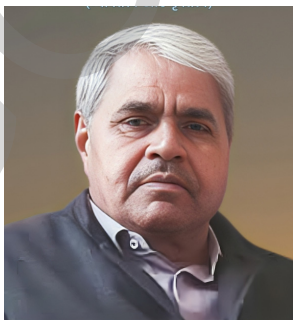

- आदिवासी विमर्श पर आधारित रचनाएँ शामिल

हरि राम मीणा का जन्म 01 मई, 1952 को राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले के ग्राम बामनवास में हुआ था। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान विविध प्रकार का है, जिसमें कविता, उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत और आदिवासी विमर्श पर आधारित रचनाएँ शामिल हैं। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक मंचों पर सराही गई हैं, बल्कि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी और दूरदर्शन पर भी प्रसारित हुई हैं।

- ब्रिटिश कालीन आदिवासी संघर्षों पर विशेष शोध किया है।

उनकी प्रमुख कृतियों में दो कविता संकलन, एक प्रबंध काव्य, दो यात्रा-वृत्तांत, एक उपन्यास, आदिवासी विमर्श पर आधारित एक पुस्तक और समकालीन आदिवासी कविता पर संपादित पुस्तक शामिल हैं। उन्होंने ब्रिटिश कालीन आदिवासी संघर्षों पर विशेष शोध किया है और जयपुर दूरदर्शन के 'गश्त पर' और 'रूबरू' जैसे लोकप्रिय कार्यक्रमों में भी योगदान दिया है। उनकी रचनाएँ राँची, वर्धा, हैदराबाद, दिल्ली, जोधपुर

SGOU

और राजस्थान विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी शामिल हैं।

- डॉ. आम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।

हरि राम मीणा को उनके साहित्यिक योगदान के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं, जैसे कि पद्मश्री सांखला अवार्ड, डॉ. आम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी का मीरा पुरस्कार, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का महा पंडित राहुल सांकृत्यायन सम्मान, बिड़ला फाउंडेशन का बिहारी पुरस्कार, और विश्व हिन्दी पुरस्कार। वर्तमान में वे अखिल भारतीय आदिवासी साहित्यिक मंच, नई दिल्ली के अध्यक्ष और सोसाइटी फॉर स्टडीज़ इन द एरियाज़ ऑफ़ ट्रेडीशन एंड ह्यूमन डिग्निटी के निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। साथ ही, वे केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के विजिटिंग प्रोफेसर भी रह चुके हैं।

3.1.5.3 महादेव टोप्पो

- महादेव टोप्पो को 'बिरसा मुंडा सम्मान' प्राप्त हुआ है।

महादेव टोप्पो एक प्रसिद्ध आदिवासी लेखक और कवि हैं, जिनका जन्म 1954 में रांची में हुआ। इन्होंने हिंदी साहित्य में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की और पुणे स्थित फिल्म और टेलीविजन इंस्टीट्यूट से फिल्म एप्रेसिएशन में सर्टिफिकेट कोर्स किया। उनकी रचनाएँ प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं जैसे धर्मयुग, समकालीन जनमत, प्रभात खबर, जनसत्ता, समयांतर, और युद्धरत आम आदमी में प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कविताएँ जर्मनी, मराठी, असमिया, और संताली भाषाओं में भी अनूदित होकर प्रकाशित हुई हैं। महादेव टोप्पो को 'बिरसा मुंडा सम्मान' और 'झारखंड इंडिजीनियस पीपल्स फोरम' द्वारा सम्मानित किया गया है। वे झारखंड के आदिवासी कवियों के संग्रह 'कलम को तीर होने दो' के संपादक भी हैं और आदिवासी-भाषाओं पर कहानी संग्रह के संपादन में सहयोगी रहे हैं। उनके अभिनय की एक महत्वपूर्ण कृति 'एड़पा काना' (घर जाना) लघु-फीचर फिल्म है, जिसे अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। वे स्वतंत्र लेखन के साथ-साथ भाषा, साहित्य, संस्कृति और कला के विकास के लिए कार्यरत हैं।

3.1.5.4 सी.आर. हेम्ब्रम

सी. आर. हेम्ब्रम का जन्म 1964 में घाटशिला में हुआ। इन्होंने पटना विश्वविद्यालय से बी.एफ.ए. (पेंटिंग) की डिग्री प्राप्त की और बाद में बड़ोदरा से फाइन आर्ट में पी. जी. डिप्लोमा किया। उनकी पेंटिंग 'संताल-विवाह' और 'सिदो कान्हू' की चित्रकारी काफी चर्चित हुई है। वे कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कला-शिविरों में भाग ले चुके हैं और उनकी पेंटिंग्स कई प्रमुख शहरों में प्रदर्शित की गई हैं। वर्तमान में वे नवोदय विद्यालय, लोहरदग्गा में कला शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं और कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे रहे हैं।

- पेंटिंग 'संताल-विवाह' और 'सिदो कान्हू' की चित्रकारी काफी चर्चित हुई है।

3.1.5.5 निर्मला पुतुल

निर्मला पुतुल एक संताल आदिवासी परिवार में 1972 में जन्मी कवयित्री और लेखिका हैं। उनकी शिक्षा इण्टरमीडिएट तक हुई है, और इसके बाद उन्होंने नर्सिंग में डिप्लोमा किया। शिक्षा के बाद, उन्होंने समाज के लिए काम करना शुरू किया और वर्तमान में बदलाव फाउंडेशन में कार्यरत हैं, जहां वे आदिवासी समाज के लिए विभिन्न परियोजनाओं पर काम करती हैं। उनका जीवन और कार्य समाज में बदलाव लाने और आदिवासी समुदाय की भलाई के लिए समर्पित है।

- वर्तमान में बदलाव फाउंडेशन में कार्यरत हैं

निर्मला पुतुल का लेखन उनके समुदाय की वास्तविकताओं और संघर्षों को प्रमुखता से उठाता है। उनका पहला कविता-संग्रह 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' प्रकाशित हुआ था, जिसमें आदिवासी जीवन की जटिलताओं और उनके अधिकारों पर गहरी सोच व्यक्त की गई है। इस संग्रह के माध्यम से, पुतुल ने अपने समाज की आवाज़ को साहित्य में उतारने का कार्य किया है। उनकी कविताएँ समाज की असमानताओं और आदिवासी जीवन की परेशानियों को उजागर करती हैं, जिससे पाठक वर्ग को उनके संघर्षों और उम्मीदों के बारे में अधिक समझ प्राप्त होती है।

- पहला कविता-संग्रह 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' प्रकाशित हुआ था

इसके अलावा, निर्मला पुतुल की रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होती हैं, जहां वे न केवल कविता, बल्कि अन्य विधाओं में भी अपनी लेखनी का योगदान देती हैं। उनके लेखन में एक मजबूत सामाजिक दृष्टिकोण और समाजिक बदलाव की प्रेरणा है। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से आदिवासी समाज की पहचान, उनकी संस्कृति और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज उठाती हैं। निर्मला पुतुल का साहित्य आदिवासी समुदाय के लिए प्रेरणा का स्रोत है, और उनके संघर्षों को एक सशक्त रूप

- मजबूत सामाजिक दृष्टि कोण और समाजिक बदलाव की प्रेरणा

में प्रस्तुत करता है।

3.1.5.6 वंदना टेटे

- मजबूत सामाजिक दृष्टि कोण और समाजिक बदलाव की प्रेरणा

वंदना टेटे का जन्म 13 सितम्बर 1969 को हुआ। वे एक प्रमुख भारतीय आदिवासी लेखिका, कवि, प्रकाशक और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। साथ ही, वे आदिवासी दर्शन 'आदिवासियत' की मुखर प्रवक्ता भी हैं। वंदना टेटे ने अपने साहित्यिक लेखन, वक्तव्यों और देशभर के साहित्यिक व अकादमिक मंचों पर प्रस्तुत विचारों के माध्यम से आदिवासी विमर्श को एक नया दृष्टिकोण और नई ऊर्जा प्रदान की है। उनका मानना है कि आदिवासी साहित्य केवल प्रतिरोध का साहित्य नहीं है, बल्कि यह रचाव और बचाव का साहित्य है। वे आदिवासी सौंदर्यबोध और कलाभिव्यक्तियों को आदिवासी जीवनदृष्टि का मूल तत्त्व मानती हैं। उन्होंने आदिवासी साहित्य की एक विशिष्ट दार्शनिक अवधारणा प्रस्तुत की है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि यह साहित्य औपनिवेशिक और ब्रह्मणवादी विचारों व शब्दावलियों से पूरी तरह भिन्न है।

- वंदना टेटे अपने साहित्य को 'ऑरेचर' कहती हैं, जिसका अर्थ है ऑरल लिटरेचर यानी वाचिक परंपरा से उपजा साहित्य

वंदना टेटे का यह दृढ़ विश्वास है कि आदिवासी जीवनदृष्टि किसी भी प्रकार के पक्ष और प्रतिपक्ष को नहीं अपनाती। आदिवासी समाज मूलतः समतामूलक है, जहाँ न तो व्यक्ति-केन्द्रित सोच है और न ही शक्ति-संरचना के किसी भी रूप को स्थान प्राप्त है। इसी आधार पर वे आदिवासी साहित्य को 'लोक' और 'शिष्ट' साहित्य में विभाजित करने की प्रवृत्ति को खारिज करती हैं। उनके अनुसार, आदिवासी समाज में समानता सर्वोपरि है, और इसलिए उनका साहित्य भी एकरूप और अविभाज्य है। वंदना टेटे अपने साहित्य को 'ऑरेचर' कहती हैं, जिसका अर्थ है ऑरल लिटरेचर यानी वाचिक परंपरा से उपजा साहित्य। उनके अनुसार, आज जो लिखा जा रहा आदिवासी साहित्य है, वह दरअसल उसी वाचिक परंपरा का विस्तार है, जो उनके पुरखों से विरासत में प्राप्त हुई है। वे यह भी स्पष्ट रूप से कहती हैं कि गैर-आदिवासी लेखकों द्वारा आदिवासियों पर शोध कर के लिखा गया साहित्य शोध साहित्य तो हो सकता है, लेकिन उसे आदिवासी साहित्य नहीं कहा जा सकता। हिंदी और अंग्रेजी के वे लेखक जो 'आदिवासियत' को नहीं समझते, वे आदिवासी साहित्य को न ही ठीक से समझ सकते हैं और न ही उसे रच सकते हैं।

इस प्रकार, वंदना टेटे ने आदिवासी साहित्य और विचारधारा को एक मौलिक वैचारिक धरातल पर स्थापित करते हुए, उसे मुख्यधारा साहित्य और विमर्श के केंद्र में लाने का कार्य किया है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

समकालीन आदिवासी कविता आज सिर्फ भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम नहीं रही, बल्कि यह एक मजबूत सामाजिक और राजनीतिक आवाज़ बन गई है। यह कविता आदिवासी समाज की पहचान, उनके संघर्ष और न्याय की माँग को सामने लाती है। रामदयाल मुण्डा, अनुज लुगुन, ग्रेस कुजूर, महादेव टोप्पो और निर्मला पुतुल जैसे कवियों ने अपने अनुभवों के जरिए आदिवासी जीवन की सच्चाई को कविता में उतारा है। इनकी कविताएँ स्त्रियों के दर्द, जंगलों से जुड़ाव, विस्थापन, भूख, हिंसा और शोषण की बात करती हैं।

आदिवासी कविताएँ अपनी मातृभाषा और वाचिक परंपरा से जुड़ी हुई हैं, लेकिन अब ये हिंदी जैसी बड़ी भाषाओं में भी लिखी जा रही हैं। इस तरह ये कविता न केवल आदिवासी समाज की बात करती है, बल्कि हिंदी साहित्य को भी समृद्ध बनाती है। यह कविता अतीत की तकलीफ़ें, वर्तमान की चुनौतियाँ और भविष्य की उम्मीदें – तीनों को जोड़ती है। इसमें प्रकृति के साथ तालमेल और बाजारवाद व औद्योगीकरण के ख़तरों की चेतावनी भी मिलती है।

यह साहित्य सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि सोचने और बदलने के लिए है। यह दिखाता है कि आदिवासी अब चुप रहने वाले नहीं, बल्कि अपनी बात खुलकर कहने वाले लोग बन चुके हैं। उनकी कलम अब तीर की तरह तेज़ है, जो अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाती है। यह एक नए युग की शुरुआत है, जहाँ कविता समाज को जागरूक करने का माध्यम बन चुकी है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. समकालीन आदिवासी कविता में 'अस्मिता' और 'संघर्ष' की अवधारणा पर चर्चा कीजिए।
2. आदिवासी साहित्य में प्रतिरोध की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
3. आदिवासी कविता की विकास यात्रा पर टिप्पणी लिखिए।
4. समकालीन आदिवासी कविता में प्रकृति और पर्यावरण की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
5. आदिवासी कविता में अभिव्यक्त स्वत्व बोध पर विचार कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी और विकास का भद्रालोक - अश्विनी कुमार पंकज
2. आदिवासी चिंतन की भूमिका - हरि राम मीणा
3. वाचिकता - वंदना टेटे
4. आदिवासी समाज और शिक्षा - रामशरण जोशी
5. उपनिवेशवाद और संघर्ष - हैरोल्ड एस तोपनो
6. कलम को तीर होने दो (झारखंड के आदिवासी हिन्दी कवि) - रमणिका गुप्ता

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

निर्मला पुतुल और वाहरु सोनवणे की कविता में आदिवासियत

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- निर्मला पुतुल और वाहरू सोनावणे की कविताओं में आदिवासी समाज की पीड़ा और शोषण को समझा जा सकता है।
- आदिवासी समाज की पीड़ा, विस्थापन और शोषण की वास्तविकताओं को समझते हैं।
- स्त्रियों और कमजोर वर्गों के बहुआयामी संघर्ष और प्रतिरोध की अवधारणा को समझ सकते हैं।
- सामाजिक असमानता, आर्थिक शोषण और लैंगिक हिंसा के प्रभावों को समझ सकते ह।

Background / पृष्ठभूमि

निर्मला पुतुल और वाहरू सोनावणे की कविताएँ आदिवासी समाज की पीड़ा, शोषण और प्रतिरोध की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। ये कविताएँ आदिवासी जीवन की कठिनाइयों, विस्थापन और सामाजिक अन्याय को उजागर करती हैं, विशेषकर स्त्रियों और कमजोर वर्गों की असमर्थ स्थिति को। निर्मला पुतुल आदिवासी स्त्रियों के दैहिक, आर्थिक और सामाजिक शोषण, यौन हिंसा और मजबूर श्रम को अपने शब्दों में जीवंत करती हैं और उनके आत्मगौरव, प्रतिरोध और सांस्कृतिक पहचान की पुकार करती हैं। वाहरू सोनावणे की कविता 'स्टेज' सामूहिक चेतना और सामाजिक मंचों पर वंचितों की आवाज़ को दर्शाती है, जहाँ उन्हें बोलने का अधिकार नहीं मिलता। दोनों कवियों की रचनाएँ केवल व्यक्तिगत अनुभव नहीं, बल्कि आदिवासी और दलित समुदाय की सामूहिक चेतना, संघर्ष और सामाजिक न्याय की मांग का प्रतीक हैं। उनकी भाषा सहज, यथार्थपूर्ण और संवेदनशील है, जो पाठक को सीधे जीवन और संघर्ष की वास्तविकता से जोड़ती है। इस प्रकार, उनके सृजन आदिवासी समाज की अस्मिता, प्रतिरोध और सांस्कृतिक अस्तित्व की सशक्त गवाही के रूप में भारतीय कविता में अनूठा स्थान रखते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदिवासी, शोषण, प्रतिरोध, स्त्री-अस्मिता, विस्थापन, सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक पहचान

Discussion / चर्चा

निर्मला पुतुल और वाहरू सोनावणे की कविताएँ आदिवासी समाज की बहुआयामी समस्याओं और उनके संघर्ष को उजागर करती हैं। ये रचनाएँ केवल काव्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और न्याय की माँग का माध्यम भी हैं। उनका साहित्य पाठक को न केवल पीड़ा महसूस कराता है, बल्कि प्रतिरोध और सामूहिक जागृति के लिए सोचने पर मजबूर करता है।

3.2.1 निर्मला पुतुल - आपके शहर में, आपके बीच रहते आप के लिए

निर्मला पुतुल की कविता 'आपके शहर में आपके बीच रहते हुए' आदिवासी समाज की विसंगतियों और नारी-शोषण को मार्मिक रूप से प्रस्तुत करती है। कविता में आदिवासी जीवन के संघर्ष, शहरी समाज की उदासीनता, स्त्री की पीड़ा तथा उसकी पहचान के प्रश्न को प्रभावी ढंग से उजागर किया गया है। यह कविता सामाजिक अन्याय और असमानता पर गहरा सवाल उठाती है।

3.2.1.1 निर्मला पुतुल

निर्मला पुतुल की कविताएँ आदिवासी समाज की पीड़ा, शोषण और प्रतिरोध की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। वे केवल स्त्री-मुक्ति की कवयित्री नहीं, बल्कि आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व की संघर्षशील आवाज़ हैं। उनकी कविताओं में राजनीति, बाज़ार और विकास के नाम पर आदिवासियों के विस्थापन, अन्याय और हाशियाकरण की गहरी व्यथा दिखाई देती है। इस सामाजिक अन्याय के बीच आदिवासी स्त्रियों की स्थिति और भी दयनीय है, वे दैहिक, आर्थिक और सामाजिक शोषण का सामना करती हैं। निर्मला पुतुल अपने शब्दों से इन्हें जागरूक होने और प्रतिरोध की राह अपनाने का आह्वान करती हैं। उनके प्रमुख कविता-संकलन 'अपने घर की तलाश में' (2004), 'नगाड़े की

तरह बजते शब्द' (2005) और 'बेघर सपने' (2014) आदिवासी जीवन की सच्चाई, संघर्ष और विद्रोह के जीवंत दस्तावेज़ हैं। उनकी कविता सामाजिक न्याय, आत्मसम्मान और अस्मिता की गूंज है।

आपके शहर में, आपके बीच रहते आप के लिए

कितनी अजीब बात है
कि एक समय में
जब हम अपनी उन बहनों को ढूँढ़ने
आपके शहर आए हैं जो
वर्षों पहले आपके शहर आई
अब तक वापस नहीं लौटीं
और आप हैं कि हमसे पूछ रहे हैं
कि हमने कभी किसी से प्रेम किया है या नहीं

मैं बताना चाहती हूँ
उसके इंतजार में पथरा गईं बूढ़ी माँ की आँखों का हाल
और आप हैं कि मेरी आँखों की
प्रशंसा में कसीदे पढ़ रहे हैं
मैं अपने इलाके की उन गुम हो गई लड़कियों को
ढूँढ़ना चाहती हूँ/पहुँचना चाहती हूँ उन लोगों तक
समझना चाहती हूँ उनके जीवन और दिनचर्या का गणित
और देखना चाहती हूँ उसके भीतर
कितना बचा है हमारा झारखंड
कितनी बची है उसकी भाषा में संताल परगना के माटी का गंधा
और थोड़ी भी अपने गाँव घर वापस लौटने की गुंजाइश
बची है उनकी आँखों में या नहीं
देखना चाहती हूँ मैं

मैं उन लोगों तक पहुँचने में आपकी मदद चाहती हूँ
और आप हैं कि हम तक पहुँचने के रास्ते बना रहे हैं
अनचाहे हम पर छोटे-छोटे एहसास थोपकर
मुझे याद है
मैंने जब भी उन मुद्दों पर आपसे बात की
बताना चाहा अपने गाँव, घर, समुदाय का हाल
जंगल पहाड़ों की चर्चा की
गुम हो गई लड़कियों के पता ठिकाने के बारे में पूछा
आपने बातों को सलीके से मेरी
व्यक्तिगत जिन्दगी की ओर मोड़ दिया
और उलजुलूल सवाल किए

मुझसे उम्मीद न करें
कि मैं आपकी शानो-शौकत के आकर्षण में बँधकर
आपके चमकते चेहरे का गुनगान करूँगी
और खो जाऊँगी आपके बात करने के अंदाज में इस कदर
कि जिसमें गुम हो जाएगा
भूख, बीमारी, शोषण से लड़ते-मरते लोगों के मुद्दे पर
मेरे दोस्त का थका-हारा चेहरा

मैं अपने इलाके के सूखे और अकाल की
चर्चा कर करना चाहती हूँ आपसे
भूख बीमारी से लड़ते-मरते मंगरू, बुधवा और
इलाज के लिए राशनकार्ड गिरवी रखने वाले
समरू पहाड़िया की बात करना चाहती हूँ
जड़ खाकर जिन्दा संतालों और
चूहे पकाकर खा रहे भूखे नंगे
पहाड़िया बच्चों की बात करना चाहती हूँ

उत्तर प्रदेश के एक जनपद में पाँच हजार में बिकी
सत्तरह वर्षीय सोनामुनी हांसदा की बात करना चाहती हूँ मैं
मैं बात करना चाहती हूँ हिजला पेला देखकर वापस घर लौट रही
मेलचो मुर्मू के साथ हुई सामूहिक बलात्कार की

और उस फूलमुनी बेसरा की भी
जो नौकरी की आस में एक स्वयंसेवी संस्था के
पचास वर्षीय प्रमुख के हाथों लगातार

SGOU

तीन सालों तक यौन शोषण का शिकार होती रही

मैं बात करना चाहती हूँ
अपने उस गाँव की, जहाँ आज तक बिजली नहीं पहुँची
सड़कें नहीं पहुंचीं, और तो और जहाँ की महिलाएँ
आज भी कोस भर दूर झरनों से पानी ढोकर लाती हैं
और जिनके बच्चे बगाली के नाम पर
वर्षों से महाज़न के पास गिरवी पड़े हैं

पर अफसोस!
आपको मेरी बातों में दिलचस्पी कम
और मुझमें ज़्यादा है
यह मत भूलिए कि मैं
झारखंड के मानचित्र पर
संताल परगना का चेहरा हूँ

मेरी आँखों में उजड़ते जंगलों का बियावान दृश्य है पलायन कर रहे लोगों की भीड़ है
मलेरिया, काला जार से मरते लोगों के चेहरे हैं

जंगली हाथियों के उत्पाद की दहशत है
भूख से हुई मौतों के मुद्दे पर लड़ते लोगों पर पुलिसिया जुल्म का आतंक है
मेरे लिए दिल
जंग लगा हुआ ताला है
और प्रेम-प्यार जैसे शब्द
जिन्दगी की भाग-दौड़ में खो गई चाबी
आपके लॉन की हरी मखमली घास नहीं है मेरी देह दुमका की मिट्टी से बनी
झारखंड का पठार हूँ मैं

जंगल-पहाड़ों में खिल्ली जंगली फूल हूँ मैं

जो आपके महल में नहीं सज सकती
मुझे वापस लौटना है अपने देश
और उस पहाड़ पर खिलना है
जहाँ बैठ बाँसुरी बजाता कोई मेरा इंतजार कर रहा है
जिसके संबल और विश्वास ने मुझे
यहाँ तक पहुँचने का रास्ता दिया
उस सोहागिनी और कमोली टुडू के लिए वापस लौटना है हमें

SGOU

जिसके भीतर अपनी बेटियों के वापस लौटने की उम्मीद बची है
मेरे वापस लौटकर ख़बर लाने तक
अपनी माँ के लिए वापस लौटना है मुझे
जिसकी आँखों में माया की तरह मेरे भी
गुम हो जाने की आशंका बनी है
मैं इस काम में आपकी मदद चाहती हूँ
लेकिन इस शर्त पर नहीं कि मैं आपमें दिलचस्पी लूँ मुझे वापस लौटना है
उन बूढ़ी पथराई आँखों में उम्मीद की रोशनी बनकर

भूख, बीमारी, शोषण, अत्याचार के खिलाफ मोर्चाबंदी कर
लड़ रहे लोगों का हौसला बनकर
थक-हार कर निराश चुप्पी साधे बैठी
लुईस मुर्मू की आवाज बनकर
अपने दोस्त के विश्वास की रक्षा की ख़ातिर
वापस लौटना है
मुझे वापस लौटना है

इसलिए मुझसे उम्मीद न करें
कि मैं आपकी शानो-शौकत के आकर्षण में बँधकर आपके चमकते चेहरे और
मीठी बातों में दिलचस्पी लूँगी
मुझसे उम्मीद न करें
मुझसे उम्मीद न करें....।

SGOU

3.2.1.2 सारांश

- कविता की शुरुआत आदिवासी स्त्री की खोज और शहरी समाज की संवेदनहीनता को दर्शाती है।

निर्मला पुतुल की कविता 'आपके शहर में, आपके बीच रहते आप के लिए' आदिवासी जीवन की त्रासदी, स्त्री अस्मिता और सामाजिक अन्याय की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह कविता उन आदिवासी स्त्रियों की आवाज़ है जो जंगलों से विस्थापित होकर रोज़गार की तलाश में शहरों की ओर चली जाती हैं और वहाँ शोषण, हिंसा तथा अपमान का सामना करती हैं। कवयित्री इन गुम हो चुकी स्त्रियों को खोजने शहर आती हैं, लेकिन वहाँ उसे संवेदनहीनता और आत्ममुग्ध समाज मिलता है। शहर के लोग उसके दर्द को समझने के बजाय उसकी सुंदरता और निजी जीवन के बारे में सवाल करने लगते हैं। कवयित्री के लिए यह अनुभव स्त्री के अस्तित्व और सम्मान के प्रति समाज की असंवेदनशीलता को उजागर करता है।

- कवयित्री पुरुषवादी समाज की दृष्टि पर व्यंग्य करती हैं, जो स्त्री को एक वस्तु के रूप में देखता है।

कवयित्री कहती हैं कि जब वह अपने समाज की पीड़ा और संघर्ष की बात करती हैं, तब शहर का आदमी उसकी आँखों की प्रशंसा करने लगता है। यह पंक्तियाँ बताती हैं कि समाज स्त्री के व्यक्तित्व को नहीं, बल्कि उसके शरीर को महत्व देता है। आदिवासी स्त्री दोहरे शोषण की शिकार है, एक तरफ आर्थिक असमानता और गरीबी, दूसरी तरफ पुरुषों की वासनात्मक दृष्टि। निर्मला पुतुल इस द्वंद्व को बड़ी सादगी से उजागर करती हैं, जिससे कविता केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक दस्तावेज़ बन जाती है।

- आदिवासी स्त्रियों का शोषण आर्थिक, सामाजिक और यौन स्तर पर बहुआयामी होता है और उन्हें पूरी तरह से कमजोर स्थिति में रखा जाता है।

कविता के बीच के हिस्से में कवयित्री अपने झारखंड की याद करती हैं, वह गाँव जहाँ बिजली नहीं पहुँची, सड़कें नहीं बनीं, और महिलाएँ आज भी झरनों से पानी ढोती हैं। कवयित्री उन लड़कियों की बात करती हैं जिन्हें रोज़गार के नाम पर शहरों में भेजा गया, जिन पर अत्याचार हुए, जिनका यौन शोषण हुआ। आदिवासी और ग्रामीण महिलाओं और लड़कियों को उनके कमजोर सामाजिक और आर्थिक स्थिति का लाभ उठाकर विभिन्न रूपों में शोषित किया जाता है। उन्हें घरेलू नौकरियों या अनौपचारिक क्षेत्रों में जबरन श्रम करने के लिए भेजा जाता है, और अक्सर उनकी मेहनत का उचित मुआवज़ा नहीं मिलता। वे कार्यस्थल पर छेड़छाड़, उत्पीड़न और कम वेतन जैसी परिस्थितियों का सामना करती हैं। इसके अलावा, उन्हें रहने, खाने, व्यक्तिगत स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं की उचित सुविधाएँ नहीं दी जाती। कई बार उन्हें यौन उत्पीड़न, बलात्कार और जबरन गर्भाधान जैसी गंभीर हानियों का भी सामना करना पड़ता है। आदिवासी महिलाएँ न केवल श्रम और यौन शोषण की शिकार होती हैं, बल्कि उन्हें मजबूर विवाह और सामाजिक बहिष्कार जैसी परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ता है। इस प्रकार, आदिवासी स्त्रियाँ आर्थिक, शारीरिक, यौन और सामाजिक स्तर पर बहुआयामी शोषण का सामना करती हैं।

- कवयित्री शहर की बनावटी संस्कृति को अस्वीकार कर अपनी जड़ों से जुड़ी पहचान को पुनः स्थापित करती हैं।

कवयित्री शहर की चकाचौंध और सभ्यता को ठुकराते हुए कहती हैं कि वह 'दुमका की मिट्टी से बनी झारखंड का पठार' है, कोई सजावट का फूल नहीं। यह आत्मगौरव और पहचान की घोषणा है। वह खुद को जंगल, मिट्टी और पहाड़ों से जुड़ी स्त्री बताती हैं, जो प्रकृति की तरह सच्ची और संघर्षशील है। शहर के वैभव से उसे आकर्षण नहीं,

बल्कि घृणा है, क्योंकि वही शहर उसकी बहनों का शोषण करता है। यह अस्वीकार एक तरह का प्रतिरोध है, जिसमें आदिवासी नारी अपने आत्मसम्मान की रक्षा करती हैं।

कविता के अंतिम हिस्से में 'मुझे वापस लौटना है' बार-बार आता है। यह वापसी केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और सांस्कृतिक है। कवयित्री अपने गाँव, अपनी माँ, और अपने समुदाय में लौटना चाहती हैं, जहाँ अभी भी उम्मीद की लौ जल रही है। वह कहती हैं कि उसे लौटकर अपने लोगों के लिए लड़ना है, भूख, बीमारी, शोषण और अत्याचार के खिलाफ। यह 'वापसी' प्रतीक है, आत्मसम्मान, प्रतिरोध और एकजुटता का। यह उस आदिवासी नारी की आवाज़ है जो केवल पीड़िता नहीं, बल्कि संघर्ष की प्रतीक है।

- कविता का अंत आदिवासी समाज की आशा, संघर्ष और आत्मगौरव की पुकार को दर्शाता है।

निर्मला पुतुल की यह कविता आदिवासी नारी की अस्मिता, स्वाभिमान और संघर्ष का घोषणापत्र है। इसमें मानव तस्करी, बलात्कार, घरेलू दासता, मजबूर विवाह और सामाजिक बहिष्कार जैसे मुद्दों की पीड़ा गूँजती है। आदिवासी स्त्रियाँ आर्थिक असमानता, जातीय भेदभाव और लैंगिक हिंसा की शिकार हैं, फिर भी वे हार नहीं मानतीं। कवयित्री उनकी सामूहिक चेतना की प्रतिनिधि बनकर बोलती हैं। वह बताती हैं कि आदिवासी समस्या केवल गरीबी या अशिक्षा की नहीं, बल्कि एक गहरी सामाजिक असमानता की देन है। आदिवासी नारी का यह संघर्ष न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामूहिक स्तर पर भी होता है। उन्हें लगातार सामाजिक भेदभाव, रोजगार में शोषण, घरेलू सेवाओं में मजबूर श्रम और यौन हिंसा का सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य, पोषण और व्यक्तिगत सुरक्षा की कमी उनके जीवन को और कठिन बनाती है। इसके अलावा, समाज में उन्हें सामाजिक बहिष्कार और अपमान का सामना करना पड़ता है, जिससे उनका आत्मसम्मान और स्वतंत्रता और अधिक प्रभावित होती है। इस प्रकार कविता में दिखाया गया शोषण, हिंसा और असमानता का व्यापक परिप्रेक्ष्य वास्तविक सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप है।

- कविता आदिवासी नारी के सामूहिक संघर्ष और सामाजिक न्याय की माँग को प्रतिबिंबित करती है।

निर्मला पुतुल का यह सृजन 'आदिवासी स्त्री की आवाज़' के रूप में भारतीय कविता में एक अनठा स्थान रखता है। यह कविता उस आदिवासी जीवन की सच्ची कहानी है जो जंगलों, पहाड़ों और मिट्टी से जुड़ा है, पर जिसे सभ्य समाज ने हाशिए पर धकेल दिया है। कवयित्री की आवाज़ उन लाखों स्त्रियों की आवाज़ है जो चुप रहकर सब कुछ सहती रही हैं। वह कहती हैं, अब मौन नहीं, प्रतिरोध ही अस्तित्व का प्रमाण है। कविता अंततः प्रतिरोध, जागृति और आदिवासी नारी के आत्मसम्मान का प्रतीक बनकर उभरती है।

3.2.2 वाहरू सोनवणे- स्टेज

वाहरू सोनवणे की कविता 'स्टेज' पर आदिवासियों को सामाजिक और सांस्कृतिक तौर पर किए जाने वाले हाशियेकरण पर सवाल उठाती है, और उनके अस्तित्व तथा पहचान के संघर्ष को सामने लाती है। यह आदिवासी समुदाय के अनुभवों, पीड़ाओं और

उनकी उपेक्षित आवाज़ को प्रमुखता से उजागर करती है। साथ ही, कविता समाज से संवेदनशीलता, समानता और न्यायपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने की अपेक्षा भी करती है।

3.2.2.1 वाहरू सोनवणे

वाहरू सोनवणे आदिवासी साहित्य के प्रमुख लेखक और संघर्षशील नेता हैं, जिनकी कविताएँ आदिवासी समाज की पीड़ा, संघर्ष और सांस्कृतिक अस्तित्व को उजागर करती हैं। उनका पहला कविता संग्रह 'गोंधळ' (1987) आदिवासी जीवन की कठिनाइयों और उनके संघर्षों को सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करता है, जिसमें आदिवासी समाज की जटिलताओं और उनकी वास्तविकता को स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। इसके बाद, उनका दूसरा कविता संग्रह 'रोमायली' (2014) आदिवासी समाज की संस्कृति, परंपरा और समाजिक चेतना का गहरा और जीवंत चित्रण करता है। सोनवणे की कविताओं ने आदिवासी समाज की आत्मनिर्भरता, उनके संघर्ष, और उनके सांस्कृतिक अस्तित्व के लिए जागरूकता पैदा की है। उनका साहित्य केवल काव्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक आंदोलन की तरह काम करता है, जो आदिवासी समुदाय के वास्तविक संघर्षों और अधिकारों को सामने लाता है।

- उनका पहला कविता संग्रह 'गोंधळ'

वाहरु सोनवणे-स्टेज

स्टेज
हम मँच पर गए ही नहीं,
और हमें
बुलाया भी नहीं गया,

उँगली के इशारे से
हमारी जगह
हमें दिखाई गई
हम वहीं बैठे रहे
हमें मिली शाबासी!
और वे
स्टेज पर खड़े हो

हमारा दुःख-दर्द,
हम पर हो रहे अत्याचार
और हमारे शोषण
को बताते चिल्लाते रहे,

ऐ आदिवासी भाईयो!
अब दुःख-दर्द मत सहो।

हमारा दुख-दर्द
हमारा ही रहा,
कभी उन सत्ताधारियों का
नहीं बना

हमारी शँकाएँ,
हमने बड़बड़ाईं
कान लगाकर सुनते रहे,
हमारा दर्द हमें ही

सुनाते-सुनाते चीख़ रहे हैं
पर कहीं
उनके भाषण में सुधार की कोई आशा नहीं

और निःश्वास छोड़ा तथा हमारे कान
पकड़ कर धमकाया
माफ़ी मांगो नहीं तो...?

तुम जंगल में
क्यों बसे हो ?
तुम्हें बेदखल किया जाएगा।

तुमने गुनाह किया है!
उसकी
कड़ी सज़ा मिलेगी,

यह बात हमसे
पालतू तीतर ने कही
जो सत्ता के पिंजरे में क़ैद है!

SGOU

3.2.2.2 सारांश

वाहरू सोनावणे की कविता 'स्टेज' समकालीन दलित-आदिवासी साहित्य में एक ऐसा हस्तक्षेप है जो न केवल सामाजिक संरचनाओं को उजागर करता है, बल्कि सांस्कृतिक सत्ता की विसंगतियों को भी प्रश्नांकित करता है। यह कविता उस अंतर्निहित चुप्पी को तोड़ती है जिसे समाज ने सुनियोजित रूप से थोपा है – एक ऐसी चुप्पी, जो बोलने के अधिकार से वंचित लोगों की पहचान बन चुकी है। 'स्टेज' शब्द कविता में केवल एक भौतिक मंच को नहीं दर्शाता, बल्कि यह समग्र सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक मंचों का प्रतीक है, जहाँ से दलित, आदिवासी और वंचित समुदायों को सदियों से दूर रखा गया है।

- सांस्कृतिक सत्ता की विसंगतियों को भी प्रश्नांकित करता है।

कवि जब कहता है, 'हमें कभी स्टेज पर बुलाया ही नहीं, हम कभी स्टेज पर गए ही नहीं,' तो वह केवल किसी निजी अनुभव की बात नहीं करता, बल्कि यह पंक्ति उस ऐतिहासिक उपेक्षा की ओर संकेत करती है जहाँ बोलने का हक केवल विशेष वर्गों को ही मिला। 'स्टेज' के जरिए कवि उस सामाजिक संरचना की आलोचना करता है जो जाति, वर्ग और सांस्कृतिक प्रभुत्व के आधार पर तय करती है कि कौन बोलेगा और कौन केवल सुनेगा या पूरी तरह चुप रहेगा। यहाँ पर 'हम' का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामूहिक चेतना का प्रतीक है – एक पूरे समुदाय की अनसुनी आवाज, जो मंच के किनारे खड़ी होकर खुद से सवाल करती है कि 'हम कब बोलेंगे?'

- ऐतिहासिक उपेक्षा की ओर संकेत

इस कविता की सबसे बड़ी ताकत उसकी भाषा की सहजता और उसकी भावना की तीव्रता है। वाहरू सोनावणे की भाषा अत्यंत स्वाभाविक है, बिना किसी अलंकारिक सजावट के। यही सादगी कविता को अधिक प्रभावशाली बनाती है। कवि किसी बौद्धिक तर्क या दार्शनिक सिद्धांत से अपनी बात को नहीं जताता, बल्कि वह जीये हुए यथार्थ को इस प्रकार उकेरता है कि पाठक को कविता केवल पंक्तियों में नहीं, अपने अनुभवों में भी सुनाई देती है। यह कविता शहरी बुद्धिजीवियों की तरह मंच के ऊपर से नहीं, बल्कि ज़मीन की धूल से उठकर बोली गई है। उसमें पसीने की गंध है, श्रम की पीड़ा है, और पीढ़ियों से जमा हुआ वह आक्रोश भी है जिसे सिर्फ सुना नहीं गया, बल्कि बार-बार दबा दिया गया।

- जीये हुए यथार्थ को उकेरता है।

SGOU

■ परिवर्तन की आकांक्षा

'स्टेज' कविता में केवल उपेक्षा की व्यथा नहीं है, बल्कि उसमें एक सामाजिक चेतना है, प्रतिरोध की भावना है, और परिवर्तन की आकांक्षा भी है। कविता यह नहीं कहती कि हमें भी बुलाओ, बल्कि वह कहती है कि हमें खुद अपना मंच बनाना है। यह केवल याचना नहीं, बल्कि अधिकार की माँग है। यह यथास्थिति से टूटने का साहस है। यही वह बिंदु है जहाँ कविता एक व्यक्तिगत या समुदायगत अनुभव से ऊपर उठकर व्यापक सामाजिक संघर्ष का प्रतीक बन जाती है। वाहरू सोनावणे की कविता इस बात को बखूबी दिखाती है कि साहित्य केवल सौंदर्य का साधन नहीं, बल्कि संघर्ष का औजार भी हो सकता है।

■ 'स्टेज' दरअसल उस सत्ता के खिलाफ एक प्रतिरोध

'स्टेज' दरअसल उस सत्ता के खिलाफ एक प्रतिरोध है जो वंचित समुदायों को सिर्फ दर्शक बनाए रखती है, या फिर उन्हीं के बारे में बातें करती है, लेकिन उन्हें खुद अपनी बात कहने का मंच नहीं देती। आज भी हमारे समाज में, साहित्यिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक मंचों पर वही चेहरे हैं, जो सदियों से केंद्र में रहे हैं। हाशिए पर खड़े लोगों की बात तो होती है, लेकिन वे खुद कहाँ हैं? क्या उनकी उपस्थिति केवल आंकड़ों और सहानुभूति तक सीमित रहनी चाहिए? यह कविता इन्हीं सवालों को सबसे सीधे और प्रभावी ढंग से उठाती है।

■ सभी मंचों पर प्रश्नचिह्न

वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में यह कविता और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। जब सामाजिक न्याय, समावेशिता और बहुजन प्रतिनिधित्व की बात होती है, तब 'स्टेज' जैसे प्रतीक और अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यह कविता उन सभी मंचों पर प्रश्नचिह्न लगाती है, जहाँ बहसें तो लोकतंत्र की होती हैं, लेकिन भागीदारी केवल सत्ताधारियों की होती है। कवि कहता है कि अब और चुप रहना संभव नहीं है, अब अपनी कहानी हमें खुद ही कहनी होगी। और यदि मंच न मिले, तो उसे तैयार करना भी हमारी ही जिम्मेदारी है।

■ यह कविता दलित-आदिवासी साहित्य की उस परंपरा का हिस्सा है

यह कविता किसी प्रकार का कुरुण चित्रण मात्र नहीं है, बल्कि उसमें एक स्पष्ट राजनीतिक चेतना है। यह सिर्फ व्यवस्था की आलोचना नहीं करती, बल्कि यह खुद को व्यवस्था बदलने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार मानती है। यह कविता दलित-आदिवासी साहित्य की उस परंपरा का हिस्सा है जो सिर्फ शोषण की बात नहीं करती, बल्कि मुक्ति की संभावनाओं को भी सामने लाती है। वाहरू सोनावणे की दृष्टि केवल आलोचना की नहीं, बल्कि निर्माण की है, नए मंच, नई भाषा, नए विमर्श की, जो न केवल बोलने का अधिकार मांगते हैं, बल्कि नए समाज की परिकल्पना भी करते हैं।

■ यह कविता जातिवाद के खिलाफ है

'स्टेज' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह एक सामूहिक अस्मिता की कविता है। वह किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि एक पूरे वर्ग, एक पूरी जाति, एक पूरे समाज की आवाज है। यह कविता जातिवाद के खिलाफ है, लेकिन यह सिर्फ जाति की बात नहीं करती, यह पहचान, मान्यता और समता की भी बात करती है। और यह सब बेहद सहज, लेकिन गहराई से करती है। वह बिना चिल्लाए, बहुत कुछ कह जाती है। यही इस कविता की शक्ति है।

- साहित्य जो सत्ता को चुनौती देता है

वाहरू सोनावणे की 'स्टेज' उस साहित्य का प्रतिनिधित्व करती है जिसे 'प्रतिरोध का साहित्य' कहा जा सकता है, एक ऐसा साहित्य जो सत्ता को चुनौती देता है, लेकिन उसमें विनम्रता और गरिमा के साथ अपनी जगह बनाता है। यह कविता हमें यह समझने पर मजबूर करती है कि साहित्य केवल उनके लिए नहीं जो मंच पर पहले से मौजूद हैं, बल्कि उनके लिए भी है, जिनकी आवाज़ें अब तक दबा दी गई थीं। अब समय है कि वे आवाजें न केवल सुनी जाएँ, बल्कि मंच की दिशा और दशा को भी बदलें।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

निर्मला पुतुल और वाहरू सोनावणे की कविताएँ आदिवासी समाज की पीड़ा, शोषण, विस्थापन और प्रतिरोध की सशक्त अभिव्यक्ति हैं, जो विशेषकर स्त्रियों और कमजोर वर्गों की बहुआयामी समस्याओं, दैहिक, आर्थिक, सामाजिक और यौन शोषण, को उजागर करती हैं। निर्मला पुतुल आदिवासी स्त्रियों के संघर्ष, आत्मगौरव और सांस्कृतिक पहचान की पुकार करती हैं, जबकि वाहरू सोनावणे की कविता 'स्टेज' सामूहिक चेतना और वंचित समुदायों की आवाज़ को मंच पर उठाने का प्रतीक है। उनके सृजन में यथार्थपरक और सहज भाषा पाठक को सीधे आदिवासी जीवन की कठिनाइयों, हिंसा, मजबूर श्रम, घरेलू दासता, जबरन विवाह और सामाजिक बहिष्कार से जोड़ती है। ये कविताएँ केवल व्यक्तिगत अनुभव नहीं, बल्कि आदिवासी और दलित समुदाय की सामूहिक चेतना, न्याय और सामाजिक परिवर्तन की माँग का प्रतीक हैं। पाठक उनके माध्यम से न केवल पीड़ा और अन्याय को महसूस करता है, बल्कि प्रतिरोध, जागृति और सांस्कृतिक अस्तित्व की आवश्यकता को भी समझता है। इस प्रकार, पुतुल और सोनावणे का साहित्य आदिवासी समाज की अस्मिता, संघर्ष, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पहचान की रक्षा करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. निर्मला पुतुल और वाहरू सोनावणे की कविताओं में आदिवासी समाज की समस्याएँ कैसे दिखाई गई हैं, समझाएँ।
2. आदिवासी स्त्रियों के संघर्ष और शोषण को कविताओं में कैसे दर्शाया गया है, बताइए।
3. कविताओं में सामाजिक और आर्थिक असमानता के प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।
4. कविताओं में आदिवासी संस्कृति और आत्मगौरव का महत्व समझाइए।
5. कविताओं के माध्यम से समाज में चेतना और न्याय की बात कैसे की गई है, बताइए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी और विकास का भद्लोक - अश्विवनी कुमार पंकज
2. आदिवासी चिंतन की भूमिका - हरि राम मीणा
3. वाचिकता - वंदना टेटे
4. आदिवासी समाज और शिक्षा - रामशरण जोशी
5. उपनिवेशवाद और संघर्ष - हैरोल्ड एस तोपनो
6. कलम को तीर होने दो (झारखंड के आदिवासी हिन्दी कवि) - रमणिका गुप्ता

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

महादेव टोप्पो और जसिंता केरकट्टा की कविता में आदिवासी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- महादेव टोप्पो के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है।
- सबसे बड़ा खतरा कविता में अभिव्यक्त वजूद के स्वर से परिचित होते हैं।
- जसिंता केरकट्टा के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है।
- राष्ट्रगान बज रहा है कविता में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता से परिचित होते हैं।

Background / पृष्ठभूमि

आदिवासी कविता केवल सौंदर्य या भावुकता का माध्यम नहीं, बल्कि यह आदिवासी समाज की संवेदना, संघर्ष और सांस्कृतिक अस्मिता की सशक्त अभिव्यक्ति है। इसे सही रूप में समझने के लिए पाठकों के पास आदिवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान, जीवनशैली, परंपराएँ, धार्मिक विश्वास और सामाजिक ढांचे का ज्ञान होना आवश्यक है। आदिवासी समाज प्रकृति के साथ सहजीवन में विश्वास करता है, इसलिए जब उनके जल, जंगल और ज़मीन छीने जाते हैं, तो इसमें केवल उनकी आर्थिक क्षति नहीं होती, बल्कि उनकी पूरी सभ्यता, संस्कृति और जीवन-दर्शन पर आघात होता है। यही टूटन और प्रतिरोध आदिवासी कविता की आत्मा बनकर उभरता है।

महादेव टोप्पो की कविता 'सबसे बड़ा खतरा' और जसिन्ता केरकेट्टा की कविता 'राष्ट्रगान बज रहा है' इसी प्रतिरोधी परंपरा की गूंज हैं। इन कविताओं में आदिवासी समाज के शोषण, उत्पीड़न और सांस्कृतिक ध्वंस के विरुद्ध गहरी चेतावनी निहित है। टोप्पो अपनी कविता में यह दिखाते हैं कि किस तरह साम्राज्यवादी ताकतें और पूंजीवादी व्यवस्थाएँ आदिवासियों को उनके ही जल-जंगल-ज़मीन से बेदखल करने के प्रयास में लगी हैं। यह केवल भूमि का प्रश्न नहीं, बल्कि अस्तित्व का प्रश्न है, मनुष्य और प्रकृति के रिश्ते को तोड़ने की एक संगठित साजिश। वहीं, जसिन्ता केरकेट्टा की कविता 'राष्ट्रगान बज रहा है' आदिवासी अस्मिता पर हो रहे सांस्कृतिक हमलों, राज्य द्वारा उन पर लगाए गए देशद्रोह के आरोपों और उनकी पहचान के दमन के खिलाफ प्रतिरोध का स्वर बनकर उभरती है।

इन कविताओं को समझने के लिए साहित्यिक दृष्टि के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक चेतना का होना आवश्यक है। आदिवासी कवि केवल व्यक्तिगत अनुभव नहीं बाँटते, बल्कि अपने पूरे समुदाय की पीड़ा, इतिहास और संघर्ष को स्वर देते हैं। भारतीय आदिवासी आंदोलनों, जैसे जल-जंगल-जमीन की लड़ाइयाँ, भूमि अधिकारों की मांग, और सांस्कृतिक स्वायत्तता की आवाजें, इन कविताओं में प्रतीकात्मक और संवेदनात्मक रूप में जीवित हैं।

महादेव टोप्पो और जसिन्ता केरकेट्टा की रचनाएँ इस सामूहिक प्रतिरोध की साहित्यिक अभिव्यक्ति हैं।

इन कविताओं का केंद्र बिंदु केवल संघर्ष नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और अस्मिता की रक्षा भी है। ये कविताएँ बताती हैं कि बाहरी ताकतों का दबाव किस तरह आदिवासी समाज पर बढ़ता जा रहा है, और उन्हें अपनी जड़ों, संस्कृति और पहचान को बचाने के लिए लगातार प्रतिरोध करना पड़ रहा है। यहाँ संघर्ष केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी जारी है। यदि यह समाज अपनी आवाज़ नहीं उठाएगा, तो उसकी संस्कृति और अस्तित्व विलुप्त होने का खतरा होगा।

अंततः, इन कविताओं को केवल भावनात्मक या कलात्मक रचनाओं के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दस्तावेज़ और राजनीतिक प्रतिरोध के रूप में पढ़ना चाहिए। महादेव टोप्पो और जसिन्ता केरकेट्टा की कविताएँ यह सिखाती हैं कि आदिवासी कविता कोई निष्क्रिय कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि अपने अधिकारों और अस्तित्व के लिए लड़ा जा रहा एक जीवंत आंदोलन है। ये कविताएँ आदिवासी समाज के इतिहास, चेतना और आत्मसम्मान की रक्षा का घोष बनकर हमारे सामने आती हैं, और हमें यह स्मरण कराती हैं कि कविता कभी-कभी सबसे प्रभावी प्रतिरोध का स्वर भी बन सकती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदिवासी समाज, सांस्कृतिक पहचान, जीवनशैली, परंपराएँ, सामाजिक संरचना, पीड़ा, संघर्ष, साम्राज्यवाद, शोषण, प्रतिरोध

Discussion / चर्चा

- आदिवासी समाज की संघर्षशील यात्रा और उनके अस्तित्व की रक्षा की आवश्यकता को उजागर करती है।

महादेव टोप्पो की कविता 'सबसे बड़ा खतरा' और जसिन्ता केरकेट्टा की कविता 'राष्ट्रगान बज रहा है' आदिवासी समाज की संघर्षशील यात्रा और उनके अस्तित्व की रक्षा की आवश्यकता को उजागर करती हैं। दोनों कविताएँ समाज में आदिवासी समुदाय को हो रहे शोषण, उत्पीड़न और सांस्कृतिक ध्वंस के खिलाफ चेतावनी देती हैं। महादेव टोप्पो का काम यह दर्शाता है कि कैसे साम्राज्यवादी ताकतें आदिवासियों के जल, जंगल और ज़मीन से उन्हें बेदखल करने के लिए पूरी ताकत लगा रही हैं। वहीं, जसिन्ता केरकेट्टा की कविता आदिवासियों की सांस्कृतिक अस्मिता पर हो रहे हमलों और उन पर लगाए जा रहे देशद्रोही आरोपों के खिलाफ प्रतिरोध का स्वर उठाती है। इन कविताओं में केवल संघर्ष की ही नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान की भी गहरी गूंज है। यह हमें यह समझने का मौका देती है कि किस तरह बाहरी ताकतों का आदिवासी समाज पर दबाव बढ़ता जा रहा है, और उन्हें अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए प्रतिरोध करना होगा। इन कविताओं में आदिवासी समाज की आंतरिक शक्ति और उसकी जड़ों से जुड़ी हुई गहरी भावनाएँ व्यक्त की गई हैं। यह संघर्ष केवल

शारीरिक ही नहीं, मानसिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी हो रहा है। अगर आदिवासी समाज अपने अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठाता, तो उसे अपनी पहचान और संस्कृति खोने का खतरा होगा। कविता एक तरह से इन शोषणकारी ताकतों के खिलाफ एक आह्वान बनकर उभरती है, और आदिवासी समाज को उनकी अस्मिता की रक्षा के लिए प्रेरित करती है। अंततः यह काव्य रूपांतरण और शोषण की प्रक्रिया के खिलाफ आदिवासी समाज के संघर्ष की एक गहरी दस्तावेजी अभिव्यक्ति है।

3.3.1 महादेव टोप्पो-सबसे बड़ा खतरा

महादेव टोप्पो की कविता 'सबसे बड़ा खतरा' आदिवासी अस्तित्व पर मंडराते संकट को अत्यंत मार्मिकता और तीव्र संवेदना के साथ उजागर करती है। यह कविता उन सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों को सामने लाती है, जो आदिवासी पहचान, संस्कृति और जीवन-पद्धति को गहराई से प्रभावित करती हैं।

3.3.1.1 महादेव टोप्पो

महादेव टोप्पो सिर्फ एक लेखक या कवि नहीं हैं; वे झारखंड की आदिवासी पहचान और आधुनिक अभिव्यक्ति के बीच एक जीवंत पुल हैं। 1954 में राँची के हुलसी गाँव में जन्मे, वे अपनी रचनाओं में कुँड़ुख आदिवासी संस्कृति की गहरी, गूंजती हुई लय को ढोते हैं।

पुणे के एफ.टी.टी.आई. से सिनेमा का ज्ञान हासिल करने वाले टोप्पो एक ऐसे संवादी हैं जिनकी कविताएँ और लेख धर्मयुग से लेकर जनसत्ता तक, भारत के प्रमुख प्रकाशनों में प्रकाशित होकर मुख्यधारा के विमर्श को चुनौती देते रहे हैं। उनका कविता संग्रह 'जंगल पहाड़ के पाठ' मात्र एक किताब नहीं, बल्कि एक घोषणा पत्र है, जिसका संताली, मराठी और अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

पन्नों से परे, टोप्पो एक कलाकार भी हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फ़िल्म 'एड़पा काना (गोइंग होम)' में अभिनय करके अपनी संस्कृति को बड़े पर्दे पर उतारा। राँची में रहते हुए, वे आज भी अपनी मातृभाषा कुँड़ुख के साहित्य, कला और विकास के लिए समर्पित हैं, जिससे वे अपने पुरखों की विरासत के एक अटूट संरक्षक और एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक राजदूत बन गए हैं।

सबसे बड़ा खतरा

अपने ही घरों में
अपने ही
जंगलों पहाड़ो के साम्राज्य में
शेर से कभी हम
अब मेमने हुए जा रहे हैं।'
शेर से मेमने होने की प्रक्रिया में
सिर्फ अपने खेत खलिहान मकान
ही नहीं खोचे हैं हमने
खोची हैं सैकडो वर्षो से अर्जित
का पुरखों के गाढे पसीने की कमाई
अपनी भावा सस्कृति और इतिहास
बेशक अब शेर की भाषा भी
बोलना भूल रहे है हम
सबसे बडी त्रासदी तो यह
मेमने की भाषा भी सही ढंग से
उच्चरित कर नहीं रहे हम
इस प्रक्रिया में
कभी सियार कभी लोमड़ी कभी बंदर
की भाषा बोलने लगे हैं हम
इस प्रक्रिया में
कभी सियार कभी लोमड़ी कभी बंदरा
की भाषा बोलने लगे हैं हम
और मित्र! इस जंगल केलिए
यही है सबसे बड़ा खतरा
कि हम अपनी पहचान खो रहे हैं
खो रहे हैं कि हम अपने स्वाभाविक स्वर
न मिमिया रहे हैं न गरज रहे हैं

इसी कारण ऊची अट्टलिकाओं में
पखों के नीचे 'वे'
हमारी असमर्थता पर मुस्करा रहे हैं
इसीलिए मित्र। आओ हम पहले
अपने कंठों में गरजती हुई
आवाज़ भरें

3.3.1.2 सारांश

महादेव टोप्पो की कविता 'सबसे बड़ा खतरा' समकालीन आदिवासी जीवन के गहरे संकट की मार्मिक अभिव्यक्ति है। यह रचना न केवल आदिवासी समाज के अस्तित्व पर मंडराते ख़तरों को रेखांकित करती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि किस

- प्राकृतिक संसाधनों से बेदखल किए जा रहे हैं।

प्रकार साम्राज्यवादी शक्तियाँ सुनियोजित ढंग से उनकी भाषाओं, सांस्कृतिक परंपराओं, विचारधाराओं और जीवन-शैली को विस्थापित कर रही हैं। कविता में यह पीड़ा स्पष्ट रूप से उभरती है कि वे लोग, जो सदियों से जंगलों, नदियों और पहाड़ों के साथ गहरे तालमेल में जीते आए हैं, आज उन्हीं प्राकृतिक संसाधनों से बेदखल किए जा रहे हैं। उनकी पहचान, उनका आत्मविश्वास, उनकी सांस्कृतिक जड़ें, सब कुछ धीरे-धीरे छीना जा रहा है। टोप्पो की कविता इस रूपांतरण का एक संवेदनशील दस्तावेज़ बन जाती है, जहाँ यह प्रश्न उठता है कि जो आदिवासी कभी अपनी संस्कृति के रक्षक थे, वे आज अपने ही भूभाग में पराए क्यों होते जा रहे हैं। साम्राज्यवादी ताकतों के समक्ष उनकी असहायता केवल भौतिक नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी एक त्रासदी बनकर उभरती है।

अपने ही घरों में
अपने ही
जंगलों पहाड़ो के साम्राज्य में
शेर से कभी हम
अब मेमने हुए जा रहे हैं।

- मातृभाषा, सांस्कृतिक पहचान और जीवन मूल्य सब पर संकट मंडरा रहा है।

कवि यह स्पष्ट करना चाहता है कि लाभ के लोभी शोषकों के सामने आदिवासी अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। जिन संसाधनों को उन्होंने वर्षों की मेहनत से अर्जित और संरक्षित किया था, वे अब नष्ट हो रहे हैं। उनकी मातृभाषा, सांस्कृतिक पहचान और जीवन मूल्य सब पर संकट मंडरा रहा है। उनकी पीढ़ियों की तपस्या और परंपराओं को मिटाने की कोशिशें हो रही हैं। यह कविता उन खतरों की ओर संकेत करती है जो उनके संपूर्ण अस्तित्व को निगलने की ओर बढ़ रहे हैं।

- भाषा किसी व्यक्ति या समुदाय की पहचान होती है।

आज आदिवासी समाज में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया तेजी से चल रही है, जिसके कारण वे स्वयं अपने अस्तित्व को खोते जा रहे हैं। क्या अपनाएँ और क्या छोड़ें, इस असमंजस की स्थिति में वे अपनी मौलिक पहचान, परंपराएँ और सांस्कृतिक धरोहर को अनजाने में ही नष्ट कर रहे हैं। भाषा किसी व्यक्ति या समुदाय की पहचान होती है। यदि कोई अपनी भाषा खो देता है, तो वह अपने अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा खो बैठता है।

कवि इस कविता के माध्यम से बाहरी प्रभावों के कारण आदिवासी समाज में उत्पन्न असमंजस, द्वंद्व और सांस्कृतिक संकट को गहराई से अभिव्यक्त करते हैं।

- आदिवासी समाज में जो धर्मांतरण और सुसंस्कृतिकरण की प्रक्रियाएँ चल रही हैं

कवि यह दर्शाना चाहते हैं कि गैर-आदिवासी प्रभावों के कारण आदिवासी समाज में जो धर्मांतरण और सुसंस्कृतिकरण की प्रक्रियाएँ चल रही हैं, वे उनके अस्तित्व के लिए एक गहरा खतरा बन चुकी हैं। कवि के अनुसार, जब आदिवासी समाज बाहरी ताकतों की 'हाँ में हाँ' मिलाने लगता है, तो वह अनजाने में अपनी मौलिकता और पहचान को खो बैठता है। इस असमंजस और सांस्कृतिक भ्रम की स्थिति का फायदा सत्ता और कॉरपोरेट वर्ग उठा रहे हैं, वे आदिवासी समाज को उनके ही संसाधनों और अधिकारों

से वंचित कर रहे हैं। इसलिए कवि का यह स्पष्ट संदेश है कि इन खतरों के विरुद्ध प्रतिरोध करना अत्यंत आवश्यक है। केवल प्रतिरोध के माध्यम से ही आदिवासी समाज अपनी पहचान, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा कर सकता है।

- संपूर्ण अस्तित्व एक गहरे संकट में

इस कविता में कवि एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठाते हैं, कि आज के समाज में आदिवासियों की वास्तविक अहमियत क्या है? वे न तो पूरी तरह शहरी बन पा रहे हैं, और न ही अपने पारंपरिक गांवों में सुरक्षित रह पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में उनका संपूर्ण अस्तित्व एक गहरे संकट में पड़ा हुआ है। फिर भी, कवि आदिवासी समाज की अंतरात्मा में निहित साहस, चेतना और आत्मबल को पहचानते हैं। वे उस भीतर सोते हुए 'वीर्य', यानी शक्ति और प्रतिरोध की क्षमता, को जगाकर इस वर्चस्वशाली व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान करते हैं। कविता न केवल शोक या चिंता का स्वर है, बल्कि एक प्रेरणादायक पुकार भी है, अपनी अस्मिता, अधिकार और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए संघर्ष करने की।

महादेव टोप्पो की कविता 'सबसे बड़ा खतरा' केवल एक रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि आदिवासी समाज के सांस्कृतिक और अस्तित्वगत संकट की चेतावनी है। यह कविता दर्शाती है कि बाहरी प्रभावों, सत्ता और कॉरपोरेट हितों के बीच आदिवासी समुदाय अपनी पहचान, भाषा और जीवन-दर्शन को खोने की कगार पर है। किंतु यह रचना निराशा में डूबने की बजाय, उनके भीतर छिपे प्रतिरोध के बीज को पहचानने और उसे जागृत करने का आह्वान भी करती है। इस प्रकार यह कविता न केवल संकट का चित्रण करती है, बल्कि संघर्ष और चेतना का मार्ग भी प्रस्तुत करती है।

3.3.2 जसिंता केरकट्टा-राष्ट्रगान बज रहा है

जसिंता केरकेट्टा की कविता 'राष्ट्रगान' वर्चस्ववादी रूझानों का पर्दाफाश करते हुए आदिवासी मुक्ति और अस्मिता का सशक्त राष्ट्रगान गाती है। यह कविता सत्ता के बनाए हुए प्रतीकों को चुनौती देकर उपेक्षित समुदायों की आवाज़ को केंद्र में लाती है।

3.3.2.1 जासिता केरकट्टा

जसिंता केरकेट्टा (जन्म 3 अगस्त 1983) झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले की उराँव जनजाति से संबंध रखने वाली एक सशक्त आदिवासी कवि, पत्रकार और कार्यकर्ता हैं। उन्होंने सेंट जेवियर्स कॉलेज, राँची से मास कम्युनिकेशन की डिग्री हासिल की और अपने कॅरियर की शुरुआत दैनिक जागरण जैसे प्रमुख समाचार पत्रों में रिपोट र के रूप में की। पत्रकारिता के माध्यम से, उन्होंने विशेष रूप से भारत में आदिवासियों के प्रणालीगत उत्पीड़न, विस्थापन, और लिंग आधारित हिंसा जैसे ज्वलंत मुद्दों को उजागर किया। उनका लेखन केवल रिपोर्टिंग तक सीमित नहीं रहा; वह आदिवासी गांवों में लड़कियों की शिक्षा के लिए भी सक्रिय रूप से काम करती हैं, जिससे साहित्य और ज़मीनी सक्रियता का एक दुर्लभ संगम प्रस्तुत होता है।

केरकेट्टा ने अपनी मातृभूमि के संघर्षों और अपनी पहचान को अपनी कविता में केंद्रीय विषय बनाया। उनके प्रमुख हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी कविता संग्रहों में 'अंगोर' और 'जड़ों की ज़मीन' शामिल हैं, जिनका जर्मन, फ्रेंच और इतालवी जैसी कई अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। उनके काम ने उन्हें राष्ट्रीय और वैश्विक मंचों पर पहचान दिलाई, जिसके तहत उन्हें फोर्ब्स इंडिया द्वारा भारत की शीर्ष 20 स्व-निर्मित महिलाओं में नामित किया गया। उनका साहित्य आदिवासियों की 'जंगल की आवाज़' को एक अकाट्य और मार्मिक अभिव्यक्ति देता है, जो दिखाता है कि सांस्कृतिक विरासत और प्रतिरोध की भावना कैसे अटूट बनी रहती है।

जसिंता केरकेट्टा अपनी रचनात्मक प्रतिभा के साथ-साथ अपने नैतिक साहस के लिए भी जानी जाती हैं। उन्होंने कई प्रतिष्ठित सम्मानों को अस्वीकार कर दिया, जिनमें इंडिया टुडे समूह द्वारा दिया जाने वाला साहित्यिक पुरस्कार और रूम टू रीड यंग ऑथर अवार्ड शामिल है। उन्होंने यह कदम देश में आदिवासियों के जीवन के प्रति सम्मान की कमी, मीडिया की उदासीनता, और पुरस्कार देने वाली संस्थाओं के विवादास्पद संबंधों के विरोध में उठाया। यह अस्वीकृति उनके काम की अंतर्निहित भावना को दर्शाती है: उनका साहित्य और जीवन दोनों ही उस सत्ता और व्यवस्था से समझौता न करने का प्रमाण हैं जो आदिवासियों को उनके मौलिक अधिकारों से वंचित करती है।

राष्ट्रगान बज रहा है

SGOU

मेरी सोच के भीतर
अचानक बज उठा है राष्ट्रगान

और मैं खड़ा हूँ
राष्ट्रद्रोही कहलाने के डर से

सावधान की मुद्रा में।
ठीक इसी समय दीमकों का झुंड

घुस आया है मेरे भीतर
मेरी देह को मिट्टी का टीला समझ

खोखला करता हुआ मुझे
और मैं चीख़ने में असमर्थ

खड़ा हूँ सावधान की मुद्रा में।
प्रतिरोध की हज़ारों आवाज़ें

कमर कस रही होती हैं
घरों से बाहर निकल आने को

कि ठीक उसी समय
बज उठता है राष्ट्रगान

घरों के भीतर।
जैसे कोई ख़ौफ़नाक आवाज़

हर आदमी के पीछे
गर्दन पर बंदूक़ की नोक टिकाए

गूँजी हो अभी-अभी
जो जहाँ खड़ा है रुक जाए वहीं

सावधान की मुद्रा में।
राष्ट्रगान बज रहा है

मैं खड़ा हूँ तनकर
और दीमकों का झुंड

मेरी देह के अंदर नाच रहा है
हर राष्ट्रद्रोह से मुक्त।

SGOU

3.3.2.2 सारांश

- वर्चस्ववादी ताकतों के दबाव एवं शोषण को अभिव्यक्ति

जसिन्ता केरकेट्टा की कविता राष्ट्रगान बज रहा है, आदिवासी जीवन संघर्ष को उजागर करनेकाली कविता है। इस कविता मुख्य रूप से आदिवासी अस्मिता पर वर्चस्ववादी ताकतों के दबाव एवं शोषण को अभिव्यक्त करती है। कवियत्री व्यक्त करती है अपनी सत्ता या राज को बनाए रखने केलिए किस प्रकार सत्ता अपना अधिका का दुरुपयोग कर रहा है। आदिवासी शोषण को अपने हितानुसार बदलने केलिए प्रयुक्त खुद को भी कविता व्यक्त करती है।

- सत्ता अपना अधिकार का प्रयोग करते हैं।

आज आदिवासियों को उनके जगह से हटाने तथा उनके अधिकार से उन्हें हाशिएकृत करने का आसान तरीके के रूप में सत्ता अपना अधिकार का प्रयोग करते हैं। जिसके तहत आदिवासी को माओ या नक्सल कहकर उन्हें बेवजह जेल डालते है। या उन्हें मार डालते हैं। इस पर कोई मुकदमा चल उडता है। कविता इस षड्यंत्र को पहचानकर आदिवासी को देशद्रोही ठहराने पर अपना प्रतिशेध व्यक्त करते हैं। क्योंकि कवि जानते हैं कि यह आदिवासीयों की शक्ति को पहचानने वाले ताकतों के तंत्र है।

- शोषण वर्ग को कवि दीमक से उपमा की है।

अपनी मिट्टी केलिए लडते आदिवासी में भरे देशप्रेम को इस षड्यंत्र से मिटा नहीं पाते। शोषण वर्ग को कवि दीमक से उपमा की है। क्योंकि दीमक का झुड कहीं भी लग जाती है। उस चीज़ और जगह सर्वनाश सुनिश्चित है। उसी प्रकार अधिकार एवं लोभी लोग दीमक की तरह उनकी जगह जमे हुए हैं। आदिवासी इस शोषण को पहचानकर भी निसहाय है, अपने अन्तर उठते अपनी मिट्टी को बनाने की सोच से जसिन्ता केरकेट्टा की कविता 'राष्ट्रगान बज रहा है' आदिवासी जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और उनकी अस्मिता पर मंडराते खतरों को अत्यंत मार्मिक रूप में प्रस्तुत करती है। यह कविता केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक चेतना से भी परिपूर्ण है। इसमें कवयित्री उस अन्यायपूर्ण व्यवस्था का पर्दाफाश करती हैं, जो आदिवासियों को उनके जल, जंगल और ज़मीन से बेदखल कर, उन्हें उनके ही देश में पराया बनाने की कोशिश कर रही है।

- प्राकृतिक संसाधनों से वंचित

कविता यह दर्शाती है कि किस प्रकार सत्ता और वर्चस्ववादी ताकतें अपने हितों की पूर्ति के लिए अधिकारों का दुरुपयोग कर रही हैं। वे न केवल आदिवासियों को उनके प्राकृतिक संसाधनों से वंचित कर रही हैं, बल्कि उनके अस्तित्व, पहचान और देशप्रेम पर भी सवाल उठा रही हैं। सत्ता संरचनाएँ आदिवासियों को आतंकवादी, माओवादी या नक्सली कहकर बदनाम करती हैं ताकि उनकी आवाज़ को दबाया जा सके। इस दमनचक्र में उन्हें बिना किसी ठोस कारण के जेल में डाल दिया जाता है या मुठभेड़ों में मार दिया जाता है। इन मामलों में न्याय का नामोनिशान नहीं होता, मुकदमे तक नहीं चलते, और अगर चलते भी हैं तो अन्याय की मिसाल बन जाते हैं।

कविता इस षड्यंत्र की तीव्र आलोचना करती है। कवयित्री स्पष्ट करती हैं कि यह रणनीति आदिवासी शक्ति और चेतना को कुचलने के लिए रची गई है। आदिवासियों

- अपने पूर्वजों की मिट्टी, अपने जंगल, नदियाँ और पहाड़ों को जीवन का आधार मानते हैं।

को 'देशद्रोही' करार देना एक ऐसा राजनीतिक औजार बन चुका है, जिससे शोषक वर्ग अपने कुकृत्यों पर पर्दा डालता है। हालाँकि, कवयित्री यह भी रेखांकित करती हैं कि इन सबके बावजूद आदिवासी अपने देश से गहरा प्रेम करते हैं। वे अपने पूर्वजों की मिट्टी, अपने जंगल, नदियाँ और पहाड़ों को जीवन का आधार मानते हैं। वे इनके लिए लड़ते हैं, इनकी रक्षा के लिए संघर्ष करते हैं। उनका यह संघर्ष किसी सत्ता के खिलाफ नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए है, यह देशभक्ति की सबसे मौलिक और सच्ची परिभाषा है।

- साजिशों को पहचानते हुए भी निसहाय

कविता में शोषक वर्ग की तुलना दीमक से की गई है, दीमक जो चुपचाप अंदर ही अंदर सब कुछ खोखला कर देती है। कवयित्री के अनुसार, इसी प्रकार लोभी और लालची ताकतें भी आदिवासियों की भूमि पर दीमक की तरह लग चुकी हैं। जहाँ यह शक्तियाँ टिक जाती हैं, वहाँ विनाश निश्चित हो जाता है। सबसे पीड़ादायक तथ्य यह है कि आदिवासी इन साजिशों को पहचानते हुए भी निसहाय हैं। उनके भीतर अपने अधिकारों को लेकर चेतना है, पर संसाधनों और समर्थन के अभाव में वे विरोध नहीं कर पाते। फिर भी, उनके भीतर अपने समाज, संस्कृति और मिट्टी को बचाने की गहरी इच्छा और संकल्प मौजूद है।

'राष्ट्रगान बज रहा है' केवल एक कविता नहीं, बल्कि एक प्रतिरोध की आवाज़ है, उस आवाज़ की जो जंगलों से आती है, पहाड़ों से टकराती है और सत्ता के गलियारों में गूंजती है। यह कविता हमें सोचने पर विवश करती है कि क्या वाकई राष्ट्रगान बजने का अर्थ सबके लिए समान है? क्या उन लोगों की आवाज़ें, जिनकी भूमि पर यह राष्ट्र खड़ा है, अब भी सुनी जाती हैं?

जसिन्ता केरकेट्टा की यह रचना आदिवासी जीवन, अधिकार और देशप्रेम की जटिल गाथा को अत्यंत सशक्त रूप में प्रस्तुत करती है, जो हमें न केवल सोचने पर मजबूर करती है, बल्कि हमें संवेदनशील और जागरूक भी बनाती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

महादेव टोप्पो की कविता 'सबसे बड़ा खतरा' और जसिन्ता केरकेट्टा की कविता 'राष्ट्रगान बज रहा है' आदिवासी समाज की संघर्षशील यात्रा और उनके अस्तित्व की रक्षा की आवश्यकता को उजागर करती हैं। दोनों कविताएँ समाज में आदिवासी समुदाय को हो रहे शोषण, उत्पीड़न और सांस्कृतिक ध्वंस के खिलाफ चेतावनी देती हैं। महादेव टोप्पो का काम यह दर्शाता है कि कैसे साम्राज्यवादी ताकतें आदिवासियों के जल, जंगल और ज़मीन से उन्हें बेदखल करने के लिए पूरी ताकत लगा रही हैं। वहीं, जसिन्ता केरकेट्टा की कविता आदिवासियों की सांस्कृतिक अस्मिता पर हो रहे हमलों और उन पर लगाए जा रहे देशद्रोही आरोपों के खिलाफ प्रतिरोध का स्वर उठाती है। इन कविताओं में केवल संघर्ष की ही नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान की भी गहरी गूंज है। यह हमें

यह समझने का मौका देती है कि किस तरह बाहरी ताकतों का आदिवासी समाज पर दबाव बढ़ता जा रहा है, और उन्हें अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए प्रतिरोध करना होगा। इन कविताओं में आदिवासी समाज की आंतरिक शक्ति और उसकी जड़ों से जुड़ी हुई गहरी भावनाएँ व्यक्त की गई हैं। यह संघर्ष केवल शारीरिक ही नहीं, मानसिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी हो रहा है। अगर आदिवासी समाज अपने अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठाता, तो उसे अपनी पहचान और संस्कृति खोने का खतरा होगा। कविता एक तरह से इन शोषणकारी ताकतों के खिलाफ एक आह्वान बनकर उभरती है, और आदिवासी समाज को उनकी अस्मिता की रक्षा के लिए प्रेरित करती है। अंततः यह काव्य रूपांतरण और शोषण की प्रक्रिया के खिलाफ आदिवासी समाज के संघर्ष की एक गहरी दस्तावेजी अभिव्यक्ति है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. महादेव टोप्पो की कविता 'सबसे बड़ा खतरा' में अभिव्यक्त आदिवासी संकट पर चर्चा कीजिए।
2. जसिन्ता केरकेट्टा की कविता 'राष्ट्रगान बज रहा है' में घोषित प्रतिरोध पर विचार कीजिए
3. 'सबसे बड़ा खतरा' और 'राष्ट्रगान बज रहा है' कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।
4. जसिन्ता केरकेट्टा की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासियत पर आलेख तैयार कीजिए
5. महादेव टोप्पो की कविता में प्रस्तुत आदिवासी जीवन पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी और विकास का भद्लोक - अश्विवनी कुमार पंकज
2. आदिवासी चिंतन की भूमिका - हरि राम मीणा
3. वाचिकता - वंदना टेटे
4. आदिवासी समाज और शिक्षा - रामशरण जोशी
5. उपनिवेशवाद और संघर्ष - हैरोल्ड एस तोपनो
6. कलम को तीर होने दो (झारखंड के आदिवासी हिन्दी कवि) - रमणिका गुप्ता

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

रामदयाल मुंडा और मदन कश्यप की कविता में आदिवासी स्वर

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मदन कश्यप की कविता से परिचय प्राप्त करता है।
- रामदयाल मुंडा से परिचय प्राप्त करता है।
- आदिवासी संघर्ष एवं प्रतिरोध से अवगत होता है।
- आदिवासी के हो रहे उपेक्षा भाव से भी परिचित हो जाता है।

Background / पृष्ठभूमि

रामदयाल मुंडा और मदन कश्यप की कविताओं के माध्यम से, समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी स्वर एक शक्तिशाली सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि पर उभरता है, जो आज़ादी के बाद की खोखली विकास नीतियों की विफलता और प्रशासनिक उपेक्षा का सीधा परिणाम है। यह लेखन तीखे व्यंग्य के साथ उस विडंबना को उजागर करता है जहाँ शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए स्कूल और अस्पताल तो बना दिए गए हैं, पर शिक्षक, डॉक्टर या ज़रूरी सेवाएँ नदारद हैं, जिससे संवैधानिक अधिकार केवल कागज़ी वादे बनकर रह गए हैं। इसके साथ ही, यह स्वर सत्ता, पूँजी और दमनकारी राष्ट्रवाद के गठजोड़ पर करारा प्रहार करता है, जो आदिवासी समुदाय को उनकी जल-जंगल-जमीन से बेदखल करने और उनकी सांस्कृतिक अस्मिता पर संदेह करने की दोहरी नीति अपनाता है, जैसा कि मदन कश्यप की कविता में आदिवासियों को 'बोलना नहीं, गाना आना चाहिए' कहने वाली मानसिकता से स्पष्ट है। यह पृष्ठभूमि एक ऐसे प्रतिवाद को जन्म देती है, जो आदिवासियों को निरीह शिकार के बजाय विचारवान, प्रतिरोधी और सवाल करने वाले नागरिक के रूप में स्थापित करता है, जो 'कितने दिन ऐसे चलेगा तुम्हारा राज, हे राजा?' जैसे प्रश्न पूछकर बदलाव और न्याय की माँग करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

राम दयाल मुंडा, अधिकारों की रक्षा, सेविधान, आदिवासी, संस्कृति

SGOU

Discussion / चर्चा

राम दयाल मुंडा और मदन कश्यप की कविताएँ आदिवासी जीवन, उनकी समस्याओं और संघर्षों की गहरी पड़ताल करती हैं। दोनों कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से उस व्यवस्था पर सवाल उठाते हैं जो विकास और राष्ट्रवाद के नाम पर आदिवासियों के अधिकार, संस्कृति और अस्तित्व को हाशिए पर धकेलती है। इन कविताओं में आदिवासी अस्मिता, शोषण के विरोध और सच्चे लोकतंत्र की खोज का सशक्त स्वर सुनाई देता है।

3.4.1 रामदयाल मुंडा-तुमने स्कूल बनाया

रामदयाल मुडा की कविता 'तुमने स्कूल बनाया' बुनियादी ज़रूरतों से वंचित आदिवासी समुदाय की विडंबनाओं और सामाजिक विसंगतियों को प्रभावशाली ढंग से उजागर करती है। यह कविता विकास के नाम पर बनाई गई व्यवस्थाओं और वास्तविक ज़मीनी जरूरतों के बीच के गहरे अंतर को सामने लाती है।

3.4.1.1 राम दयाल मुंडा

राम दयाल मुंडा (1939-2011) भारत के एक बहुत ही महत्वपूर्ण आदिवासी बुद्धिजीवी, नेता और कलाकार थे। उनका जन्म झारखंड के तमाड़ गाँव में हुआ था। उन्होंने भारत में पढ़ाई करने के बाद अमेरिका की शिकागो यूनिवर्सिटी से पी.एच.डी. की। उन्होंने अमेरिका की यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर की नौकरी भी की, लेकिन 1982 में वापस राँची आ गए। राँची आकर उन्होंने राँची यूनिवर्सिटी में आदिवासी भाषाओं का एक अलग विभाग शुरू किया, जो देश में अपनी तरह का पहला था।

डॉ. मुंडा केवल एक पढ़े-लिखे व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने आदिवासी संस्कृति को बचाने और उसे आगे बढ़ाने का काम किया। उन्होंने अपनी भाषा मुंडारी, नागपुरी और हिंदी में बहुत से गीत और किताबें लिखीं। उन्होंने 'आदि धरम' नाम की किताब लिखकर आदिवासियों के पारंपरिक धर्म को एक अलग पहचान दी। उन्होंने आदिवासियों के पाइका नृत्य को दुनिया भर में मशहूर किया।

वह आदिवासी अधिकारों के लिए हमेशा लड़ते रहे और उन्होंने अपनी बात संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) जैसे बड़े मंचों तक पहुँचाई। उनके कामों के लिए उन्हें पद्मश्री (2010) और संगीत नाटक अकादमी सम्मान मिला। वह राज्यसभा के सदस्य भी रहे। डॉ. राम दयाल मुंडा ने आदिवासियों को यह सिखाया कि उन्हें विकास के रास्ते पर चलते हुए भी अपनी संस्कृति और पहचान को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

तुमने स्कूल बनाया

'तुमने वे स्कूल बनवाए
गाँव वालों की शिक्षा के लिए,
पढ़ने वाले बच्चे बैठे हैं,
(लेकिन) मास्टर नहीं है, हे राजा।
कितने दिन ऐसे चलेगा
तुम्हारा राज, हे राजा?'
'तुमने अस्पताल बनवाए
रोगियों की सेवा के लिए,
बीमार लोग इंतज़ार कर रहे हैं,
(लेकिन) डॉक्टर नहीं हैं, हे राजा।
कितने दिन ऐसे चलेगा
तुम्हारा राज, हे राजा?'
'अपने गाँव में अपना राज
सचमुच की आज़ादी के लिए,
कागज़ तो आ गए हैं,
(किन्तु) ऑर्डर नहीं है, हे राजा।
कितने दिन ऐसे चलेगा
तुम्हारा राज, हे राजा?'

3.4.1.2 सारांश

- शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मूलभूत अधिकारों की बदहाली को रेखांकित करती हैं।

रामदयाल मुडा की कविता में तुमने स्कूल बनाया स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है कि आदिवासियों को बुनियादी ज़रूरतों से भी वंचित करने वाली व्यवस्था पर तीखा प्रहार किया गया है। यह कविता उस खोखली विकास नीति की सच्चाई उजागर करती है, जिसमें दिखावे के लिए योजनाएँ तो बनाई जाती हैं, लेकिन उनका वास्तविक लाभ ज़रूरतमंद लोगों तक नहीं पहुँचता। कवि विशेष रूप से शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मूलभूत अधिकारों की बदहाली को रेखांकित करती हैं। कविता में बताया गया है कि आदिवासी इलाकों में सरकार ने शिक्षा अभियान के तहत भले ही बड़ी संख्या में स्कूल बनवा दिए हों, पर वे स्कूल केवल ढाँचे बनकर रह गए हैं, क्योंकि उनमें पढ़ाने के लिए शिक्षक ही नियुक्त नहीं किए गए।

कवि सवाल उठाती हैं कि जब स्कूल तो हैं, पर ज्ञान देने वाला कोई नहीं, तो फिर उस शिक्षा का क्या लाभ? यह ऐसी स्थिति है जैसे बिना खुशबू के फूल – देखने में सुंदर,

पर उद्देश्यहीन। कविता इस विडंबना को बहुत ही सटीक शब्दों में यूँ प्रस्तुत करती है:

तुमने वे स्कूल बनवाए
गाँव वालों की शिक्षा के लिए,
पढ़ने वाले बच्चे बैठे हैं,
(लेकिन) मास्टर नहीं है, हे राजा।
कितने दिन ऐसे चलेगा
तुम्हारा राज, हे राजा?'

यह पंक्तियाँ सीधे सत्ता से सवाल करती हैं – यह कैसी शासन व्यवस्था है जिसमें इमारतें तो खड़ी कर दी गईं, पर उनमें जीवन भरने वाला कोई नहीं? कवि की यह चिंता केवल एक व्यंग्य नहीं, बल्कि एक गहरी पीड़ा और सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज़ है। जिस प्रकार आदिवासी क्षेत्रों में स्कूलों की स्थिति केवल एक ढाँचे तक सीमित रह गई है, ठीक वैसी ही हालत अस्पतालों की भी है। कवि इस बात को उजागर करती हैं कि सरकार ने आदिवासी इलाकों में अस्पताल तो बना दिए हैं, लेकिन उनमें न डॉक्टर हैं, न दवाइयाँ, और न ही ज़रूरी उपकरण। ऐसे में इन अस्पतालों का कोई लाभ नहीं पहुँचता। आज भी असंख्य आदिवासी कुपोषण, सामान्य बीमारियों और आवश्यक इलाज के अभाव में दम तोड़ देते हैं। बीमार लोग अस्पताल पहुँचकर इलाज की उम्मीद करते हैं, पर वहाँ सिर्फ दीवारें हैं, उपचार करने वाले लोग नहीं। यह हालात एक ऐसी विडंबना को दर्शाते हैं, जहाँ जीवन की सबसे ज़रूरी सेवा केवल कागज़ी योजनाओं तक सीमित रह गई है। इस त्रासदी को कवि अत्यंत प्रभावी ढंग से कविता की इन पंक्तियों में व्यक्त करती हैं:

- बीमार लोग अस्पताल पहुँचकर इलाज की उम्मीद करते है

अपने गाँव में अपना राज
सचमुच की आज़ादी के लिए,
कागज़ तो आ गए हैं,
(किन्तु) ऑर्डर नहीं है, हे राजा।
कितने दिन ऐसे चलेगा
तुम्हारा राज, हे राजा?'

ये पंक्तियाँ सत्ता से सीधे सवाल करती हैं कि क्या केवल अस्पताल की इमारतें बनवा देना ही स्वास्थ्य सेवा है? जब वहाँ न सेवाएँ हैं, न सेवा देने वाले, तब आम जनता क्या करे? यह प्रश्न एक आम आदिवासी की ओर से उठाया गया प्रश्न है, जो जीवन के हर मोर्चे पर उपेक्षा का शिकार है। कवि इस खोखली व्यवस्था का पर्दाफाश करते हुए पूछती हैं, क्या यही है तुम्हारा राज? और कितने दिन तक यह अन्याय यूँ ही चलता रहेगा?

- जीवन के हर मोर्चे पर उपेक्षा का शिकार है।

आज आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए संविधान और कानून के तहत अनेक नियम-कायदे बनाए गए हैं। देखने में ये नियम आदिवासी समुदाय को सशक्त बनाने के उद्देश्य से बनाए गए लगते हैं, लेकिन हकीकत यह है कि ये केवल कागज़ों

तक सीमित हैं। ज़मीनी स्तर पर इनका कोई लाभ आदिवासियों को नहीं मिल पाता। दुखद विडंबना यह है कि इन्हीं कानूनों और नीतियों का उपयोग कई बार उनके ही खिलाफ किया जाता है, जिससे उनका शोषण और बहिष्करण होता है। कवि इस दोहरेपन को अपनी कविता में तीव्रता से उजागर करती हैं। कविता का यह अंश स्पष्ट करता है कि आदिवासियों को 'अपने गाँव में अपना राज' भले ही कागज़ पर मिल गया हो, लेकिन उसकी असली आज़ादी अभी भी एक सपना ही है

यहाँ 'कागज़' उन अधिकारों और योजनाओं का प्रतीक है जो केवल दस्तावेज़ों में मौजूद हैं, जबकि 'ऑर्डर' उस वास्तविक क्रियान्वयन का संकेत देता है जो आज तक नहीं हुआ। कवि सत्ता से पूछती हैं कि जब तक इन अधिकारों को ज़मीन पर लागू नहीं किया जाएगा, तब तक यह शासन किस काम का? यह व्यवस्था, जो बाहर से लोकतांत्रिक और समानतावादी दिखती है, भीतर से आदिवासियों के लिए केवल अन्याय, उपेक्षा और शोषण का पर्याय बन चुकी है।

रामदयाल मुंडा की कविता केवल शब्दों का खेल नहीं, बल्कि आदिवासी समाज की गूंगी आवाज़ को शब्दों में ढालने का एक सशक्त प्रयास है। यह कविता उन खोखली नीतियों और वादों पर करारा प्रहार करती है, जो विकास और समानता के नाम पर आदिवासियों को केवल भ्रम में रखते हैं। स्कूल हैं पर शिक्षक नहीं, अस्पताल हैं पर डॉक्टर नहीं, कानून हैं पर न्याय नहीं, यह स्थिति केवल प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि एक सुनियोजित उपेक्षा का परिणाम है। कवि की प्रश्नात्मक शैली 'कितने दिन ऐसे चलेगा तुम्हारा राज, हे राजा?' सत्ता से सीधा संवाद है, जो उसकी ज़िम्मेदारियों की याद दिलाता है। यह कविता न सिर्फ शोषण की व्यथा सुनाती है, बल्कि बदलाव की माँग भी करती है। यह हमें सोचने पर मजबूर करती है कि जब तक अधिकार कागज़ से निकलकर ज़मीन तक नहीं पहुँचते, तब तक कोई भी राज आदिवासियों के लिए उनका अपना नहीं हो सकता। इसलिए अब ज़रूरत है, केवल योजनाएँ बनाने की नहीं, बल्कि उन्हें ईमानदारी से लागू करने की, ताकि 'अपने गाँव में अपना राज' सचमुच साकार हो सके।

3.4.2 मदन कश्यप-आदिवासी

मदन कश्यप की आदिवासी कविता सांस्कृतिक वर्चस्व के स्वरूप को चित्रित करते हुए आदिवासी अस्तित्व और उसकी संघर्षमय पहचान को गहराई से चिह्नित करती है।

3.4.2.1 मदन कश्यप

मदन कश्यप का जन्म 29 मई 1954 को बिहार के वैशाली ज़िले के एक गाँव में हुआ। वे हिंदी कविता के नवें दशक के प्रमुख और जनपक्षधर कवियों में से एक हैं। उनकी कविताएँ समाज, राजनीति, मजदूर, किसान और आदिवासी समुदायों के संघर्षों को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करती हैं। वे सिर्फ कवि नहीं, बल्कि एक विचारशील लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं, जिन्होंने हमेशा समाज के वंचित और शोषित वर्गों की आवाज़ को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है।

मदन कश्यप की कविताओं में आदिवासी जीवन, ग्रामीण समाज और श्रमिक वर्ग की पीड़ा बार-बार उभरती है। वे उन लोगों की बात करते हैं जिन्हें मुख्यधारा की राजनीति और विकास नीतियाँ अक्सर भुला देती हैं। उनकी कविताओं में आदिवासियों की जमीन, उनकी संस्कृति और अस्तित्व पर मंडराते खतरों की गहरी चिंता दिखाई देती है। यही कारण है कि वे अपनी कविताओं में आधुनिक समाज के 'विकास' के साथ-साथ उसके भीतर छिपे शोषण और असमानता को भी उजागर करते हैं।

उनके प्रमुख कविता-संग्रह हैं, 'लेकिन उदास है पृथ्वी', 'नीम रोशनी में', 'कुरुज', 'दूर तक चुप्पी', 'अपना ही देश' और 'पनसोखा है इन्द्रधनुष'। इन कृतियों में वे न केवल मनुष्य और प्रकृति के रिश्ते को तलाशते हैं, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि कैसे आदिवासी और ग्रामीण समाज अपनी अस्मिता बचाने के लिए संघर्षरत हैं।

गद्य लेखन में भी मदन कश्यप उतने ही सक्रिय रहे हैं। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं, 'मतभेद', 'लहूलुहान लोकतंत्र', 'राष्ट्रवाद का संकट', 'लॉकडाउन डायरी' और 'बीजू आदमी'। इन पुस्तकों में उन्होंने भारतीय लोकतंत्र, राष्ट्रवाद और आम आदमी के जीवन से जुड़े मुद्दों पर गहराई से विचार किया है।

वे वैचारिक लेखन और संपादन कार्य से भी लंबे समय तक जुड़े रहे। उन्होंने मजदूर आंदोलन की पत्रिका 'श्रमिक सॉलिडेरिटी' (धनबाद) और 'दि पब्लिक एजेंडा' (नई दिल्ली) का संपादन किया। उनके लेख और कविताएँ आदिवासी, मजदूर और हाशिए के समाज की वास्तविक स्थितियों को सामने लाते हैं।

उनकी रचनाएँ कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनूदित हुई हैं। बिहार के विश्वविद्यालयों में उन्हें समकालीन कवि के रूप में पढ़ाया जाता है। उनके कवि-कर्म पर तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, 'ज़्यादा प्राचीन है वेदना की नदी', 'मदन कश्यप की काव्य चेतना' और 'मदन कश्यप का कविकर्म'।

मदन कश्यप ने दूरदर्शन पर 2008 से 2017 तक चलने वाले साहित्यिक कार्यक्रम 'शब्द निरन्तर' का संचालन किया, जिसमें नामवर सिंह के साथ उन्होंने लगभग 400 पुस्तकों पर चर्चा की। इस कार्यक्रम ने साहित्य को आम दर्शकों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनके योगदान के लिए उन्हें अनेक सम्मान मिले हैं, जिनमें दिनकर राष्ट्रीय सम्मान (2024), अज्ञेय शब्द शिखर सम्मान (2022), नागार्जुन पुरस्कार (2016), केदार सम्मान (2015), शमशेर सम्मान (2008) और बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान (1994) प्रमुख हैं।

संक्षेप में, मदन कश्यप ऐसे कवि हैं जिन्होंने कविता को समाज, राजनीति और जनजीवन से गहराई से जोड़ा। उनकी कविताओं में आदिवासी और श्रमिक समाज की आवाज़ गूंजती है, एक ऐसी आवाज़ जो अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध खड़ी होती है और मानवीय संवेदना तथा न्याय की पक्षधरता का संदेश देती है।

आदिवासी

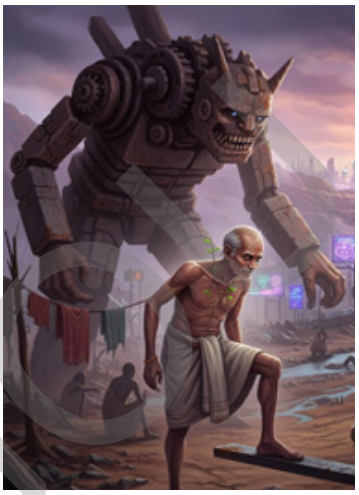

ठंडे लोहे-सा अपना कंधा जरा झुकाओ
हमें उस पर पाँव रख कर लंबी छलांग लगानी है
मुल्क को आगे ले जाना है
बाजार चहक रहा है
और हमारी बेचैन आकांक्षाओं के साथ-साथ हमारा आयतन भी
बढ़ रहा है तुम तो कुछ घटो रास्ते से हटो
तुम्हारी स्त्रियाँ कपड़े क्यों पहनती हैं वे तो ऐसी ही अच्छी लगती हैं
तुम्हारे बच्चे स्कूल क्यों जाते हैं
(इसमें धर्मांतरण की साजिश तो नहीं)
तुम तो अनपढ़ ही अच्छे लगते हो
बस अपना यह जंगल नदी पहाड़ हमें दे दो
हम इन्हें निचोड़ कर देश को आगे ले जाएँगे
दुनिया में अपनी तरक्की का मादल बजाएँगे
और यदि बचे रहे तो तुम्हें भी नाचने-गाने के लिए बुलाएँगे
देश के लिए हम इतना सब कर रहे हैं
तुम इतना भी नहीं कर सकते!

तुम्हारी भाषा अब गंदी हो गई है
उसमें विचार आ गए हैं
तुम्हारी संस्कृति पथभ्रष्ट हो गई है
उसमें हथियार आ गए हैं
खतरनाक होती जा रही हैं तुम्हारी बस्तियाँ
केवल हमारी दया पर बसी नहीं रहना चाहतीं
हमने तो बहुत पहले ही सबकुछ तय कर दिया था
तुम्हें बोलना नहीं गाना आना चाहिए
पढ़ना नहीं नाचना आना चाहिए
सोचना नहीं डरना आना चाहिए
अब तुम्हीं कभी-कभी भटक जाते हो
तुम्हें कौन-सी बानी बोलनी है
कौन-सा धर्म अपनाना है
किस बस्ती में रहना है
कब कहाँ चले जाना है
यह तय करने का अधिकार तुम्हें नहीं है
तुम तो बस जो हम कहते हैं वह करो
बेकार झमेले में मत पड़ो
हम से डरो हमारी भाषा से डरो
हमारी संस्कृति से डरो हमारे राष्ट्र से डरो!

3.4.2.2 सारांश

- व्यवस्था की आलोचना करती है

मदन कश्यप की कविता 'आदिवासी' एक तीव्र सामाजिक-राजनीतिक टिप्पणी है जो तथाकथित विकास की दौड़ में आदिवासियों की स्थिति, शोषण और बहिष्कार को केंद्र में रखती है। यह कविता न केवल सत्ता और पूँजी की साजिशों को उजागर करती है, बल्कि उस व्यवस्था की भी आलोचना करती है जो आदिवासियों को नागरिक मानने के बजाय उन्हें 'लोक' का हिस्सा मानकर केवल गाने-नाचने तक सीमित देखना चाहती है। कविता की शुरुआती पंक्तियाँ ही संकेत देती हैं कि मुख्यधारा की तरक्की, आदिवासियों की पीठ पर पाँव रखकर आगे बढ़ने का दुस्साहस है।

- आदिवासी समुदायों के प्रति सत्ता और समाज की दृष्टि कितनी दोहरी और शोषणकारी है।

कविता की सबसे बड़ी शक्ति इसकी व्यंग्यात्मक शैली है। कवि ने अत्यंत सटीकता से यह दिखाया है कि आदिवासी समुदायों के प्रति सत्ता और समाज की दृष्टि कितनी दोहरी और शोषणकारी है। 'तुम्हारे बच्चे स्कूल क्यों जाते हैं (इसमें धर्मांतरण की साजिश तो नहीं?)' जैसी पंक्ति केवल शिक्षा ही नहीं, बल्कि पूरे सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता पर उठाए जाने वाले संदेह को उजागर करती है। यह वही मानसिकता है जो आदिवासियों को सिर्फ गाते-नाचते देखना चाहती है, सोचते और सवाल करते नहीं।

- आदिवासियों को न अपनी भाषा चुनने की आज़ादी है, न धर्म, न रहने की जगह।

कविता में 'हमने तो बहुत पहले ही सब कुछ तय कर दिया था' जैसी पंक्तियाँ सत्ता की उस निरंकुशता को दर्शाती हैं जो निर्णय के सारे अधिकार अपने पास रखना चाहती है। यह पंक्ति बताती है कि आदिवासियों को न अपनी भाषा चुनने की आज़ादी है, न धर्म, न रहने की जगह। यह नियंत्रण केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी थोपा गया है। इस तरह कवि, आदिवासी समुदाय के लिए स्वतंत्रता, अस्मिता और आत्मनिर्णय के अधिकार की माँग करता है।

- कविता में राष्ट्रवाद का नकली मुखौटा भी बखूबी उजागर हुआ है।

कविता में राष्ट्रवाद का नकली मुखौटा भी बखूबी उजागर हुआ है। 'हमारे राष्ट्र से डरो' जैसी पंक्तियाँ बताती हैं कि राष्ट्र का नाम लेकर किस तरह वंचितों को डराया जा रहा है, और यह राष्ट्र केवल उस वर्ग का है जो सत्ता, पूँजी और संस्कृति पर एकाधिकार चाहता है। यहाँ राष्ट्र का स्वरूप समावेशी नहीं, बल्कि दमनकारी और जातिवादी है, जहाँ आदिवासी को केवल तभी स्वीकार किया जाता है जब वह अपनी पहचान त्याग दे।

- पूरे समुदाय की आत्मा को उजाड़ देती हैं।

मदन कश्यप की यह कविता उस तथाकथित विकास मॉडल की भी आलोचना करती है जो झारखंड जैसी जगहों में लाखों लोगों को विस्थापित कर चुका है। जब सरकारें नदी, जंगल, पहाड़ मांगती हैं, तो वे केवल ज़मीन नहीं लेतीं, बल्कि पूरे समुदाय की आत्मा को उजाड़ देती हैं। और बदले में कुछ नहीं देती, न रोजगार, न सम्मान, न पुनर्वास। यह वही अनुभव है जिसे हम झारखंड के विस्थापन संबंधी लेखों में बार-बार देखते हैं, और कविता उसी पीड़ा को काव्यात्मक रूप में सामने लाती है।

- शोषण के खिलाफ एक कठोर प्रतिवाद है।

अंततः, आदिवासी कविता सिर्फ एक आदिवासी समुदाय की त्रासदी नहीं बताती, यह उस पूरे व्यवस्था की पोल खोलती है जो लोकतंत्र की बात करते हुए भी उसे सिर्फ बहुसंख्यक हितों का उपकरण बना देती है। यह कविता सत्ता, भाषा, संस्कृति और राष्ट्र के नाम पर होने वाले शोषण के खिलाफ एक कठोर प्रतिवाद है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह आदिवासियों को निरीह शिकार के रूप में नहीं, बल्कि विचारवान, प्रतिरोधी और सवाल करने वाले नागरिक के रूप में प्रस्तुत करती है, जो किसी भी लोकतंत्र के लिए एक अनिवार्य शर्त है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

रामदयाल मुंडा की कविता आदिवासियों के उत्पीड़न, शोषण, और उनके अधिकारों के हनन को एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे के रूप में प्रस्तुत करती है। कवि ने जिस तरह से खोखली विकास नीतियों और सरकार की असंवेदनशीलता को उजागर किया है, वह केवल एक साहित्यिक काव्य नहीं, बल्कि एक सामाजिक और राजनीतिक प्रतिवाद है। कविता में शिक्षा, स्वास्थ्य, और समग्र विकास के नाम पर जो योजनाएँ बनाई जाती हैं, वे आदिवासियों के असली दर्द और उनकी ज़रूरतों से कोसों दूर हैं। जब स्कूल और अस्पताल केवल ढाँचे बनकर रह जाते हैं, तो

इसका सीधा प्रभाव उन समुदायों पर पड़ता है जो पहले ही शोषण और उपेक्षा का शिकार हैं। इस प्रकार, कविता सत्ता से सीधे सवाल करती है कि जब योजनाओं का वास्तविक क्रियान्वयन नहीं होता, तब ऐसे विकास का क्या लाभ है? यही प्रश्न 'तुम्हारा राज, हे राजा?' के रूप में एक गहरी चिंता और विरोध की भावना व्यक्त करता है।

कविता का एक और अहम पहलू आदिवासी समुदाय के अधिकारों और स्वतंत्रता की बात करता है। यह दर्शाता है कि आदिवासियों को केवल कागज़ों में ही अधिकार मिले हैं, लेकिन ज़मीनी स्तर पर उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। सत्ता का दमनकारी स्वरूप इस कविता में बखूबी चित्रित हुआ है, जिसमें आदिवासी समाज को केवल गाने और नाचने तक सीमित समझा जाता है। इसके साथ ही, कविता में राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद के नाम पर आदिवासियों को उनके अधिकारों से वंचित करने की साजिश को भी उजागर किया गया है। मदन कश्यप की यह कविता न केवल आदिवासी शोषण का पर्दाफाश करती है, बल्कि यह उन सामाजिक असमानताओं के खिलाफ एक दृढ़ आवाज़ है जो आदिवासी समुदाय को उनके कष्टों और संघर्षों के बावजूद पीछे धकेलती रहती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'तुमने स्कूल बनाया' कविता का विश्लेषण करें।
2. राम दयाल मुंडा की कविता में सत्ता और विकास के बीच के संबंध को समझाएँ।
3. मदन कश्यप की कविता 'आदिवासी' में अभिव्यक्त आदिवासी पर आलेख लिखिए।
4. आदिवासी कवि रामदयाल मुंडा की कविताओं की विशेषताएँ लिखिए।
5. आदिवासी और तुमने स्कूल बनाया कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी और विकास का भद्लोक - अश्विवनी कुमार पंकज
2. आदिवासी चिंतन की भूमिका - हरि राम मीणा
3. वाचिकता - वंदना टेटे
4. आदिवासी समाज और शिक्षा - रामशरण जोशी
5. उपनिवेशवाद और संघर्ष - हैरोल्ड एस तोपनो
6. कलम को तीर होने दो (झारखंड के आदिवासी हिन्दी कवि) - रमणिका गुप्ता

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 04

समकालीन हिन्दी आदिवासी कथा लेखन

Block Content

Unit 1 : आत्मकथात्मक लेखन और आदिवासी साहित्य, आदिवासी कहानियों का सांस्कृतिक पक्ष, आदिवासी कहानियों में संघर्ष एवं प्रतिरोध

Unit 2 : प्रमुख आदिवासी हिन्दी कहानीकार वाल्टर भँगरा तरुण, पीटर पॉल एक्का, रोज केरकट्टा, मंगल सिंह मुंडा, विजय सिंह मीणा, राम दयाल मुंडा, रोज के एलिस एक्का

Unit 3 : पीटर पॉल एक्का राजकुमारों के देश में (कहानी)

Unit 4 : मंगल सिंह मुंडा-महआ का फूल (कहानी) हरिराम मीणा-अमली (कहानी)

SGOU

इकाई 1

आत्मकथात्मक लेखन और आदिवासी साहित्य, आदिवासी कहानियों का सांस्कृतिक पक्ष, आदिवासी कहानियों में संघर्ष एवं प्रतिरोध

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिवासी साहित्य की विशेषताओं और उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि समझ सकते हैं।
- आत्मकथात्मक लेखन और आदिवासी कहानियों के बीच अंतर स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकते हैं।
- आदिवासी संघर्ष, प्रतिरोध और सांस्कृतिक अस्मिता के स्वरूपों को पहचानते हैं।
- मौखिक परंपरा और आधुनिक लेखन के अंतर्संबंधों को सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समझा जा सकते हैं।

Background / पृष्ठभूमि

आदिवासी साहित्य और कहानियों को समझने के लिए कुछ आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ होती हैं, जिनके बिना इनकी गहराई और मूल भावना को समझना कठिन हो सकता है। सबसे पहले, यह जानना ज़रूरी है कि आदिवासी समाज की संरचना मुख्यतः सामूहिकता, परंपराओं और प्रकृति पर आधारित होती है। उनकी संस्कृति मौखिक परंपरा से समृद्ध है, जिसमें गीत, नृत्य और लोककथाओं के माध्यम से ज्ञान और अनुभवों का संचरण होता है। दूसरा, आदिवासी जीवनशैली को समझने के लिए प्रकृति के साथ उनके घनिष्ठ संबंध और उस पर निर्भरता को महसूस करना आवश्यक है। तीसरा, आत्मकेंद्रित दृष्टिकोण के बजाय समुदाय केंद्रित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, क्योंकि आदिवासी साहित्य में 'मैं' से अधिक 'हम' का भाव प्रमुख होता है। इसके अलावा, आदिवासी समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विशेषकर उनके संघर्ष, विस्थापन और शोषण की जानकारी भी जरूरी है। धार्मिक विश्वास, मिथक और अनुष्ठानों की समझ भी आवश्यक है, क्योंकि ये कहानियों में गहरे रूप से अंतर्निहित होते हैं। अंततः, एक संवेदनशील और निष्पक्ष दृष्टिकोण के साथ इन कहानियों को पढ़ना चाहिए, ताकि उनकी आत्मा और सांस्कृतिक संदर्भ से न्याय किया जा सके।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदिवासी साहित्य, आत्मकथात्मक लेखन, सामूहिकता, मौखिक परंपरा, सांस्कृतिक पहचान, प्रकृति-परक दृष्टिकोण, संघर्ष और प्रतिरोध, सामाजिक न्याय

Discussion / चर्चा

4.1.1 आत्मकथात्मक लेखन और आदिवासी साहित्य

आत्मकथात्मक लेखन एक ऐसी साहित्यिक विधा है जिसमें लेखक अपने जीवन के अनुभवों, विचारों और भावनाओं को अपने दृष्टिकोण से व्यक्त करता है। इसे आत्म-अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम माना जाता है। आत्मकथात्मक लेखन को दो प्रमुख रूपों में बाँटा जाता है: जीवनी और आत्मकथा। हिंदी साहित्य में आत्मकथात्मक लेखन की परंपरा काफी समृद्ध है, जहाँ लेखक अपने व्यक्तिगत अनुभवों को समाज, संस्कृति और राजनीति के संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं। हालाँकि, आदिवासी साहित्य में आत्मकथात्मक लेखन की प्रवृत्ति कम पाई जाती है। इसका मुख्य कारण यह है कि आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक परंपराएँ सामूहिकता और समुदाय के अनुभवों पर केंद्रित होती हैं, न कि व्यक्तिगत आत्म-अभिव्यक्ति पर। आदिवासी समाज में मौखिक परंपरा, गीत, नृत्य और पुरखौती साहित्य के माध्यम से सामूहिक भावनाएँ और अनुभव साझा किए जाते हैं, इसलिए आत्मकथात्मक लेखन की आवश्यकता कम महसूस होती है।

- आत्मकथात्मक लेखन को दो प्रमुख रूपों में बाँटा जाता है

मुक्तिकामी साहित्य आँदोलनों के दौरान, विशेष रूप से स्त्री और दलित लेखन में आत्मकथात्मक लेखन प्रमुख प्रवृत्ति बन गया। इन आत्मकथाओं में जाति, पितृसत्ता और सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष की कहानियाँ होती हैं। जैसे 'दोहरा अभिशाप' और 'शिकंजे का दर्द' जैसी रचनाएँ दलित स्त्रियों के अनुभवों को उजागर करती हैं और प्रेरणादायक मानी जाती हैं। लेकिन आदिवासी साहित्य में यह प्रवृत्ति नहीं दिखती क्योंकि वहाँ व्यक्तिवाद की बजाय सामूहिकता पर अधिक जोर दिया जाता है।

- आदिवासी साहित्य में सामूहिक अनुभूति का स्वर प्रमुख होता है

आदिवासी दर्शन का मूल तत्व है सामूहिकता, जिसमें व्यक्तिवाद की कोई जगह नहीं है। आदिवासी समाज में सभी प्राणी और प्राकृतिक तत्व बराबर महत्त्व रखते हैं। इसलिए आत्मकथात्मक लेखन, जो व्यक्तिगत सफलता और संघर्ष को दर्शाता है, आदिवासी दृष्टिकोण के अनुकूल नहीं है। आदिवासी साहित्य में सामूहिक अनुभूति का स्वर प्रमुख होता है, जो गीतों, लोककथाओं और अनुष्ठानों के माध्यम से व्यक्त होता है। हालाँकि, संस्कृतिकरण और बाहरी प्रभावों के कारण आदिवासी समाज में बदलाव आ रहा है। भविष्य में आदिवासी लेखक आत्मकथात्मक लेखन की ओर रुझान दिखा सकते हैं, लेकिन तब भी यह आदिवासी साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति नहीं बनेगा। जब तक आदिवासी साहित्य में सामूहिकता और आदिवासियत का महत्त्व बना रहेगा, आत्मकथात्मक लेखन उसकी मूल विशेषता नहीं बन पाएगा।

4.1.2 आदिवासी कहानियों का सांस्कृतिक पक्ष

आदिवासी कहानियों का सांस्कृतिक पक्ष गहराई से आदिवासी समुदाय के जीवन, परंपराओं और विश्वासों को दर्शाता है। ये कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं होतीं,

बल्कि सामाजिक, धार्मिक और नैतिक शिक्षाओं का माध्यम भी बनती हैं। आदिवासी समाज की प्रकृति के साथ गहरी जुड़ाव, उनकी जीवन शैली और उनके संघर्ष इन कहानियों के माध्यम से जीवंत रूप में सामने आते हैं। आदिवासी लोग अपने अनुभवों, घटनाओं और मूल्यों को कहानियों के जरिए पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित करते हैं, जिससे उनकी सांस्कृतिक विरासत संरक्षित रहती है। आदिवासी कहानियों में प्रकृति को न केवल पृष्ठभूमि के रूप में, बल्कि एक संवेदनशील और जीवंत तत्व के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जंगल, नदियाँ, पहाड़ और वन्यजीव इन कथाओं के महत्वपूर्ण पात्र होते हैं। उदाहरण के लिए, आदिवासी लोककथाओं में जंगल को 'माँ' के रूप में देखा जाता है और उसके साथ आदिवासी समाज के संबंध को पवित्र माना जाता है। इन कहानियों के माध्यम से प्रकृति के प्रति श्रद्धा और संरक्षण की भावना को भी बढ़ावा दिया जाता है।

- सांस्कृतिक विरासत संरक्षित

आदिवासी समाज की सामाजिक संरचना और परंपराएँ भी इन कहानियों में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। ये कथाएँ आदिवासी समुदाय के परिवारिक रिश्तों, विवाह प्रथाओं और पारंपरिक नियमों को उजागर करती हैं। जैसे, आदिवासी समाज में सामूहिकता और आपसी सहयोग की भावना को कहानियों के माध्यम से दर्शाया जाता है, जहाँ हर व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण होता है। इसके अलावा, ये कहानियाँ लिंग भेद, सामाजिक असमानता और अन्याय के खिलाफ भी आवाज उठाती हैं, जैसे कि कई आदिवासी महिलाओं की कहानियों में उनके संघर्ष और आत्मनिर्भरता को दिखाया गया है।

- पारंपरिक नियमों को उजागर करती हैं

आदिवासी कहानियों में धर्म और विश्वासों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इन कथाओं में मिथक, किंवदंतियाँ और धार्मिक अनुष्ठान के बारे में बताया जाता है, जो आदिवासी समुदाय के जीवन में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, आदिवासी धार्मिक विश्वासों में आत्मा, पूर्वजों की पूजा और प्रकृति के देवताओं की उपासना के विचार प्रमुख हैं। इन कहानियों के माध्यम से आदिवासी समाज की आध्यात्मिक दुनिया और उनके अस्तित्व के दृष्टिकोण को समझा जा सकता है। इन कहानियों में आदिवासी महिलाओं के स्थान और उनकी भूमिका को भी उजागर किया गया है। आदिवासी समाज में महिलाएँ न केवल परिवार की रीढ़ होती हैं, बल्कि वे सामाजिक और राजनीतिक रूप से भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। कई कहानियों में महिलाओं के संघर्ष, अधिकारों के लिए लड़ाई और समाज में उनके योगदान को दिखाया गया है। उदाहरण के लिए, आदिवासी महिलाओं के जीवन के अनुभवों को दर्शाने वाली कहानियाँ उनके साहस, धैर्य और आत्मसम्मान के महत्व को स्पष्ट करती हैं।

- धर्म और विश्वासों का भी महत्वपूर्ण स्थान

आदिवासी कहानियाँ सिर्फ लोककथाएँ नहीं हैं; वे सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक दस्तावेज और जीवन के अनुभवों का अद्वितीय संग्रह हैं। इन कहानियों के माध्यम से आदिवासी समुदाय के जीवन के हर पहलू को समझना संभव है। यह हमें उनकी परंपराओं, विश्वासों और सामाजिक संरचनाओं के बारे में गहराई से जानने का अवसर देता है, जो आधुनिक युग में भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक बनी हुई हैं। आदिवासी कहानियों में संघर्ष और प्रतिरोध की भावना गहराई से विद्यमान है, जो उनके जीवन

- आदिवासी कहानियों में संघर्ष और प्रतिरोध की भावना गहराई से विद्यमान है

SGOU

के वास्तविक अनुभवों, सामाजिक अन्याय और बाहरी शोषण के खिलाफ उनकी लड़ाई को दर्शाती है। आदिवासी समाज का जीवन प्रकृति के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है और इसी परंपरा के तहत उनकी कहानियों में जंगल, नदियाँ, पहाड़ और अन्य प्राकृतिक तत्वों को विशेष स्थान दिया गया है। इन कहानियों के माध्यम से न केवल मनोरंजन होता है, बल्कि वे अपने अधिकारों, सांस्कृतिक पहचान और जीवन के मूल्यों को भी बनाए रखते हैं।

भूमंडलीकरण के प्रभाव से आदिवासियों की ज़मीन, जंगल और जीवन-व्यवस्था गंभीर संकट में पड़ गई है। विकास परियोजनाओं के नाम पर उन्हें बेदखल किया जा रहा है और उनके संवैधानिक अधिकारों की उपेक्षा की जा रही है। अनेक साहित्यकारों ने इस अन्याय को अपने लेखन में उजागर किया है। आदिवासियों के बिना देश का विकास अधूरा माना गया है।

साथ ही, गाँवों के शहरों से जुड़ने के कारण आदिवासी समाज में नई चेतना आई है। पहले उनकी पीड़ा को गैर-आदिवासी लेखन में अनदेखा किया जाता था, पर अब आदिवासी स्वयं अपनी संस्कृति, अधिकारों और अस्तित्व के लिए आवाज उठा रहे हैं। अपनी परंपराओं, गीतों और भाषाओं के माध्यम से वे अपनी पहचान को मजबूती से सामने रख रहे हैं। आदिवासी साहित्य अब उनके जागरण, संघर्ष और अस्मिता की सशक्त अभिव्यक्ति बन गया है।

समकालीन हिंदी आदिवासी कहानियों में सांस्कृतिक पक्ष मुख्यतः प्रकृति-निष्ठ जीवन, सामुदायिकता, श्रम-संस्कृति और विशिष्ट परंपराओं के संरक्षण पर आधारित है। आदिवासी रचनाकार जैसे एलिस एक्का, वाल्टर भेंगरा 'तरुण', रोज केरकेट्टा, हरिराम मीणा, रामदयाल मुंडा, संज़ीव, रणेंद्र आदि अपनी कहानियों के माध्यम से यह दिखाते हैं कि आदिवासी संस्कृति जंगल, नदी, पहाड़ और पर्यावरण से गहरे रूप से जुड़ी है। एलिस एक्का की कहानियाँ 'दुगी के बच्चे' और 'एल्मा की कल्पनाएँ' अभाव में भी आदिवासी जीवन के मानवीय और सांस्कृतिक मूल्य को उजागर करती हैं। वहीं सामुदायिक जीवन, प्रकृति के प्रति आदर और सरल जीवन-पद्धति आदिवासी संस्कृति की बुनियादी विशेषताएँ के रूप में इन कहानियों में उभरती हैं।

इन कहानियों में आदिवासी संस्कृति पर बढ़ते संकट का चित्रण भी अत्यंत प्रमुख है। आधुनिक विकास-परियोजनाएँ, औद्योगिकीकरण, नौकरशाही और वैश्वीकरण ने उनकी भाषा, भूमि, जंगल और सांस्कृतिक परंपराओं को गहरा नुकसान पहुँचाया है। हरिराम मीना ने अपने लेखन में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और इससे आदिवासी संस्कृति पर पड़े प्रभाव को रेखांकित किया है। वाल्टर भेंगरा की कहानी 'जंगल की ललकार' आदिवासी संस्कृति के सबसे महत्वपूर्ण तत्व—जंगल—पर सरकारी नियंत्रण और उससे पैदा हुई पीड़ा को सामने लाती है।

SGOU

इस प्रकार समकालीन आदिवासी कहानियाँ सांस्कृतिक अस्मिता, उसके क्षरण और उसके प्रतिरोध—तीनों को केंद्र में रखकर आदिवासी जीवन की सजीव सांस्कृतिक गाथा प्रस्तुत करती हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आदिवासी साहित्य, विशेष रूप से कहानियों के माध्यम से, एक समृद्ध सांस्कृतिक, सामाजिक और दार्शनिक परंपरा को सामने लाता है, जो मुख्यधारा के साहित्य से भिन्न होते हुए भी उतना ही सशक्त और प्रासंगिक है। आत्मकथात्मक लेखन जहाँ व्यक्तिगत अनुभवों की अभिव्यक्ति का माध्यम है, वहीं आदिवासी साहित्य सामूहिकता, सामुदायिक चेतना और परंपरागत मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। आदिवासी कहानियाँ केवल मनोरंजन या कथा-वाचन का साधन नहीं, बल्कि वे संघर्ष, प्रतिरोध, प्रकृति से जुड़ाव और सांस्कृतिक अस्मिता के जीवंत दस्तावेज हैं। इनमें प्रकृति एक पात्र के रूप में उपस्थित होती है, जिससे आदिवासी जीवन की गहराई और उसकी पर्यावरणीय चेतना स्पष्ट होती है। ये कहानियाँ धार्मिक विश्वास, मिथक, अनुष्ठानों और सामाजिक संरचना को भी उजागर करती हैं, जिससे आदिवासी जीवन के बहुआयामी पहलुओं की समझ मिलती है। आदिवासी महिलाओं की भूमिका इन कहानियों में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो न केवल पारिवारिक ढांचे में बल्कि सामाजिक और राजनीतिक परिवेश में भी सक्रिय दिखाई देती हैं। प्रतिरोध की भावना, जो बिरसा मुंडा जैसे ऐतिहासिक पात्रों से लेकर धूलिया और नदी जैसी प्रतीकात्मक कथाओं में दिखती है, आदिवासी समाज की जीवटता और आत्मबल को दर्शाती है। आधुनिक समय में जब आदिवासी समाज संस्कृतिकरण और बाहरी प्रभावों से गुजर रहा है, तब भी उनकी कहानियाँ अपनी मौलिकता और आत्मा को बनाए रखने में सक्षम हैं। आत्मकथात्मक लेखन की अनुपस्थिति आदिवासी साहित्य की कमजोरी नहीं, बल्कि उनके सामाजिक दर्शन की विशेषता है, जहाँ 'मैं' की जगह 'हम' को महत्व दिया जाता है। इन कहानियों के माध्यम से आदिवासी समाज न केवल अपने अतीत को सहेज रहा है, बल्कि वर्तमान के संघर्षों और भविष्य की दिशा को भी रेखांकित कर रहा है। आदिवासी कहानियाँ हमें यह सिखाती हैं कि सांस्कृतिक पहचान, प्रकृति से जुड़ाव और सामाजिक न्याय के लिए निरंतर प्रयास ही किसी समुदाय की असली ताकत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि आदिवासी साहित्य, विशेषतः कहानियाँ, आधुनिक समाज के लिए न केवल अध्ययन का विषय हैं, बल्कि आत्मनिरीक्षण और प्रेरणा का स्रोत भी हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आत्मकथात्मक लेखन और आदिवासी साहित्य की प्रवृत्तियों की तुलना करते हुए उनके सामाजिक संदर्भों का विश्लेषण कीजिए।
2. आदिवासी कहानियों में प्रकृति की भूमिका को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

3. आदिवासी कहानियों में महिलाओं की भूमिका और उनके संघर्षों को उजागर करते हुए लिंग संवेदनशीलता पर चर्चा कीजिए।
4. आदिवासी कहानियों की मौखिक परंपरा को सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के दृष्टिकोण से विवेचित कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. वाचिकाता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. आदिवासी और विकास का भद्लोक - अश्विवनी कुमार पंकज
2. आदिवासी चिंतन की भूमिका - हरि राम मीणा
3. आदिवासी समाज और शिक्षा - रामशरण जोशी
4. उपनिवेशवाद और संघर्ष - हैरोल्ड एस तोपनो
5. कलम को तीर होने दो (झारखंड के आदिवासी हिन्दी कवि) - रमणिका गुप्ता

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

प्रमुख आदिवासी हिन्दी कहानीकार वाल्टर (भँगरा तरुण, पीटर पॉल एक्का, रोज केरकट्टा, मंगल सिंह मुंडा, विजय सिंह मीणा, राम दयाल मुंडा, रोज के एलिस एक्का)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रमुख हिन्दी आदिवासी कहानीकारों के बारें में जानकारी प्रास करता है।
- प्रमुख आदिवासी हिन्दी कहानियों से भी परिचय हो जाता है।
- आदिवासी कहानियों की विशेषताएँ समझता है।
- आदिवासी कहानी में मुखरित प्रतिरोध एवं साहस की झलक हो जाता है।

Background / पृष्ठभूमि

आदिवासी कहानी साहित्य भारत की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक परंपराओं की एक अनसुनी लेकिन गूंजती हुई आवाज़ है। इसकी जड़ें उस मौखिक परंपरा में हैं जहाँ कथाएँ जीवन का हिस्सा थीं, न कि केवल मनोरंजन का साधन। आधुनिक रूप में आदिवासी कहानी ने बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में आकार लेना शुरू किया। एलिस एक्का ने इस विधा में सबसे पहले स्त्री अनुभव और सामाजिक विसंगतियों को स्वर दिया। उनकी कहानियाँ आदिवासी समाज के भीतर और बाहर की चुनौतियों को बड़ी संवेदनशीलता से सामने लाती हैं। रामदयाल मुंडा और वाल्टर भेंगरा जैसे रचनाकारों ने इस धारा को सामाजिक चेतना और राजनीतिक समझ के स्तर पर समृद्ध किया। इन कहानियों में जंगल, नदी, धरती और भाषा केवल प्रतीक नहीं बल्कि जीवंत पात्र हैं। आदिवासी लेखन में स्त्री केवल पीड़िता नहीं, बल्कि प्रतिरोध की प्रतीक भी है। यह साहित्य विकास की मुख्यधारा से विस्थापित समुदायों की जटिल स्थिति को उजागर करता है। रोज केरकेट्टा, पीटर पॉल एक्का और मंगल सिंह मुंडा जैसे लेखक आदिवासी अस्तित्व की लड़ाई को गहरे मानवीय सरोकारों के साथ जोड़ते हैं। इन कहानियों में न कोई शोर है, न प्रचार-केवल एक सच है, जो आत्मा से फूटता है

Keywords / मुख्य बिन्दु

अतीत, आदिवासी जीवन,जद्दोजहद,शक्तिशाली,परंपरा ,आदिवासी संस्कृति, प्रमुख आदिवासी हिन्दी कहानीकार

Discussion / चर्चा

- अतीत का बखान नहीं

आदिवासी कथाएं अब केवल अतीत का बखान नहीं, बल्कि वर्तमान के साथ चलती हुई चेतना की अभिव्यक्ति हैं। अब पहले जैसा प्रतिरोध आदिवासी समुदाय के लिए आसान नहीं रहा। पहले शोषण करने वाला स्पष्ट रूप से दिखाई देता था - उसका चेहरा और पहचान होती थी। लेकिन अब शोषण एक संगठित और जटिल व्यवस्था का रूप ले चुका है, जो आदिवासियों से भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से दूर होते हुए भी उन पर गहरा प्रभाव डाल रही है। यह व्यवस्था उनके जीवन, उनकी भूमि, जंगल, जल और पारंपरिक अधिकारों को धीरे-धीरे हड़प रही है। आदिवासी अब उस अदृश्य ताकत से जूझ रहे हैं, जिसे न तो सीधे देखा जा सकता है, न ही पारंपरिक तरीकों से रोका जा सकता है। उनके प्रतिरोध की ताकत अब उस रूपांतरित सत्ता-संरचना के सामने असहाय हो गई है, जो विकास और प्रगति के नाम पर उनके अस्तित्व को ही खतरे में डाल रही है।

दिनानाथ मनोहर की 'जंगल शांत हुआ' कहानी उस पीढ़ी की कथा है जो समय के साथ बदल नहीं पाई। ढोल की जगह बैंड ने ले ली है और पुरानी कला की अब कोई कद्र नहीं। नायक अपने ढोल के साथ जंगल की ओर चला जाता है, जहाँ कभी पूरा गाँव इकट्ठा होता था। जंगल ढोल की थाप से गूंजता है और फिर शांत हो जाता है - जैसे कि उसकी कला के साथ उसका अस्तित्व भी खत्म हो गया हो। रामधन लाल मीणा की कहानी 'अप्रत्याशित' व्यवस्था से लड़ने की कोशिश में असफल आदिवासी नायक की कहानी है। लेकिन उसका बेटा चुप नहीं रहता - गाँव में गोली चलती है और तीन शोषक मारे जाते हैं। यह आने वाली पीढ़ी के उग्र प्रतिरोध का संकेत है, जो अब

गुस्से को बोली में नहीं, हथियारों में व्यक्त कर रही है। कहानियों में आदिवासी समाज के भीतर के लैंगिक भेदभाव की भी झलक मिलती है। 'कहानी के बाहर की औरत' इस मानसिकता को उजागर करती है जिसमें पुरुष घर की स्त्री को उपेक्षित रखता है और 'आदर्श' स्त्री की कल्पना किसी और में करता है। लेकिन वही पुरुष समाज घर की स्त्री को पिछड़ा बनाए रखता है। कुछ कहानियों में उम्मीद और आदर्श भी हैं। 'खखरा का जतरू' पढ़-लिखकर भी अपने समाज और प्रेम को नहीं भूलता और गाँव लौटकर विकास की राह चुनता है। यह अपवाद है - वरना पढ़े-लिखे आदिवासी अक्सर गाँव और स्त्रियों को पीछे छोड़ देते हैं। कृष्णचंद टुडू की 'एक वित्ता ज़मीन' और रोज केरकेट्टा की 'भंवर' जैसी कहानियाँ आदिवासी समाज में लड़कियों को संपत्ति से वंचित करने की परंपरा का विरोध करती हैं। 'बेरथअ बिहा' धर्म परिवर्तन के बाद भी संस्कृति को बचाए रखने की बात करती है और दिखाती है कि आदिवासी पहले आदिवासी हैं, बाद में किसी धर्म से जुड़े हैं। 'लोदरो समधी' में व्यंग्यात्मक ढंग से नशाखोरी की समस्या को उठाया गया है, जबकि 'प्रायश्चित' कहानी में एक आदिवासी पति अपनी पत्नी की आत्महत्या के बाद अपराधबोध में दूसरे के बच्चे को अपनाकर नया जीवन शुरू करता है - यह संवेदनशीलता आदिवासी मन की विशेषता है। पीटर पॉल एक्का की 'राजकुमारों के देश में' विस्थापन की पीड़ा और सत्ता-प्रशासन की मिलीभगत से होने वाले शोषण को उजागर करती है - खासतौर पर आदिवासी लड़कियों के खिलाफ अपराधों को। ये सभी कहानियाँ मिलकर आदिवासी जीवन की जटिलताओं, संस्कृति, टूटते-बनते रिश्तों और समय के साथ उसकी जद्दोजहद की गहराई को उजागर करती हैं।

- पीटर पॉल एक्का की कहानी 'राजकुमारों के देश में'

4.2.2 प्रमुख आदिवासी हिन्दी कहानीकार

आदिवासी कहानियों की परंपरा भारतीय साहित्य में एक सशक्त और विशिष्ट धारा के रूप में उभरकर सामने आई है। यह परंपरा हजारों वर्षों पुरानी मौखिक कथा परंपराओं से जुड़ी हुई है, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, प्रकृति के साथ मानवीय रिश्ता, सामाजिक मूल्य और जीवन के विविध पक्षों का वर्णन मिलता है। हालांकि आधुनिक अर्थों में आदिवासी कहानी एक गद्य विधा के रूप में बीसवीं सदी के छठे दशक से आकार लेना शुरू करती है। इस दिशा में सबसे पहला नाम एलिस एक्का का आता है, जिन्होंने 1960-70 के दशक में आदिवासी स्त्रियों की स्थिति, जातिगत विषमता और सफाई मजदूरी जैसी समस्याओं को लेकर कहानियाँ लिखीं। उनकी कहानियों में आदिवासी दर्शन और सामाजिक न्याय की स्पष्ट झलक मिलती है। उनकी प्रमुख कहानी 'दुर्गी के बच्चे और एल्मा की कल्पनाएँ' मैला ढोने की प्रथा के खिलाफ आवाज़ उठाती है और समाज को एक व्यावहारिक समाधान सुझाती है।

- आदिवासी दर्शन और सामाजिक न्याय की स्पष्ट झलक

इसके बाद रामदयाल मुंडा ने कहानी विधा में प्रवेश कर आदिवासी अस्तित्व और उसकी भाषा-संस्कृति पर मंडरा रहे खतरों को प्रतीकात्मक शैली में व्यक्त किया। उनकी कहानी 'खरगोशों का कष्ट' बाहरी समाज द्वारा आदिवासियों की पहचान और सोच को बदलने की प्रक्रिया का सजीव चित्रण है। इसी तरह वाल्टर भेंगरा की कहानियाँ 'जंगल

- प्रतीकात्मक शैली में व्यक्त

की ललकार' और 'अपना-अपना युद्ध' आदिवासियों के विस्थापन, जंगलों पर अधिकार और पूँजीवादी विकास की आलोचना करती हैं। रोज केरकेट्टा की कहानियाँ आदिवासी स्त्री के संघर्ष, प्रतिरोध और स्वाभिमान की मार्मिक अभिव्यक्ति हैं। 'भँवर' और 'गंध' जैसी कहानियाँ पितृसत्ता के विरुद्ध स्त्रियों की मुखरता को सामने लाती हैं, वहीं 'बिरुवार गमछा' आदिवासी पहचान की सुरक्षा की बात करती है।

- आर्थिक और नैतिक शोषण

पीटर पॉल एक्का की कहानियाँ जैसे 'परती ज़मीन' और 'राजकुमारों के देश में' आदिवासियों के साथ हो रहे आर्थिक और नैतिक शोषण की पोल खोलती हैं। वे यह सवाल उठाते हैं कि जिन विकास परियोजनाओं के लिए आदिवासियों की ज़मीन, श्रम और आत्मसम्मान तक छीना जाता है, उससे आखिर फायदा किसका होता है। मंगल सिंह मुंडा की कहानियाँ, जैसे 'महुआ का फूल', आदिवासी स्त्री के प्रतिरोध को सम्मानजनक ढंग से प्रस्तुत करती हैं। वहीं विजय सिंह मीणा और हरिराम मीणा जैसे लेखक राजस्थान के मीणा समुदाय की संस्कृति, उत्सवों और ग्रामीण जीवन के संघर्षों को अभिव्यक्त करते हैं। विजय सिंह मीणा की कहानियों में मीणा समाज की आत्मा और बदलाव की चेतना दोनों परिलक्षित होती हैं।

- आदिवासी कहानियाँ दो मुख्य रूपों में आदिवासी दर्शन को प्रकट करती हैं।

आदिवासी कहानियाँ दो मुख्य रूपों में आदिवासी दर्शन को प्रकट करती हैं। पहला, उनके अपने जीवन, संस्कृति, मूल्य और प्रकृति से जुड़े सहज संबंध को चित्रित करना; और दूसरा, बाहरी समाज के साथ टकराव, शोषण और संघर्ष को दिखाना। इन कहानियों में जंगल, नदी, पहाड़ जैसे प्राकृतिक प्रतीक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। इनकी भाषा सीधी-सादी होती है, लेकिन अर्थों में गहरी होती है। आदिवासी साहित्य की विशेषता यह है कि इसमें सामाजिक न्याय, स्त्री अधिकार, संस्कृति रक्षा और जीवन-दर्शन की बातें नारेबाज़ी के बिना कही जाती हैं। समकालीन लेखकों की इन कहानियों में न केवल आदिवासी समाज का यथार्थ दर्ज है, बल्कि एक वैकल्पिक मानवीय और प्रकृति-संगत जीवनदृष्टि का प्रस्ताव भी है।

4.2.1.1 वाल्टर भेंगरा तरुण

वाल्टर भेंगरा 'तरुण' का जन्म 10 मई 1947 को वर्तमान झारखंड राज्य के राँची जिले के खूँटी प्रखंड के अमृतपुर गाँव में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा सन्त मिखाएल मिडिल स्कूल, खूँटी में प्राप्त की। इसके बाद सन्त जेवियर्स हाई स्कूल, लुपुंगुट

चाईबासा से 1966 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने सन्त जेवियर्स कॉलेज, राँची में अध्ययन किया और 1970 में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। पत्रकारिता के क्षेत्र में गहरी रुचि रखते हुए उन्होंने 1972 में नई दिल्ली से पत्रकारिता का प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने 1972 से 1980 तक पटना के युवा मासिक 'कृतसंकल्प' का संपादन किया, जिससे उन्हें साहित्यिक और पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण पहचान मिली।

- पत्रकारिता के क्षेत्र में गहरी रुचि

वाल्टर भेंगरा 'तरुण' ने कई प्रभावशाली साहित्यिक कृतियाँ रची हैं। उनके कहानी-संग्रहों में 'विकल्प', लौटते हुए, देने का सुख, जंगल की ललकार और अपना-अपना युद्ध शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने उपन्यासों के रूप में भी साहित्य को समृद्ध किया है, जिनमें तलाश, गैंग लीडर, कच्ची कली और लौटते हुए प्रमुख हैं। उनकी रचनाएँ समाज की विभिन्न परतों को छूती हैं, जो न केवल जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करती हैं बल्कि पाठकों को गहरे विचारों की ओर प्रेरित करती हैं। पीटर पॉल एक्का: उनके संग्रह राजकुमारों के देश में और परती ज़मीन में विकास के नाम पर आदिवासियों के विस्थापन और शोषण की कहानी बताई गई है।

- पीटर पॉल एक्का: उनके संग्रह राजकुमारों के देश में और परती ज़मीन में विकास के नाम पर आदिवासियों के विस्थापन और शोषण की कहानी बताई गई है।

4.2.1.2 डॉ. पीटर पॉल एक्का

उराँव समुदाय के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व, रेव. डॉ. पीटर पॉल एक्का, सामटोली, सिमडेगा के निवासी हैं। उनका शैक्षणिक सफर विविधता और उत्कृष्टता से भरा रहा है। उन्होंने 1978 में सेंट जेवियर्स कॉलेज, राँची से बी.एससी. की पढ़ाई पूरी की और इसके बाद 1981 में लोयला कॉलेज, चेन्नई से रसायनशास्त्र में एम.ए. की डिग्री हासिल की। रसायनशास्त्र के प्रति गहरी रुचि के चलते उन्होंने अमेरिका के मारक्वेट यूनिवर्सिटी से उच्चतर अध्ययन किया और राँची विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। दर्शनशास्त्र में भी गहरी रुचि रखते हुए, उन्होंने पुणे के के.डी. नोबिली कॉलेज में इस विषय का अध्ययन किया। धर्म के क्षेत्र में भी उनका गहरा योगदान है, क्योंकि वे 1973 में 'सोसाइटी ऑफ जीजस' के सदस्य बने और दिल्ली के विद्या ज्योति में धर्मशास्त्र की पढ़ाई की।

- उराँव समुदाय के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व

डॉ. एक्का केवल एक विद्वान ही नहीं, बल्कि एक अद्वितीय आदिवासी कथाकार भी हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य को आदिवासी जीवन, उनकी संघर्षमयी यात्रा और सामाजिक

SGOU

समस्याओं से परिचित कराया। उनके लेखन में चार कथा संग्रह, चार उपन्यास और एक संस्मरण शामिल हैं, जो आदिवासी संस्कृति और जीवन की विविधताओं को उजागर करते हैं। उनकी साहित्यिक और शैक्षणिक उपलब्धियाँ न केवल उन्हें एक प्रेरणास्त्रोत बनाती हैं, बल्कि समाज में बदलाव लाने वाले विचारक के रूप में भी प्रतिष्ठित करती हैं।

- अद्वितीय आदिवासी कथाकार

4.2.1.3 रोज़ केरकेट्टा

रोज़ केरकेट्टा, जन्म 5 दिसंबर 1940 को कैसरा, बोलबा, रांची जिला, बिहार (अब सिमडेगा जिला, झारखंड) में एक खारिया परिवार में हुई थीं। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा सिमडेगा कॉलेज से प्राप्त की और बाद में रांची विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा पूरी की। रोज़ केरकेट्टा एक प्रतिष्ठित लेखिका, कवि, विचारक और आदिवासी अधिकार कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने आदिवासी भाषा, संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनका साहित्यिक कार्य विशेष रूप से खारिया लोक कथाओं और आदिवासी समाज के अध्ययन पर केंद्रित है। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'खारिया लोक कथाओं का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन', 'प्रेमचंदाओ लुडकोए' (प्रेमचंद की कहानी का खारिया अनुवाद) और 'सिंकोए सुलोलो' (खारिया कहानी संग्रह) शामिल हैं। रोज़ केरकेट्टा को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए रानी दुर्गावती सम्मान, अयोध्या प्रसाद खत्री सम्मान और प्रवासति सम्मान जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्होंने आदिवासी समाज के अधिकारों के लिए आवाज उठाते हुए साहित्य और सामाजिक कार्यों में एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है। उनका जीवन आदिवासी संस्कृति के प्रति गहरी निष्ठा और प्रेम का प्रतीक है। आदिवासी पहचान और महिलाओं के अधिकारों पर केंद्रित उनकी रचनाएँ जैसे 'बिरुवार गमछा' और 'पगहा जोरी जोरी रे घाटो' बहुत प्रसिद्ध हैं।

- साहित्यिक कार्य विशेष रूप से खारिया लोक कथाओं और आदिवासी समाज के अध्ययन पर केंद्रित है

4.2.1.4 मंगल सिंह मुंडा

मंगल सिंह मुंडा का जन्म 28 अप्रैल 1945 को झारखंड के खूँटी जिले के रंगरोंग गाँव में हुआ था। वे एक आदिवासी परिवार में पले-बढ़े और उनके पिता राम मुंडा एक कवि और शिक्षक थे। राम मुंडा रेलवे में नौकरी के दौरान कलकत्ता में रहे और 2005 में सेवानिवृत्त होने के बाद अपने पुश्तैनी गाँव तिरला, खूँटी लौट आए।

मंगल सिंह मुंडा ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय स्तर पर प्राप्त की और बाद में पत्राचार के माध्यम से उड़ीसा के उत्कल विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिग्री प्राप्त की। छात्र जीवन से ही उन्हें लेखन में रुचि थी और उन्होंने कहानियाँ लिखना शुरू किया। उनकी पहली कहानी 1982 में राँची की। आदिवासी। पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

- 'छैला सन्दु' संभवतः पहला आदिवासी उपन्यास है

उनकी प्रमुख कृतियों में 'महुआ का फूल' (कहानी-संग्रह) और 'छैला सन्दु'(उपन्यास) शामिल हैं। विशेष रूप से 'छैला सन्दु' हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि यह संभवतः पहला आदिवासी उपन्यास है जिसे दिल्ली के राजकमल प्रकाशन जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशन से प्रकाशित किया गया है। इसके बावजूद, यह उपन्यास एक दशक बाद भी हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपरिचित ही बना रहा है।

मंगल सिंह मुंडा ने हिंदी के साथ-साथ मुंडारी भाषा में भी लगातार लेखन किया है। उन्होंने नाटक, लघु कथाएँ और अन्य साहित्यिक कृतियाँ भी रची हैं। उनका साहित्यिक कार्य आदिवासी जीवन, संस्कृति और संघर्षों को जीवंत रूप से प्रस्तुत करता है। आज भी मंगल सिंह मुंडा अपने पुश्तैनी गाँव में रहकर लेखन और अनुसंधान में संलग्न हैं। उनके योगदान ने आदिवासी साहित्य को एक नई दिशा दी है और उन्हें हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण आवाज़ बना दिया है।

4.2.1.5 विजय सिंह मीणा

विजय सिंह मीणा का जन्म 01 जुलाई 1965 को ग्राम-जटवाड़ा, तहसील-महवा, जिला-दौसा, राजस्थान में हुआ। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से हिंदी साहित्य में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की और अपने शिक्षा जीवन में साहित्य के प्रति गहरी रुचि विकसित की। विजय सिंह मीणा ने केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली और केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली में सेवाएं प्रदान की हैं और वर्तमान में वे विधि कार्य विभाग, विधि एवं न्याय मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली में उप-निदेशक (राजभाषा) के पद पर कार्यरत हैं। साहित्यिक क्षेत्र में उनके योगदान को पहचान मिली है और उन्होंने

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ, कविताएँ और लेख प्रकाशित किए हैं। उनकी रचनाएँ सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर गहन विचार प्रस्तुत करती हैं। इसके अलावा, उन्होंने आकाशवाणी और दूरदर्शन पर भी विभिन्न साहित्यिक और सम-सामयिक विषयों पर वार्ताएँ प्रसारित की हैं, जिससे उनके विचारों को व्यापक मंच मिला है। उनकी प्रमुख रचना 'सिसकियाँ' नामक कहानी संग्रह है, जो पाठकों के बीच लोकप्रिय है।

- प्रमुख रचना 'सिसकियाँ' नामक कहानी संग्रह है

विजय सिंह मीणा को 2013 में संस्कार सारथी सम्मान से नवाजा गया, जो उनके साहित्यिक योगदान की सराहना है। वर्तमान में वे ई-30-एफ, जी 8 एरिया, वाटिका अपार्टमेंट, एम आई जी फ्लैट, मायापुरी, नई दिल्ली में निवास करते हैं। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे सामाजिक जागरूकता और सोच-विचार के नए आयाम भी प्रस्तुत करती हैं।

4.2.1.6 राम दयाल मुंडा

राम दयाल मुंडा का जन्म 23 अगस्त 1939 को झारखंड (तत्कालीन बिहार) के रांची जिले के दिउरी गाँव में हुआ था। वे एक ऐसे परिवार में पले-बढ़े जहाँ जनजातीय संस्कृति और परंपराओं का महत्वपूर्ण स्थान था। प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने लूथर मिशन स्कूल, अमलेसा से प्राप्त की और माध्यमिक शिक्षा खूँटी में पूरी की। खूँटी का क्षेत्र बिरसा आँदोलन के ऐतिहासिक केंद्र के रूप में जाना जाता है, जिसने उनके विचारों और दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित किया। उच्च शिक्षा के लिए राम दयाल मुंडा ने मानवविज्ञान विषय चुना और विशेष रूप से भाषाविज्ञान पर ध्यान केंद्रित किया। उनकी शैक्षणिक यात्रा ने उन्हें शिकागो विश्वविद्यालय तक पहुँचाया, जहाँ उन्होंने ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषाओं पर अनुसंधान किया और पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद, वे साउथ एशियन स्टडीज विभाग में शिक्षक के रूप में कार्यरत हुए और भारत लौटकर रांची विश्वविद्यालय में जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना की। यह विभाग झारखंड आँदोलन के बौद्धिक आधार के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राम दयाल मुंडा का योगदान केवल शैक्षणिक क्षेत्र तक सीमित नहीं था; वे जनजातीय समाज के सांस्कृतिक उत्थान के प्रति भी समर्पित थे। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के इंडिजिनस पीपल्स वर्किंग ग्रुप और इंडिजिनस इश्यूज फोरम में भारत का प्रतिनिधित्व किया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जनजातीय अधिकारों के लिए आवाज उठाई।

- जनजातीय समाज के सांस्कृतिक उत्थान के प्रति भी समर्पित थे।

- जनजातीय भाषाओं और संस्कृतियों को संरक्षित करने और उन्हें वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का माध्यम

उनकी साहित्यिक रचनाएँ भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं, जिनमें 'मुण्डारी व्याकरण', 'मुण्डारी गीतकार', कुच्छ नए नागपुरी गीत, रश्मिरथी का अंग्रेजी अनुवाद और 'बिरसा मुंडा' का हिंदी अनुवाद शामिल हैं। उनकी रचनाएँ जनजातीय भाषाओं और संस्कृतियों को संरक्षित करने और उन्हें वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का माध्यम बनीं। राम दयाल मुंडा को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए कई सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें 2007 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और 2010 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार शामिल हैं। वे 1999 में सेवानिवृत्त होने के बाद भी जनजातीय समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक विकास के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत रहे। उनका योगदान आज भी प्रेरणा का स्रोत है, जो जनजातीय पहचान और संस्कृति को सशक्त बनाता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आदिवासी हिंदी कहानियाँ आज केवल बीते समय की गाथा नहीं, बल्कि समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संघर्षों की जीवंत अभिव्यक्ति बन चुकी हैं। ये कहानियाँ आदिवासी समाज की जटिलताओं, आँतरिक विभाजनों, लैंगिक असमानताओं और बाहरी शोषण की संरचनाओं को उजागर करती हैं। एलिस एक्का, राम दयाल मुंडा, वाल्टर भेंगरा, पीटर पॉल एक्का, रोज केरकेट्टा जैसे लेखकों ने इस साहित्यिक धारा को सशक्त आधार प्रदान किया है। इनकी रचनाओं में आदिवासी पहचान, आत्म-सम्मान, प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व और सांस्कृतिक पुनरुद्धार के स्वर मुखर होते हैं। कहानियाँ जैसे स्थित्यंतर, अप्रत्याशित, भँवर और राजकुमारों के देश में आदिवासी समाज के भीतर और बाहर के संघर्षों की तस्वीर पेश करती हैं। कुछ कहानियाँ नए प्रतिरोध और संभावनाओं की ओर इशारा करती हैं, तो कुछ टूटते युग की करुण परिणति को सामने लाती हैं। इन साहित्यिक प्रयासों ने आदिवासी चेतना को साहित्यिक विमर्श के केंद्र में लाकर एक मानवीय और वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। आदिवासी कहानियाँ अब मुख्यधारा साहित्य का पूरक नहीं, बल्कि स्वतंत्र और जरूरी स्वर बन गई हैं। यह साहित्य केवल दस्तावेजीकरण नहीं करता, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की चेतना भी जगाता है। कुल मिलाकर, आदिवासी हिंदी कहानी एक सशक्त प्रतिरोधात्मक और रचनात्मक साहित्यिक धारा के रूप में स्थापित हो चुकी है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आदिवासी कहानी की विशेषताएं लिखिए।
2. प्रमुख आदिवसी कहानिकारों पर आलेख लिखिए।
3. आदिवासी कहानी में मौजूद संघर्ष और प्रतिरोध पर आलेख तैयार कीजिए।
4. महिला आदिवसी लेखक के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।
5. आदिवासी कहानी में चित्रित आदिवासी नारी के बारे में टिप्पणी लिखिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी और विकास का भद्लोक - अश्विवनी कुमार पंकज
2. आदिवासी चिंतन की भूमिका - हरि राम मीणा
3. वाचिकता - वंदना टेटे
4. आदिवासी समाज और शिक्षा - रामशरण जोशी
5. उपनिवेशवाद और संघर्ष - हैरोल्ड एस तोपनो
6. कलम को तीर होने दो (झारखंड के आदिवासी हिन्दी कवि) - रमणिका गुप्ता

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
2. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
3. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
4. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

पीटर पॉल एक्का राजकुमारों के देश में (कहानी), हरिहर वैष्णव-मोहभंग (कहानी)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिवासी जीव और सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत हो जाता है
- विकास और शोषण के द्वंद्व का बोध हो जाता है
- मानवता और नैतिक मूल्यों के महत्व की अनुभूति हो जाता है

Background / पृष्ठभूमि

डॉ. पीटर पॉल एक्का की कहानी "राजकुमारों के देश" आधुनिक भारतीय समाज, विशेष रूप से आदिवासी जीवन, उनकी संस्कृति और उनके शोषण पर आधारित एक अत्यंत संवेदनशील रचना है। इस कहानी की पृष्ठभूमि झारखंड (पूर्व बिहार) के सिमडेगा जैसे पहाड़ी और वनाच्छादित क्षेत्र से जुड़ी है, जहाँ के लोग – विशेषकर उराँव, मुंडा और संथाल समुदाय – प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध में जीवन बिताते आए हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदिवासी जीवन, प्रकृति, आत्मगौरव, शोषण, औद्योगिकीकरण, कोलियरी, विस्थापन, भ्रष्टाचार, संस्कृति, परंपरा, मानवता

SGOU

Discussion / चर्चा

4.3.1 पीटर पॉल एक्का - राजकुमारों के देश में

पीटर पाल एक्का की 'राजकुमारों की देश में' कहानी आदिवासी जीवन में आए सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तनों का अत्यंत मार्मिक, प्रामाणिक और संवेदनापूर्ण चित्रण करती है। कहानी न केवल आदिवासी समाज के बदलते परिवेश को उजागर करती है, बल्कि आधुनिकता की आहट से उत्पन्न संघर्षों, दुविधाओं और टूटते रिश्तों को भी गहनता से प्रस्तुत करती है।

4.3.1.1 पीटर पॉल एक्का

डॉ. पीटर पॉल एक्का, झारखंड के सिमडेगा जिले के सामटोली से संबंध रखने वाले उराँव समाज के एक अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। उनका जीवन विज्ञान, धर्म और साहित्य की त्रिवेणी के प्रति समर्पित रहा है। उनकी शिक्षा यात्रा सन् 1978 में राँची के सेंट जेवियर्स महाविद्यालय से स्नातक (बी.एससी.) की उपाधि के साथ आरंभ हुई और सन् 1981 में चेन्नई के लोयला महाविद्यालय से रसायनशास्त्र में स्नातकोत्तर (एम.ए.) की उपाधि प्राप्त करने के साथ आगे बढ़ी। चूँकि वे 1973 में ही 'सोसाइटी ऑफ जीजस' के सदस्य बन गए थे, अतः उनका आध्यात्मिक पक्ष भी अत्यंत सुदृढ़ रहा। उन्होंने पुणे के के.डी. नोबिली महाविद्यालय से दर्शनशास्त्र और दिल्ली की विद्या ज्योति संस्था से धर्म विज्ञान का गहन अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त, विज्ञान के प्रति अपने विशेष लगाव के कारण उन्होंने अमेरिका के मारक्वेट विश्वविद्यालय में रसायनशास्त्र की उच्च शिक्षा प्राप्त की और राँची विश्वविद्यालय से विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) की उपाधि हासिल की। ज्ञान के इतने विविध क्षेत्रों में उनकी विशेषज्ञता उनके साहित्य और समाज सेवा के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती है।

राजकुमारों के देश में

जाने कैसे मंगलू काका मेरे जीवन में आकर रच बस गया था। औरों के लिए वह मंगल वैद्य था पर मेरे लिए शुरू से ही मंगलू काका। तब बाबूजी का तबादला उस अंचल के वन विभाग में हो गया था। वे बचपन के दिन थे आज से अनेकों साल पहले।

मंगलू काका से मुलाकात भी अजीब तरह से हुई थी। तब बरसात के दिन थे। बाबूजी काम के सिलसिले में कहीं दूर के गाँव में निकल गए थे। घर के आँगन में खेलते हुए जाने कहाँ से कोई छोटा सा साँप आकर डस गया था। साँप विषैला हो न हो, मौत तो ज्यादातर डर से ही होती है। माँ पर तो जैसे अनदेखा पहाड़ गिर पड़ा था। बाबूजी के पास न होने के कारण उन्हें शहर के अस्पताल तक ले जाना संभव न था। माँ के करुण-क्रंदन से आदिवासियों का वह छोटा-सा गाँव सिहर उठा था। विलाप और भगवान भरोसे के सिवा माँ और कर भी क्या सकती थी। मेरी आँखें मुंदने लगी थीं और तभी उस ओर से फरिश्ते के मानिद मंगलू काका चले आए थे। जाने कौन सी जड़ी-बूटी पिलायी थी उन्होंने कि पांच घंटे बाद आँखें खुल गयी थीं। सीने से चिपकाए माँ तब कितनी देर तक खुशी से सुबकती रही थी। जो चाहे वह माँ मंगलू काका के चरणों में घर देना चाहती थी। बहुत मनुहार के बावजूद मंगलू काका बस चाय की एक प्याली स्वीकार किए थे। तब से मैं सुबह-शाम भाग-भाग कर मंगलू काका के घर खेल-कूद के दौरान जाने लगा था।

'अरे देख तो कौन आया है?' उस दिन हमें आया देख काका बोल उठे थे। आँगन में ही कुछ दवाइयाँ पीस रहे थे वे।

काकी अंदर चूल्हे-चौके में उलझी थी। बाहर आयी तो नमस्कार में हाथ जोड़ दिए थे हमने। काकी ने स्नेह-वात्सल्य में आशीर्वाद पिरोते हाथ माथे पर रख दिया था।

'कौन है ए!'

'अरे अपुन फोरेस्टर बाबू हैं। पहचाना नहीं। उस दिन साँप डस दिया था न, तब गया था।'

काकी थोड़ा मुस्कुराने लगी थी। स्थानीय आदिवासियों के उसी चिर-परिचित परिधान में-करघे की बुनी मोटी-सी एक साड़ी पूरे तन-बदन को ढंके हुए थी। गले में जाने कौन सी माला थी, पूरे सांवले तन में गोदना गुदा था। कितनी प्यारी, अच्छी लगी थी।

अभी यह देख ही रहा था कि तभी उस ओर से चंदा आ गयी थी। शायद नदी से पानी भरने गयी थी। जूड़े में कोई जंगली फूल हंस रहा था। इससे पहले वैसी मासूम, सुंदर प्रतिमा देखी न थी। थोड़ा-थोड़ा सा गोरा बदन। माँ की अपेक्षा तन पर गोदना कुछ कम था। दो पलों के लिए बस देखता रह गया था।

'अपुन की अकेली छोटी बिटिया है चंदो....'

मैंने प्रणाम करते हुए हाथ जोड़ दिया था तो वह भी थोड़ा मुस्कुराती हाथ जोड़ रही थी।

'अपुन फोरेसटर बबुआ हो' काका परिचय के लफ्ज दुहरा रहे थे।

तब से कितने खुशगवार पल मंगलू काका के यहाँ गुजारे जाने लगे थे। काकी तो ऐसे दुलारती जैसे उसी का बेटा रहा हूँ। कभी चंदा तक रूठने लगती। जंगल का कौन सा

फल-फूल तब हमने नहीं चखा था-महुवा, चार, तेंदू, कटहल, आम जाने काकी कहाँ-कहाँ से ढूँढ लाती थी। बरसात के दिनों में आलू की तरह जाने कौन से कंद खोद लाती, उबाल कर, धोकर जब परोसती तो निहायत तीते कंद भी मीठे लगने लगते। सप्ताह में दो-तीन दिन काका जंगल जाते थे, साथ में काकी भी। जड़ी-बूटी चुनी जाती, साथ में जंगल के कंद-मूल भी। काकी के साथ चंदा को भी जड़ी-बूटियों की अच्छी पहचान हो गयी थी। मंगलू काका को कभी किसी से दवा और इलाज के लिए पैसे की बात करते देखा-सुना नहीं था। खुद की मर्जी से जो दे दें। कभी तो दोना भर हंड़िया ही काफी हो जाता। ज्यादा उदार हुए तो कभी-कभार लोग चावल, दाल, साग-सब्जी कुछ भी दे जाते थे। वर्षों की मेहनत से जंगल के बीच एक-दो खेत बन पाए थे। एक जोड़ी बैलों की थी जीविका के लिए। सारा जंगल धरती माता की तरह उदार, बेफिक्र खुला था।

तब करीब के गाँव में हर सोमवार बाजार लगता था। चुपके-चुपके दो-एक बार काकी साथ में बाजार ले गयी थी। बाजार जाना स्थानीय आदिवासियों का एक खास नशा था। चंदा भी जब जाने के लिए मचलने लगती तब हल्की सी चपत लगाते हुए काकी उसे भी साथ ले चलती थी। मेहनत से जंगल-जंगल भटकते, ढूँढे, तैयार किए चारे के बीज बाजार पहूँचने के पहले ही बिक जाते थे। शहर के सेठ-साहूकारों के नौकर रास्ते में ही बांट-वटखरे लिए तैयार खड़े रहते। अगहन के दिनों धान-चावल काफी सस्ते बेच देने पड़ते थे। बाजार से काकी हमारे लिए पकौड़ियाँ, मुरही, चिवड़ा खरीद देती थी।

वे बेहद खूबसूरत दिन थे। आदिवासियों की उस बस्ती में तव सांझ ढलते जो ढोल, माँदर बजने लगते तब अक्सर कुछ बहाना बता माँ से इजाजत ले लेता था। मंगलू काका की माँदर बजाने की अपनी अलग खासियत थी। चंदा तो गजब का नाचती थी। मंत्रमुग्ध-सा उन भोले-भाले, खुश, बेफिक्र लोगों को नाचते देखता, तो यह नहीं लगता उन्हें किसी की चिंता भी है। एक-दो बार नाच सिखा देने के लिए चंदा हाथ भी पकड़ चुकी थी पर गया नहीं था। कुछ आत्माभिमान, कुछ शहर के हाईस्कूल में पढ़ने की झूठी शान। पर्व-त्यौहारों, शादी-ब्याह के मौकों की अपनी खास अदा थी।

जब छुट्टियों से घर आता तो ज्यादा समय चंदा के साथ हंसते, खेलते, गाते गुजर जाता। कभी-कभी नदी की बहती धार में अनजानी परछाइयाँ देखी जाती, कंकड फेंके जाते, अब-तब बालिश्त भर की मछलियाँ पकड़ी जातीं, रेत के बड़े-बड़े महल बनाए जाते, जंगल के फल-फूल बटोरे जाते, रूठना-मनाना होता। तब रविवार के दिनों औरों के संग वन-वन भटकते एक दूसरे की कितनी कहानियाँ सुनायी जातीं। शहर से आते ही चट से चन्दा पूछने लगती- 'हमारे लिए क्या लाए शहर से?'

'कुछ भी तो नहीं।'
'कुछ भी नहीं!'- चंदा जरा रूठने लगती।
'लाया हूँ'- उसकी भोली-भाली आँखों में झांककर कहना पड़ता।
'क्या लाए?'- तब वह बच्चों की तरह मचलने लगती।

अपने हाथों जब कांच की कुछ चूड़ियाँ, लाल-लाल रिबन, बिंदी, कंघी देता तो वह वनफूल की तरह खिल उठती थी। भोली-भाली, मासूम आदिवासी बालाओं के लिए इनसे बढ़कर अच्छी सौगात तब और कुछ हो नहीं सकती थी।

फिर हमारे खुले-खुले, अल्हड़ से जीवन में बंदिश लग गयी थी। हमने उम्र की किसी दहलीज में कदम रख लिए थे। आदिवासियों की उस बस्ती में ऐसे खुले खुले मिलने की आजादी उस उम्र में नहीं मिलती थी। एक बार जहाँ थोड़ी सी बात उड़ जाती तो चंदा को लेने कोई राजकुमार नहीं आता।

हाईस्कूल की अंतिम सीमा पार करने के दिनों में लंबी मुद्दत तक गाँव नहीं आया था। इम्तिहान के बाद छुट्टियों में आया तो उस पहाड़ी इलाके में परिवर्तन की छाप हर ओर दिखने लगी थी। वहाँ एक नई कोलियरी खुल गयी थी। जाने गंगा पार के किन देशों से लोग आकर बसने लगे थे। वर्षों की मेहनत से बने बनाये खेत दब गये थे। मुआवजा के नाम मिली रकम गाँव के सरपंच की झोली में चली गयी थी। मंगलू काका के दुर्दिन तब शुरू ही हुए थे। काका ने तब बैलों की जोड़ी बेच दी थी। जंगली जड़ी-बूटियों की वे खरीद-फरोख्त करने लगे थे। जंगली कंद-मूल, फल-फूल कम मिलने लगे। सुरक्षित वन बोर्ड के साथ कंटीली परिधि लग गयी थी। जब आया तो पहली बार काका के बेफिक्र, हंसते, सदाबहार चेहरे में अंदेशे, चिंता की काली घटा देखी थी।

'अब तो बबुआ, गाँव छोड़ देवे होगा!'
'क्यों काका?'
'जंगल तो तुम्हारे बाबूजी कटवा रहे हैं। उधर सरकार कोलियरी शुरू करवा दे रही है,

अपुन को जगह कहाँ। जाने कहाँ-कहाँ से लोग भर जा रहे हैं' यह कहते काका हंस पड़े थे। हाँ, उस वनी-वनायी हंसी के अंदर कहीं रिसता-सा घाव था जो काका के लाख छुपाने की कोशिश में निर्मोही-सा बेपर्द हो उठता था।

काका को क्या कहूँ कुछ भी सोच न पाया था।

'अब तो सब कुछ कितना बदल गया है। पहले वाला गाँव कहाँ रहा? अब तो सरपंच, मुखिया, पटेल बाबू, पूरन पंडित का राज चले है। सरकारी योजना कहें है आदिवासियों के लिए, पर कहाँ कुछ होवे है? सब पैसा तो वही जंगली मानुस निगल जात है। थोड़ा-सा कहा सुना नहीं, उनके लठैत मारे-पीटे लगे हैं। अब तो बबुआ गाँव छोड़ने की सोचत है।' सचमुच वे दुर्दिन के पल थे। कोलियरी किनके लिए खुली थी, खेत-खलिहान किनके दबे थे, जंगली कंद-मूल, फल-फूल किनके बंद हुए थे, सखुए के उन लहलहाते वनों का क्या हुआ था, उनकी जगह सागवान के पेड़ क्यों लगाए गए थे। गाँव में राजनीति के बेहद घिनौने, फूहड़, भद्दे चक्र क्यों चलने लगे थे। पढ़े-लिखे बाबू बेबस भोले-भाले लोगों को बेरहमी से लूटते थे। आए दिन चोरी डकैती, बलवा, खून होने लगा था। बहू-बेटियाँ खुले आम किनसे लुटने लगी थी? खुला खुला, खूबसूरत, बेफिक्र, अल्हड़-सा पहाड़ी अंचल क्यों बेहया-सा बेपर्दा किया जाने लगा था?

काका की निरीह आँखों में बरसाती नदी से उमड़ते सवालों का मेरे पास कोई जवाब न तब था, न अब है। कुछ कह न पाया था सिवाय मंगलू काका के अंदेशे मरे चेहरे में झांकने के। तब काका की मर्जी के खिलाफ बाबू जी से कहला कर उन्हें वन-विभाग में छोटी-सी नौकरी दिला दी थी।

काका के अपने सिद्धांत थे, गौरव था, आत्माभिमान था। भूखों मरना पसंद हो पर किसी के आगे हाथ फैलाना मंजूर न था।

कॉलेज के दिनों गाँव जाना ज्यादा हुआ नहीं था। बस इधर-उधर से खबरें थोड़ी-बहुत मिल जाती थीं। उन्मुक्त, अल्हड़ लता की तरह चंदा खिंचती जा रही थी। काका की वह एक अलग चिंता थी। कभी-कभी चंदा का ख्याल आता तो मन बेचैन हो उठता। काश वह भी पढ़ती-लिखती तो !

'बिटिया को क्या पढ़ाना-लिखाना बबुआ, पढ़ सके तुम लोग जैसे....'

'ऐसी बात नहीं काका दुनिया तो बदल रही है न, जंगल-पहाड़, खेत-खलिहान, गाँव-घर नहीं बदले हैं क्या!'

'सो तो हौ बबुआ, मगर बिटिया तो चूल्हा ही फूंकेगी। उसके लिए कौन सा, कहाँ से राजकुमार आवेगा जी....।'

कभी सोचता चंदा का सहारा बन जाता तो, पर दिल की वह चाहत तो बस चाहत ही बनकर रह गयी। अगली बार जब आया, तब सब कुछ गुजर चुका था। आने में बहुत देर हो गयी थी।

उस साल माघ मेले का बहुत बड़ा आयोजन हुआ था। दूर-दूर से लोग आए थे। महीनों की मेहनत से जड़ी-बूटी खोजी थी मंगलू काका ने। मेले में अच्छी खासी बिक्री हो जाती थी। दुगुने उत्साह से तैयारी की थी। मेले में दो दिन तक रुकना था। चंदा के लिए एक नयी साड़ी, चूड़ियाँ, टिकुली, कंघी-बिंदी, दर्पण, फीते एक साथ सब कुछ लाकर घर देगा।

पर मेले से आकर जैसे उसकी दुनिया ही ढह गयी थी। सुनकर जैसे पागल हो गया था। अपने योग का वश चलता तो पलभर में सब कुछ उस क्रोधाग्नि में स्वाहा कर देता। पर समाज के उन तथाकथित ठेकेदारों में व्यवस्था का जो एकछत्र राज होता है, उससे भोले-भाले गरीब आदिवासी लड़कर भी हारते रहे थे।

जब सुना तो अंदर तक कितना तड़प उठा था। मंगलू काका के मेला जाने पर उस रात पूरन पंडित, पटेल साब, दरोगा बाबू एक साथ उस छोटी, मासूम, पवित्र, बेफिक्र झोपड़ी तक चले आए थे। जंगली जानवर और भी वहशी हो गए थे और गाँव वाले जानते हुए भी, नहीं देखने-सुनने का बहाना कर रहे थे। छोटी-सी दुनिया लुट गयी थी।

आने में बहुत देर हो गयी थी। उस रात आने पर मंगलू काका ने उसी अंदरूनी पीड़ा में जाने कौन-सा सोमरस तैयार किया था। अगली सुबह जब लोगों ने देखा वे चिर-निद्रा में सोये पड़े थे।

तब से कितने साल गुजर गए। उधर से गुजरते वक्त मंगलू काका, काकी, चंदा की कितनी यादें उभरती हैं। कोलियरी फील्ड ने पूरे पहाड़ी अंचल को समेट लिया है। किनके घर आबाद हुए, देश-समाज कितना आगे बढ़ा, कुछ कहा नहीं जा सकता। हाँ, उस पर्वतीय इलाके में आदिवासियों के जो मिट्टी के घर थे, जहाँ मंगलू काका जैसा छोटा-सुखी परिवार रहता था-अब न वह रह गया था और न वह प्रकृति-प्रांगण और न ढोलक-माँदर की वह डिमडिमाती आवाज जो उस देश के राजकुमार आजादी, बेफिक्री में खुशी के पलों को उजागर करते उन्मुक्त बजाते थे।

4.3.1.1.2 सारांश

पीटर पॉल एक्का की 'राजकुमारों के देश' में शीर्षक कहानी एक व्यक्ति की यादों पर आधारित है, जिसमें वह अपने बचपन के दिनों को याद करता है। जब वह छोटा बच्चा था, उसके बाबूजी का तबादला वन विभाग में एक दूर आदिवासी क्षेत्र में हो गया। वह इलाका पूरी तरह जंगलों से घिरा हुआ था। एक दिन जब वह घर में खेल रहा था, तभी

एक साँप ने उसे काट लिया। माँ बहुत घबरा गईं। बाबूजी उस समय किसी दूर गाँव में गए हुए थे और आसपास इलाज की कोई सुविधा नहीं थी। गाँव वाले दौड़े-दौड़े आए, लेकिन किसी के पास कोई उपाय नहीं था। उसी समय एक व्यक्ति वहाँ आया, जिसे गाँव के लोग 'मंगल वैद्य' कहते थे। उसने अपने अनुभव और जड़ी-बूटियों की मदद से उस बच्चे की जान बचाई। उस दिन से वह व्यक्ति उसके लिए 'मंगलू काका' बन गए। यहीं से उनके बीच एक गहरा रिश्ता बन गया।

उस घटना के बाद बच्चा रोज मंगलू काका के घर जाने लगा। वहाँ उसकी मुलाकात काका की पत्नी (काकी) और बेटी चंदा से हुई। चंदा बहुत भोली-भाली और मासूम थी और उसके चेहरे पर एक अलग ही प्राकृतिक सौंदर्य था। धीरे-धीरे बच्चा और चंदा अच्छे दोस्त बन गए। काकी उसे बहुत स्नेह देती थीं, जैसे वह उनका अपना बेटा हो। वह जब भी काका के घर जाता, वहाँ जंगल से लाए गए फल, कंद-मूल और स्वादिष्ट पकवान मिलते। और चंदा की मुस्कान से उसे घर जैसा अपनापन महसूस होता।

उसे आदिवासी जीवन की सादगी, उनकी आत्मीयता और प्रकृति से जुड़ा उनका जीवन बहुत अच्छा लगने लगा। समय बीतता गया और उनका रिश्ता और गहरा होता गया। वह और चंदा अक्सर जंगल जाते, साथ में फल बटोरते, नदी किनारे खेलते, रेत से महल बनाते और मछलियाँ पकड़ते। जब वह कभी शहर जाता, तो लौटते समय चंदा के लिए कुछ न कुछ जरूर लाता-कांच की चूड़ियाँ, बिंदी, रिबन या कंघी। चंदा उसे देखकर फूल की तरह खिल उठती।

लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े हुए, समाज की बंदिशें सामने आने लगीं। अब वे वैसे खुलेपन से नहीं मिल सकते थे जैसे पहले मिला करते थे। उन्हें समझ आने लगा कि अब यह दोस्ती पहले जैसी नहीं रह सकती। लड़का बड़ा हो गया और पढ़ाई के लिए शहर चला गया।

कई वर्षों बाद वह फिर छुट्टियों में गाँव लौटा, तो वहाँ बहुत कुछ बदल चुका था। गाँव में अब कोयला खदान (कोलियरी) खुल चुकी थी। बाहर के लोग आकर वहाँ बस गए थे। जंगल काटे जा रहे थे, खेत और खलिहान उजड़ रहे थे। गाँव की ज़मीन का मुआवजा भी भ्रष्ट सरपंच और मुखिया खा गए थे। अब आदिवासी लोग बेबस हो गए थे, जिनका जीवन जंगलों और ज़मीन पर आधारित था। मंगलू काका की आँखों में अब चिंता साफ दिखाई देती थी। उन्होंने अपने बैल तक बेच दिए और जड़ी-बूटियों के छोटे व्यापार में लग गए, लेकिन उनका आत्मसम्मान उन्हें किसी से मदद माँगने नहीं देता था।

अब गाँव पहले जैसा शांत, भोला और सादा नहीं रहा था। वहाँ राजनीति, लालच, हिंसा और शोषण ने अपनी जगह बना ली थी। अब गाँव पर पूँजीपतियों और नेताओं का कब्जा हो गया था। मंगलू काका, जो हमेशा जंगलों और प्रकृति से जुड़े रहे थे, अब वहाँ अपने को अजनबी महसूस करने लगे थे। उन्होंने एक दिन बड़ी उदासी से कहा, 'अब तो गाँव छोड़ना पड़ेगा बबुआ!' उनकी आँखों में बेबसी और हार साफ दिख रही थी।

उसी दौरान युवक के मन में अब भी कहीं न कहीं चंदा के लिए एक कोमल चाहत थी, लेकिन वह कभी रिश्ते में नहीं बदल पाई। न समाज ने इसकी इजाज़त दी, न परिस्थितियों ने। फिर एक दिन, जब मंगलू काका मेले में अपनी जड़ी-बूटियों को बेचने गए हुए थे, गाँव के सरपंच, पंडित और दरोगा ने मिलकर चंदा के साथ बहुत ही घिनौना और अमानवीय व्यवहार किया। गाँव वाले सब कुछ जानते थे, लेकिन कोई कुछ नहीं बोला। यह वो पल था जब उस मासूम, भोली और सादगी भरी दुनिया का अंत हो गया।

जब मंगलू काका वापस आए और उन्हें सच्चाई पता चली, तो वह अंदर से पूरी तरह टूट गए। उन्होंने ना कुछ कहा, ना किसी से शिकायत की। बस चुपचाप रात में जाने क्या खा लिया या पी लिया - अगली सुबह वे मृत पाए गए।

उनकी मौत सिर्फ एक व्यक्ति की मौत नहीं थी, बल्कि एक पूरे जीवन-दर्शन, आत्मगौरव और आदिवासी संस्कृति की हार थी। एक ऐसे व्यक्ति का अंत हुआ जिसने कभी किसी से कुछ नहीं माँगा, जो जंगलों और प्रकृति से प्रेम करता था, जो सादगी और सेवा में विश्वास रखता था। अब वह समाज की व्यवस्था के हाथों हार गया था। उनका जाना चुपचाप था, लेकिन उस खामोशी में एक गहरी चीख छुपी थी।

अब वर्षों बाद जब वह युवक उस गाँव से गुजरता है, तो वहाँ कुछ भी वैसा नहीं बचा। कोलियरी के विस्तार ने जंगलों, घरों, संस्कृति और रिश्तों को निगल लिया है। अब वहाँ न मंगलू काका हैं, न काकी, न चंदा। न ही वह ढोलक की थाप और माँदर की गूंज सुनाई देती है। सब कुछ खत्म हो चुका है।

अब जो बचा है, वो सिर्फ यादें हैं - एक उजड़ी हुई दुनिया की, टूटे हुए आत्मसम्मान की और उस भोलेपन की, जो शायद अब इस देश के किसी कोने में भी ज़िंदा नहीं बचा।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

पीटर पॉल एक्का की कहानी 'राजकुमारों के देश में' सिर्फ एक स्मृति-कथा नहीं है, बल्कि यह बदलते हुए समाज की मार्मिक तस्वीर प्रस्तुत करती है। यह कहानी उस सांस्कृतिक संक्रमण और सामाजिक अन्याय का दस्तावेज़ है, जिसमें आदिवासी जीवन की सादगी, आत्मगौरव और प्रकृति से जुड़ी जीवन-पद्धति पूँजी, राजनीति और शोषण की आग में झुलस जाती है।

मंगलू काका इस कथा के केंद्र में हैं — वे प्रकृति के उपासक, जड़ी-बूटी के ज्ञाता और आत्मसम्मान से परिपूर्ण व्यक्ति हैं, जिनके भीतर आदिवासी जीवन की जीवंत आत्मा बसती है। परंतु जब आधुनिकता और तथाकथित विकास की लहर उस गाँव में पहुँचती है, तो सब कुछ बदल जाता है — जंगल उजड़ जाते हैं, खेत-खलिहान छिन जाते हैं, और साथ ही मानवीयता, अपनापन व सामाजिक संतुलन भी नष्ट हो जाता है।

चंदा पर हुआ अत्याचार केवल एक लड़की पर अन्याय नहीं, बल्कि एक संपूर्ण संस्कृति के अपमान का प्रतीक है। मंगलू काका की मृत्यु आदिवासी अस्मिता और आत्मगौरव के उस अंतिम सांस की प्रतीक बन जाती है, जो व्यवस्था की निर्ममता और समाज की चुप्पी के आगे परास्त हो जाती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आदिवासी समाज और उनके पारंपरिक जीवन पर विस्तृत निबंध लिखें।
2. औद्योगिकीकरण और विकास के कारण आदिवासी समाज पर पड़े प्रभावों का विश्लेषण करें।
3. जंगल और प्रकृति के संरक्षण में मानव जिम्मेदारी पर विचार प्रस्तुत करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी और विकास का भद्लोक - अश्विवनी कुमार पंकज
2. आदिवासी चिंतन की भूमिका - हरि राम मीणा
3. वाचिकता - वंदना टेटे
4. आदिवासी समाज और शिक्षा - रामशरण जोशी
5. उपनिवेशवाद और संघर्ष - हैरोल्ड एस तोपनो
6. कलम को तीर होने दो (झारखंड के आदिवासी हिन्दी कवि) - रमणिका गुप्ता
7. महुआ का फूल(कहानी संग्रह) - मंगल सिंह मुणडा

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

मंगल सिंह मुंडा और हरिराम मीणा की कहानी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- इन कहानियों के माध्यम से आदिवासी समुदाय पर हो रहे शोषण को समझा जा सकता है।
- इनमें लोककथाओं के माध्यम से अभिव्यक्त नारी प्रतिरोध से परिचय प्राप्त किया जा सकता है।
- इनमें साहूकारों की कूटनीति का परिचय प्राप्त होता है, जिसका उपयोग वे आदिवासियों के शोषण के लिए करते हैं।
- इन कहानियों से आदिवासी साहित्य की सांस्कृतिक चेतना से अवगत हो सकता है।

Background / पृष्ठभूमि

भारत में आदिवासी समाज जल, जंगल और ज़मीन से अपने गहरे जुड़ाव के बावजूद, सदियों से आर्थिक शोषण, सामाजिक बहिष्कार और सांस्कृतिक उपेक्षा का शिकार रहा है। उनकी मुख्य समस्याएँ गैर-आदिवासी साहूकारों, जमींदारों और भ्रष्ट तंत्र द्वारा किए जाने वाले शोषण से जुड़ी हैं, जो उन्हें उनके वन उत्पादों का उचित मूल्य लेने से रोकते हैं और उन्हें गरीबी तथा भुखमरी के चक्र में फँसा देते हैं। प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता कब्ज़ा और विस्थापन उनकी आजीविका और सांस्कृतिक पहचान को खतरे में डालता है। विशेष रूप से आदिवासी महिलाएँ शोषण के दोहरे बोझ का सामना करती हैं, जहाँ वे एक ओर जाति और वर्ग के आधार पर उत्पीड़ित होती हैं, वहीं दूसरी ओर लैंगिक हिंसा और अत्याचारों की शिकार बनती हैं। गाँव के शक्तिशाली और भ्रष्ट तत्त्वों के कारण उन्हें अपने शारीरिक और आर्थिक अधिकारों के लिए लगातार संघर्ष करना पड़ता है। हालांकि, इन संघर्षों के बीच आदिवासी महिलाएँ ही सामुदायिक प्रतिरोध, सामाजिक चेतना और न्याय की प्रतीक बनकर उभरती हैं। वे शिक्षा और संगठन के माध्यम से अपने समुदाय को अधिकारों के लिए लड़ने हेतु प्रेरित करती हैं और परिवर्तन की वाहक बनती हैं। इस प्रकार, आदिवासी साहित्य इन महिलाओं के बलिदान, साहस और आत्मसम्मान को अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध की मशाल के रूप में चित्रित करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

शोषण, प्रतिरोध, आदिवासी, राधिका, अमली, महुआ, न्याय

Discussion / चर्चा

समकालीन आदिवासी साहित्य की दो महत्त्वपूर्ण और मार्मिक कहानियों-मंगल सिंह मुण्डा कृत 'महुआ का फूल' और हरिराम मीणा कृत 'अमली', आदिवासी जीवन के यथार्थ को सामने लाती हैं, जिसमें आर्थिक शोषण, सामाजिक अन्याय और सत्ता का दमन प्रमुख है। इन कहानियों में राधिका और अमली जैसी साहसी आदिवासी महिलाएँ केंद्रीय पात्र हैं, जो शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध की आवाज़ बनती हैं और आत्म-सम्मान तथा सामुदायिक न्याय के लिए अपना बलिदान तक देती हैं। इनके अध्ययन से हमें आदिवासी साहित्य की सांस्कृतिक चेतना और संघर्षशील नारी शक्ति का गहरा परिचय मिलता है।

4.4.1 मंगल सिंह मुंडा और हरिराम मीणा की कहानी

मंगल सिंह मुंडा की कहानी 'महुआ का फूल' आदिवासियों पर हो रहे शोषण का सशक्त चित्रण है। इसमें पारंपरिक आजीविका के दोहन, सामाजिक असमानताओं और स्त्री-शक्तिकरण के उभरते स्वरूप को संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है। कहानी आदिवासी जीवन, संघर्ष और उनकी अस्मिता को प्रभावी ढंग से दर्शाती है।

4.4.1.1 मंगल सिंह मुंडा-महुआ का फूल

मंगल सिंह मुण्डा का जन्म 28 अप्रैल 1945 को झारखण्ड के खूँटी जिले के रंगरोंग गाँव में हुआ। स्वर्गीय राम मुण्डा के सुपुत्र मंगल सिंह मुण्डा ने उत्कल विश्वविद्यालय (उड़ीसा) से पत्राचार द्वारा बी.ए. की शिक्षा प्राप्त की। वे मुण्डारी और हिन्दी - दोनों भाषाओं के सशक्त लेखक हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से आदिवासी जीवन, संस्कृति, परंपराओं और आधुनिक परिवर्तनों को गहराई से अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनाओं में माटी की गंध, लोकजीवन की सादगी और जनजातीय समाज की संघर्षशील चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

उनकी प्रमुख कृतियों में महुआ का फूल, हड़द सुकु, कामिनाला, रंगा चौडल रेन पुतुल, कॉलेज गेट, चोम्पा, एयाँगा माफ ताईत्रा में और राम रस जैसी कृतियाँ शामिल हैं। ये रचनाएँ मुण्डारी लोकसंस्कृति को साहित्यिक स्वर देने का उल्लेखनीय प्रयास हैं। स्वतंत्र लेखन के साथ-साथ उन्होंने पटकथा 'मेरा भारत महाभारत' भी लिखी है, जो

भारतीय सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक चेतना का सुंदर संगम प्रस्तुत करती है। मंगल सिंह मुण्डा आज भी जनजातीय साहित्य की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाने में सक्रिय हैं।

महुआ का फूल

माल कल भर के लिए बचा है। परसों यदि माल न मिला तो घर में चूल्हा नहीं जलेगा। बीबी-बच्चे भूखों मर जायेंगे क्यों कि गुजारा के लिए यही एक मात्र धंधा है मेरा। इसलिए आज शहर जाना जरूरी हो गया था।

मैं इसका पुराना एवं पूर्व परिचित ग्राहक होने के नाते सहज भाव से एवं बेहिचक कहने लगा - 'लाला जी और पूरे तीन मन चाहिये। कल रविवार है न। कल से गाँव में 'टुसु मेला' लगने वाला है। दो दिन तक चलेगा। दारू की नदी बहेगी। सोने में सुहागा समझो - हा.....हा.....हा.....'

मैंने भरसक आगे हँसने का प्रयास किया पर उसकी गम्भीर मुद्रा एवम् तमतमाया हुआ चेहरा देखकर सहम गया। रोज तो दो-पाँच किलो वाले ग्राहकों तक को, मुँह में हुक्के की नाली सटा कर प्रसन्न मुद्रा से स्वागत करता था। आज पूरे तीन मन वाले के साथ यह खामोशी ! वह हुक्का पी रहा था।

'लाला के बच्चे जाओ! उस हरामजादी राधिका की पूँछ में लटको। वही तुझे माल देगी। वही तेरा माई-बाप। मुई, मेरा करेजा टांग कर रख दी है -

'अचानक माथे पर त्योरियाँ चढ़ाते हुए उसने दहाड़ा था।'

क झे ये नी

से

ज़रा आगे बढ़ा तो देखा, सचमुच गोदाम खाली पड़ा था। न महुए के फूल, न कुसम तथा सखुए के बीज। पहले इन सामानों से गोदाम खचाखच भरा रहता था। पर आज खाली पड़ा था। मुझे आगे कुछ कहने का साहस न हुआ। उल्टे पाँव घर की ओर चल पड़ा। जाते-जाते, रास्ते भर एक जिज्ञासा बनी रही कि कहीं राधिका ने फिर कोई बवाल तो नहीं खड़ा कर दिया। उसी की बदौलत तो गत बरस सारे इलाके में चूल्हा तक नहीं जला था। सैकड़ों परिवार भूख से मर गये थे। लोग बाग हफ्तों कन्द मूल खा-खा कर बचे थे। मूलचंद याने मूलचंद गजराम दमड़ीवाला जैसे सेठ-साहूकारों से लगना, हम गरीब को कहाँ तक सुहाता। पर राधिका ने एक न मानी। शेषनाग के फन पर हाथ रखना, गुलाब की पंखुड़ियों को चूमना नहीं होता। देखा! उल्टे मूलचंद के गुण्डों ने उसका मुँह काला कर दिया था। कौन नहीं जानता। वह शहर का नामी बदमाश और गरीबों का शोषक है। इस इलाके में उसकी तूती यों ही नहीं बोला करती। उसके पास पैसा महुआ का फूल है, ताकत है, गुण्डे हैं, लठैत हैं। सुना तो यहाँ तक जाता है कि उसकी पहुँच

■ महुआ का फूल

बड़े-बड़े मिनिस्टरों, बैरिस्टरों तक है। पुलिस, दारोगा, इंस्पेक्टर सब उसके मोटे मुर्गों के समान हैं। ऐसे में कौन उससे भिड़ने का जोखिम उठाये? जरा सा उसके विरुद्ध मुँह खोलो तो जान की खैर नहीं। न बाबा न, मुझसे यह सब न होगा। माँ-बेटियों की इज्जत लुट ती है तो लुटने दो। कम से कम उनकी जान की तो खैरियत है। जान से प्यारी इज्जत है क्या? भाँड़ में जाये इज्जत-फिज्जत। और वह करमु, स्साला गाँव का सरपंच होकर भी उसका चमचा बन बैठा है। स्साला दलाल लुच्चा कहीं का! उससे मोटा माल पाता होगा। इसी को कहते हैं, अपने चिराग से अपने ही घर को आग लगाना। नहीं तो शहर का लौडा बीरजू को 'जारु रोसोम' (रात्रि बैठक शाला) का कैसे पता चलता! और यहाँ बलात्कार जैसे कुकर्म कैसे कर पाता।

मूलचंद गाँव के भोले भाले गरीब कंगालों का खून चूस कर अपनी तिजोरी भरने वाला विष वृक्ष है, जिसके लम्बे-लम्बे शाख सारे वन घाटियों में फैले हुए हैं। उसका चमचमाता दो तल्ला का कोठा, शहर के सुदूर किनारे, झोपड़पट्टियों के बीच स्थित है। दुबली घास के ऊपर कुकुरमुत्ता उग आया है, माना, दो बड़े व्यवसायिक नगर टाटा-राँची को जोड़ने वाली तेल चुपड़ा सड़क उसके आँगन से होकर जाती है। इसके पांच कोस पर एक पहाड़ी पगडंडी उत्तर की ओर जाती है। यह पगडंडी हमारे विशाल पहाड़ी-समुन्दर को मुख्य भूमि से जोड़ती है। हम पहाड़ी पगडंडी वाले लोग हैं। यहाँ न साइकिल की घर्घर, न मोटर का पाँ पाँ, न बैलगाड़ी की रें चें। हाँ, ग्रामीण बालाओं के सुरीले तान और नाना पक्षियों के कर्णप्रिय कलरव के बीच मूलचंद द्वारा स्थापित शराब के डीजल कारखाने की धों धों की आवाज जरूर सुनाई पड़ेगी। फिर सुदूर पहाड़ के गंजे बंजर भूमि पर एक लाल टिन वाला घर दिखाई पड़ेगा जहाँ राधिका शिक्षिका है। अंधे में काना राजा वाली कहावत के समान यही तो सारे इलाके में साक्षर हो पायी है। बाकी सब काला आखर भैंस बराबर हैं। उसके पास आधुनिक सुख-सुविधा है। रेडियो है, घड़ी है। सुगन्धित तेल-साबुन है। टेरीलीन की साड़ी है। इसीलिये वह जानती है कि किसानों के हित के लिये प्रत्येक शहर में उचित दर की दुकान सरकार ने खोल रखी है। अतः उन्हें सेठ-साहुकारों के झाँसे में नहीं आना चाहिये। अपने उत्पाद को सरकारी गोदामों में ही बेचना चाहिये।

राधिका गत साल से इस बात को ग्रामीणों के बीच प्रचार-प्रसार करने में महुआ का फूल जोर-जोर से लगी हुई है। यही कारण है कि वह मूलचंद के लिये कबाब में हड्डी बनी हुई है।

हमारे पास उत्पाद के नाम पर क्या है, पहाड़ी नदियों से खेत पटे तो दो कौर भात मिल जाये नहीं तो कन्द मूल, फल फूल खा कर, रात अंधेरे में लंबा हो जाओ। हाँ, प्रकृति की ओर से एक वरदान जरूर मिला हुआ है हमें। महुआ, कुसुम तथा सखुए की बहुतायत है यहाँ। आधा से अधिक आबादी इन्हें ही बेच-खा कर गुजर-बसर करती है। मुर्गा बाँग दिया नहीं कि औरतें, बच्चे-बच्चियाँ खाँची, टोकरी आदि लिये, बाघ-भालू, साँप-बिच्छू तथा सेठ मूलचंद के गुंडों की परवाह न करते हुए, जंगल की ओर निकल

पड़ते हैं। और टोकरी भर महुआ, कुसुम तथा सखुए आदि के फूल बीज बीन आते हैं। फिर इन्हें शहर जा कर बेच आते हैं। बस, यही तो हमारी जीवनचर्या है जो सदियों से अविराम चली आ रही है। मूलचन्द जीवन की इस विकट धारा को रोज सबेरे मुँह में हुक्का लगाये टुकुर-टुकुर देखता रहता। और लाभ-हानि के सूक्ष्म पहलुओं पर, बारीकी से जाँच पड़ताल करता। संभवतः सोचता होगा, क्यों न सारी वन-संपदाओं को कौड़ी के दाम खरीद लूँ और सोने के दाम बेचूँ। अपने गुण्डों और लठैतों द्वारा क्यों न इन्हें आतंकित किया जाय। हमें जान माल की धमकी दी गयी थी। सारा माल उसके द्वारा निर्धारित दाम में, उसे ही देना पड़ा। जो महुए के फूल से दारू बनाने का कारोबार करते थे, उन्हें भी कच्चा माल के लिये, अपने ही गोदाम से लेने का आदेश प्राप्त था। यही नहीं जो अपने माल से दारू बना कर बेचते थे उनके हाथ भी काट दिये गये। उसने गाँव में एक शराब का कारखाना खोल डाला ताकि खुदरा विक्रेताओं का धंधा ठप हो जाये।

जब मैं उस पगडंडी के पास पहुँचा, पुलिस की गाड़ी के पास एक व्यक्ति खड़ा मिला।

क्या हुआ भाई, यहाँ पुलिस? मैंने कौतुहलवश पूछा।

लाश ! लाश ! मर्डर ! मर्डर ! उसने भय मिश्रित मुद्रा में, गाँव की ओर इशारा करते हुए कहा।

इसके बाद कुछ नहीं पूछा। सीधे घर की ओर चलता बना। गाँव पहुँचा तो कलेजा धक से रह गया। राधिका के घर के आहाते में सारे गाँव की भीड़ उमड़ आयी है। स्त्री-पुरुष, बच्चे बूढ़े सभी। एक तरफ स्त्रियाँ। दूसरे तरफ पुरुष। पुरुषों के चेहरे उतरे महुआ का फूल देवी दुर्गा साहस की प्रतिमा लक्ष्मी बाई का स्मरण कर इस झण्डे के तले एक हो जायें हमारे वीर सेनानियों को आदेश है कि वे हमेशा समूह में रहें तथा अपने-अपने खोपों, बेणियों में तेज धार वाला ब्लेड रखा करें ताकि समय और कायदे के मुताबिक उस राक्षस का काम तमाम किया जा सके। मूलचंद के शोषण से मुक्ति मिल सके। सरकारी गोदामों में अपना माल बेच सकें ताकि हमें उत्पाद का उचित दाम मिल सके।'

भाषण की समाप्ति के बाद पुलिस उसे ले गयी। बीरजू की हत्या के आरोप में उसपर मुकदमा चला। पर बदनसीब राधिका। वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते। उसे फाँसी की सजा हो गयी।

उस दिन उसके अंतिम दर्शन के लिए गाँव से भीड़ उमड़ आयी थी। मैं भी आया था। फौलादी नारों से जेलखाना की चहारदीवारी फटी जा रही थी - राधिकाबाई! अमर रहे!..... ब्लेड सेना जिन्दाबाद..... करमू सरपंच मुर्दाबाद..... मूलचंद हाय हाय..... तत्क्षण ब्लेड सेना के दो सेनावाहिनी राधिका की लाश को अपने झण्डे में लपेट लिया। झण्डे के ऊपर हरे हरे मोटे, अक्षरों में लिखा हुआ था 'महुआ का फूल'।

4.4.1.2 सारांश

- आदिवासी जीवन और उनके संघर्ष की मार्मिक तस्वीर

मंगल सिंह मुंडा की कहानी महुआ का फूल आदिवासी जीवन और उनके संघर्ष की मार्मिक तस्वीर प्रस्तुत करती है, जहाँ लोग अपनी जीविका के लिए महुआ, कुसुम और सखुए के फूल और बीज इकट्ठा करके बेचते हैं। मुख्य कथावाचक एक छोटे व्यापारी हैं, जिनका जीवन पूरी तरह से इन उत्पादों पर निर्भर है। यदि ये फूल और बीज समय पर नहीं मिलते, तो उनके परिवार का चूल्हा नहीं जल पाएगा और भूख से परिवार को खतरा होगा। इस संघर्ष के माध्यम से कहानी ग्रामीणों की रोज़मर्रा की कठिनाइयों और उनके अस्तित्व की लड़ाई को उजागर करती है।

- राधिका, एक शिक्षिका और सामाजिक कार्यकता

कहानी का मुख्य संघर्ष गाँव के शक्तिशाली और भ्रष्ट सेठ-साहूकार मूलचंद के साथ है, जो अपने गुंडों और लठैतों के माध्यम से ग्रामीणों पर नियंत्रण रखता है। वह अपने लाभ के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर कब्ज़ा करना चाहता है और किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य लेने से रोकता है। इसके विपरीत, राधिका, एक शिक्षिका और सामाजिक कार्यकर्ता, ग्रामीणों को सरकारी गोदामों के माध्यम से उचित मूल्य पर उत्पाद बेचने की सलाह देती है और उन्हें मूलचंद के शोषण से बचने के लिए जागरूक करती है। उसका यह साहस और चेतना मूलचंद के लिए चुनौती बन जाती है और संघर्ष की स्थिति पैदा होती है।

- 'ब्लेड सेना'

कहानी हिंसा और अत्याचार की ओर बढ़ती है, जब सरपंच करमू की मिलीभगत से शहर के एक बदमाश बीरजू ने गाँव की महिलाओं के साथ दुष्कर्म किया। शोषण और अन्याय की इस पराकाष्ठा से तंग आकर, राधिका ने गुप्त रूप से 'ब्लेड सेना' नामक एक समूह बनाया और बीरजू की हत्या का आदेश दिया। पुलिस के सामने राधिका ने निडरता से अपने अपराध को स्वीकार किया, यह कहते हुए कि यह कदम गाँव वालों को मूलचंद के शोषण से मुक्ति दिलाने और अपने उत्पाद का उचित दाम दिलाने के लिए उठाना ज़रूरी था।

SGOU

राधिका पर हत्या का मुकदमा चला और उसे फाँसी की सज़ा हुई। उसकी शहादत अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रतीक बन गई। अंतिम दर्शन के लिए उमड़ी भीड़ ने शोषण के ख़िलाफ़ नारे लगाए और 'ब्लेड सेना' के दो सेनावाहिनी राधिका की लाश को अपने झण्डे में लपेट लिया। झण्डे के ऊपर हरे हरे मोटे, अक्षरों में लिखा हुआ था महुआ का फूल। इस तरह, राधिका ने अपनी जान देकर भी गाँव के गरीबों के संघर्ष की मशाल जलाए रखी और महुआ का फूल केवल एक उत्पाद नहीं, बल्कि प्रतिरोध और गरिमा का प्रतीक बन गया।

- महुआ का फूल केवल एक उत्पाद नहीं, बल्कि प्रतिरोध और गरिमा का प्रतीक

कहानी में प्रकृति और ग्रामीण जीवन का गहरा संबंध भी दिखाया गया है। महुआ, कुसुम और सखुए केवल आर्थिक संसाधन नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण समाज की संस्कृति, जीवनशैली और आत्मनिर्भरता का आधार हैं। मूलचंद का शराब का कारखाना और उसका गोदाम शक्ति और भ्रष्टाचार का प्रतीक हैं, जो ग्रामीणों के जीवन पर नियंत्रण रखने के लिए बनाए गए हैं। वहीं, राधिका शिक्षा, न्याय और सामाजिक जागरूकता का प्रतीक हैं, जो ग्रामीणों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा देती हैं।

- महुआ, कुसुम और सखुए केवल आर्थिक संसाधन नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण समाज की संस्कृति, जीवनशैली और आत्मनिर्भरता का आधार हैं

कहानी का मुख्य संदेश यह है कि सामाजिक अन्याय और अत्याचार के बावजूद जागरूकता, शिक्षा और सामूहिक प्रयास से परिवर्तन की संभावना बनी रहती है। यह दिखाती है कि गरीब और दबे-कुचले लोग, चाहे व्यक्तिगत बलिदान क्यों न करें, अपने अधिकारों के लिए संगठित होकर लड़ सकते हैं। बलिदान, प्रतिरोध और सामूहिक चेतना की यह कहानी ग्रामीण जीवन की कठोर वास्तविकताओं के बीच आशा और साहस की प्रेरणा देती है।

- ग्रामीण जीवन की कठोर वास्तविकताओं के बीच आशा और साहस की प्रेरणा

4.4.2 हरिराम मीणा-अमली

हरिराम मीना की कहानी 'अमली' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें सत्ता के छल-कपट और सामाजिक अन्याय का सजीव पर्दाफाश किया गया है। यह कहानी सत्ता की गुप्त चालों और उनके प्रभावों को स्पष्ट रूप से उजागर करती है।

4.4.2.1 हरिराम मीणा

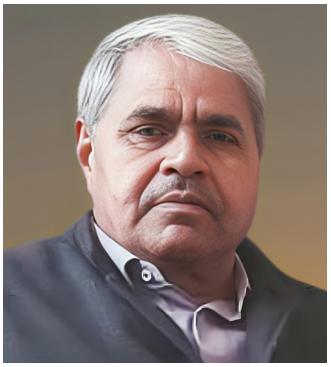

हरिराम मीणा (जन्म : 1 मई 1952, सवाई माधोपुर, राजस्थान) एक प्रतिष्ठित आदिवासी बुद्धिजीवी, कवि, चिंतक और लेखक हैं। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से

- अखिल भारतीय आदिवासी साहित्य मंच, दिल्ली के अध्यक्ष

राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की और भारतीय पुलिस सेवा में पुलिस महानिरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में वह अखिल भारतीय आदिवासी साहित्य मंच, दिल्ली के अध्यक्ष हैं।

उनका साहित्य आदिवासी समाज के यथार्थ और संघर्ष को प्रमुखता से प्रस्तुत करता है, जिसकी अभिव्यक्ति कविता, उपन्यास, यात्रा-वृतांत और विमर्श की पुस्तकों में हुई है। उनकी प्रमुख कृतियों में कविता-संग्रह ('हाँ, चाँद मेरा है', 'सुबह के इंतज़ार में', 'आदिवासी जलियाँवाला एवं अन्य कविताएँ') और प्रबंध-काव्य ('रोया नहीं था यक्ष') शामिल हैं। उनका कार्य दर्जनों विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम का हिस्सा रहा है और उन पर अनेक शोध कार्य किए गए हैं।

- राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च 'मीरां पुरस्कार'

हरिराम मीणा को साहित्य और पुलिस सेवा में उनके योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च 'मीरां पुरस्कार', बिड़ला फ़ाउंडेशन के 'बिहारी पुरस्कार', राष्ट्रपति पुलिस पदक और केन्द्रीय हिंदी संस्थान द्वारा 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन सम्मान' प्रमुख हैं।

अमली

डांग का दक्षिणांचल करौली जिला। करौली से बयालीस किलोमीटर की दूरी पर है तिमनगढ़ का प्राचीन किला। अष्टधातु व लाल पत्थर की मूर्तियों के लिये प्रसिद्ध रहा है यह किला। अपने जमाने की बेजोड़ वास्तुकला का आभास कराते हैं यहाँ के महल व मंदिरों के खंडहर। ग्यारहवीं शताब्दी में निर्मित इस किले का जीर्णोद्धार बयाना के राजा तिमनपाल ने तेरहवीं सदी में करवाया। तभी से यह तिमनगढ़ कहलाया। पहले जाना जाता था सागर के किला के नाम से।

हरजीनाथ डांग में घुमक्कड़ी करता हुआ मासलपुर आया जहाँ गोरखपंथियों का एक मठ हुआ करता था। मठ में वह दो महीना रहा। हरजीनाथ ने नवरात्रा व दशहरा के

कर्मकांड मठ में ही किये। यहीं पर अपने पड़ाव के दौरान उसने तिमनगढ़ की उस नट नी की कथा सुनी जो किसी कनफटे नाथ ने सुनायी।

चौमासा की ऋतु बीत गयी थी। समतलीय इलाकों में रहनेवाले गूजर व मीणा जाति के पशुपालक अपनी मवेशियों को लेकर डांग के पहाड़ों से नीचे उतर रहे थ। उनकी अस्थायी खिरकाड़ियाँ खाली होती जा रही थी। बरसात के पूरे चार महीनों की अवधि में डांग की खिरकाड़ियाँ आबाद रहती हैं विशेषकर दुधारू मवेशियों से। यहाँ पशुओं के हरे चारे की कोई कमी नहीं। डांग की सारी धरती घास की हरी चादर ओढ़े रहती है। बीच बीच में नाना प्रकार के फूल-फलवान पेड़-पौधों व अन्य वनस्पतियों की बहुतायत के साथ।

पास ही थी सागर नामक झील जो लबालब भरी थी निथरे पानी से। झील के किनारे की ज़मीन पर लहलहा रही थी हरी दूब की वसुंधरा-केशराशि। मंद-मंद बह रही हवा में बरसात की छुअन महसूस की जा सकती थी।

मासलपुर के मठ से हरजीनाथ सागर झील के किनारे होता कोड्यापुरा की ओर जा रहा था।

एक युवा ग्वाला पास में बकरियाँ चरा रहा था।

'जै रामजी की रे नाथ बाबा!' उस ग्वाला ने हरजीनाथ का अभिवादन किया।
'जै भोलेनाथ!'
'किते जारोअ नाथ बाबा?'
भैया, कोड्यापुरा कू जारो ऊँ।'

गूजर जाति के उस युवक ने हरजीनाथ को बताया कि 'वहाँ के लोगों का विश्वास है कि इस झील में पारस पत्थर है जो मिल सकता है किसी को भी कभी भी।'

'अरे लाला, हमें का करनो है सोनेन को। दो टेम की रोटी मिल जावे तो ऊपरवारे की महर। हम तो याई बात के काजे संतन कूं अर वा भोलेनाथ कूं भजें।'

'ई नटनी को खम्भो किते है भैया?' हरजीनाथ ने उत्सुकता ज़ाहिर की

'ऊ रो बाबा।' युवक ने दाहिना हाथ उठाकर नटनी के खम्भा की ओर इशारा किया।

'अच्छा भैया, भोलेनाथ सुखी रखे तोय।' युवक को आशीर्वाद देता हुआ हरजीनाथ नटनी के खम्भा की तरफ चला गया। तिमनगढ़ से करीब दो किलोमीटर की दूरी पर है नटनी का खम्भा।

वहीं हरजीनाथ को जानकारी मिली कि तिमनगढ़ के पास अस्थायी डेरा लगाया था एक बार नटों के घूमंतू समूह ने। उस कबीला में थी एक युवा नटनी जिसका नाम था अमली। इस नाम के पीछे भी एक अजीब संयोग था। अमली का बाप अमल अर्थात अफीम का सेवन करता था। उस अमलची की बेटी का नाम किसी बुज़ुर्ग महिला ने

अमली रख दिया। इसी नाम से जानी जाती रही अमली जिंदगीभर। अमली भी तो आदी थी किसी चीज़ की, मगर वह चीज़ अमल न होकर थी रस्सी पर चलने की नट-कला। नट-विद्या के तमाशबीन अमली को रस्सीवाली नटनी भी कहने लगे थ।

'तेरा बहुत नाम सुना है मैंने। मेरे किला के सदर दरवाजे से एक कोस तक रस्सी पर चलकर जो अमली तू बता दे तो मैं तिमनगढ़ का आधा राज तुझे दूँगा।' लम्बे बांस के सहारे रस्सी पर चलने की कला में निपुण अमली को एक दफ़ा तिमनगढ़ के राजा ने चुनौती दे दी।

अमली ने एक कोस की दूरी तक रस्सी पर चल सकने के आत्मविश्वास के साथ अपने कबीले के बुजुर्गों से सलाह-मशविरा किया। उन्होंने अमली को बहुत मना किया कि 'वचन नहीं निभा सकेगी तो पता नहीं राजा कुछ उल्टा-सीधा फैसला कर बैठे और हमारे ऊपर गैल चलती कोई आफत आ जाये तो हम क्या करेंगे?'

'हम ठहरे घुमक्कड़ डेराबंद नट। हमें क्या मतलब राजपाट से?' एक वृद्धा ने यहाँ तक कह डाला।

'राजा ने मेरी परिच्छा लेनी चाई है। मैं कैसे पीछे हट जाऊंगी?' अमली अड़ गयी।

उसके कबीला के लोगों को विश्वास था कि उनकी अमली ना अपनी बात में पीछे हटने वाली और ना रस्सी की चाल में पिटने वाली।

तिमनगढ़ के राजा ने अमली की परीक्षा लेने का दिन और वक्त तय कर दिया। किला के मुख्य द्वार का खम्भा बनाया गया रस्सी-चाल कला का प्रस्थान बिंदु। वहाँ से एक कोस की दूरी पर एक नया खम्भा बनाया गया था इस चुनौती की चाल के अंत हेत।

दोनों खम्भों पर मज़बूत रस्सी खींचकर बांध दी गयी। बीच बीच में रस्सी को साईड सपोर्ट अलग से दिया गया ताकि रस्सी लम्बाई की वजह से बीच में कहीं नीचे नहीं लटके।

अमली चढ़ गयी पालवंशीय किला के पहले खम्भा पर। संतुलन बनाये रखने हेतु हाथ में लिये हुए थी लम्बा बांस। अमली के कबीला के सारे लोग आज वहाँ मौजूद थे। कोई भी खाने-कमाने बस्ती में नहीं गया। राजधानी नगर तिमनगढ़ की प्रजा सैंकड़ों की तादात में वहाँ उपस्थित थी। तमाशा देखने आये हुए थे राजसभा के पदाधिकारीगण और तिमनगढ़ के नरेश व रानी सहित राज परिवार के सदस्य।

रस्सी पर अमली का करतब देखने उमड़ पड़ा सारा शहर। राजदुर्ग में रहने वाले लोग आये थे। दरबार के लोग आये थे। महलों के लोग आये थे। रनिवास के लोग आये थे। बहुत कठिन था यह कह सकना कि कौन शख्स ऐसा था जो अमली के तमाशा से दूर था?

तंग रस्सी पर अमली चल दी। दोनों हाथों में थामे लम्बा बांस। सधे हुए पांव हौले

हौले बढने लगे कदम दर कदम। सांवले वर्ण की छरहरे शरीर की अमली किसी सर्कस के सितारे सी बढ़ी चली जा रही थी हवा में। पैर थे रस्सी के सहारे और हाथ बांस का संबल थामे।

दर्शकों की अंगुलियाँ स्वतः ही दब गयी थी दांतों तले।

आश्चर्य!

अमली पहुँच गयी दूसरे खम्भा तक। जीत गयी अपना आधा महाभारत।

सब ख़ुश हुए। अमली के कबीला के लोग सबसे ज्यादा। आम दर्शक भी कम ख़ुश नहीं थे। राज दरबारी तटस्थ दिखायी दे रहे थे। तिमनगढ़ के राजा के ललाट पर सलवटें पड़ने लगीं। राज्य की रानी का दिल बैठता सा प्रतीत हुआ।

अमली की अभी आधी परीक्षा शेष थी। उसे किला के सदर द्वार के खम्भा पर वापस लौटना था।

पूरे हौसले के साथ अमली ने वापसी की यात्रा आरंभ कर दी। अमली के प्रस्थान बिंदु वाले खम्भा के निकट तिमनगढ़ की रानी का आसन था। पर्दानशीन होकर वह सारा मंज़र देख रही थी। लोगों की निगाहें तो उस खम्भे की तरफ होनी ही थी जिधर से अमली लौट रही थी। अचानक रानी की आज्ञा से पर्दा और फैला दिया गया। किलेवाले खम्भा से बंधी रस्सी को पर्दे की ओट में ले लिया गया।

अमली ने अपनी वापसी यात्रा आधी से अधिक पूरी कर ली। हाथों में पकड़े बांस के संतुलन से वह सधे कदम बढ़ी चल रही थी पूरी तरह अपना आत्मविश्वास बनाये हुए।

उस दिन सुबह से बह रहा मंद पवन अपने आप थम गया जैसे वह भी देखना चाह रहा था अमली के इस करतब का।

बस, कुछ पल और।

सबको लग गया अमली राजा द्वारा दी गयी चुनौती को पूरा करने वाली ह। अपने कबीले के लोगों को दिया गया वचन निभाने वाली ह। सभी दर्शकों को चकित करने वाली ह। जग में अपना नाम कमाने वाली है।

तिमनगढ़ की रानी को ज्यों ज्यों अमली किले के सदर दरवाजे के खम्भे की ओर आती दिखी त्यों त्यों उसे तिमनगढ़ का आधा राज्य अमली की तरफ खिसकता हुआ प्रतीत हो रहा था। राजा मन ही मन कसमसा रहा था, 'मैंने बेवकूफी में यह कैसी शर्त रख दी।' वह किंकर्तव्यविमूढ़ था।

यकायक! अमली गिरती है रस्सी से नीचे धरती पर। हाथों में कसकर पकड़ा हुआ बांस छूट जाता है हवा में।

'यह कैसे!' सब चौके।

तिमनगढ़ के किला के सदर दरवाजा के खम्भा से बांधी गयी रस्सी को बीच में से चुपके से काट दिया गया रानी के हुकुम से।

डांग अंचल के दक्षिण दिशा के पठारों के मध्य में अवस्थित तिमनगढ़ के उस ऐतिहासिक दुर्ग के खंडहरों को देखने जो भी सैलानी जाता है उसे अमली नटनी का यह किस्सा अवश्य सुनाया जाता है जिसका शिखर वाक्य इस तरह समाप्त होता है कि 'घुमंतू कबीला के नटों की उस होनहार लड़की अमली ने सभी श्रेणी के दर्शकों को साक्षी मानकर मरने से ठीक पहले 'तुम सब गवाह हो इस बात के कि मेरे साथ घोर अन्याय किया गया है। देखना लोगो, बहुत वक्त नहीं गुजरेगा' कहते हुए राजा व रानी को यह शाप दिया था कि 'अरे, ओ तिमनगढ़ के राजा-रानियों! तुम्हारा यह गढ़ तुम्हारी जिंदगी के रहते ही उजड़ जायेगा।'

अमली नटनी हारकर भी अमर हो गयी और तिमनगढ़ का राजा जीत कर भी हार गया था। इस कहानी की खलनायिका बनी तिमनगढ़ राज की रानी।

तिमनगढ़ के किले को नफ़रतभरी निगाहों से देखता हुआ हरजीनाथ आगे बढ़ गया था कोड्यापुरा की ज़ानिब जहाँ रहता था उसका दोस्त श्रीफल गूजर।

4.4.2.2 सारांश

- अमली के साहस, कला और अन्याय के विरुद्ध उसके प्रतिरोध

हरिराम मीणा की कहानी 'अमली' राजस्थान के करौली ज़िले के दक्षिणांचल डांग क्षेत्र में स्थित तिमनगढ़ किले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित एक मार्मिक लोकगाथा है। यह कथा एक घुमंतू नटनी अमली के साहस, कला और अन्याय के विरुद्ध उसके प्रतिरोध को प्रस्तुत करती है।

कहानी की शुरुआत हरजीनाथ नामक एक घुमक्कड़ साधु से होती है, जो मासलपुर के मठ में कुछ समय ठहरने के बाद सागर झील की ओर जा रहा होता है। रास्ते में उसे एक ग्वाले से अमली नटनी की कथा सुनने को मिलती है।

बहुत समय पहले तिमनगढ़ के पास नटों का एक घुमंतू कबीला रहता था। उसी में थी अमली, जो रस्सी पर चलने की विलक्षण कला में निपुण थी। उसका नाम इसलिए पड़ा क्योंकि उसके पिता अमल (अफीम) के आदी थे।

एक दिन तिमनगढ़ के राजा ने उसकी कला की परीक्षा लेने के लिए चुनौती दी कि यदि वह किले के मुख्य द्वार से एक कोस दूर तक रस्सी पर चलकर दिखा दे, तो उसे आधा राज्य दे देगा। अमली ने अपने कबीले के लोगों की मना करने के बावजूद यह चुनौती स्वीकार कर ली।

नियत दिन किले के सामने भीड़ उमड़ पड़ी। राजा, रानी और दरबारी सब उपस्थित थे। अमली ने अपने अद्‌भुत संतुलन और आत्मविश्वास से रस्सी पर चलना शुरू किया और सफलतापूर्वक दूसरे खंभे तक पहुँच गई। अब उसे वापस लौटना था।

जब अमली वापसी की ओर बढ़ने लगी, तो रानी के मन में ईर्ष्या और भय जाग उठा - यदि अमली जीत गई तो आधा राज्य उसे मिल जाएगा। रानी ने छलपूर्वक रस्सी कटवा दी। अमली हवा में झूलती हुई नीचे गिर पड़ी। मरते समय उसने कहा -

"तुम सब गवाह हो, मेरे साथ अन्याय हुआ है। तिमनगढ़ के राजा-रानी, तुम्हारा यह गढ़ तुम्हारी ज़िंदगी में ही उजड़ जाएगा।"

अमली का यह श्राप सच साबित हुआ - तिमनगढ़ उजड़ गया और आज उसके केवल खंडहर शेष हैं।

कहानी में अमली केवल एक कलाकार नहीं, बल्कि साहस, आत्मसम्मान और न्याय की प्रतीक स्त्री के रूप में उभरती है। वह अन्याय के विरुद्ध आवाज़ बनती है, जबकि रानी ईर्ष्या और अहंकार का प्रतीक है।

लेखक ने इस कथा के माध्यम से नट समुदाय की कला, संघर्ष, सामाजिक स्थिति और स्त्री-सशक्तिकरण को गहराई से चित्रित किया है। लोकभाषा, सजीव वर्णन और संवेदनशील शैली से सजी यह कहानी पाठक के मन में करुणा, आक्रोश और प्रेरणा - तीनों भावों को जगाती है।

अंततः, 'अमली' एक ऐसी लोककथा है जो यह सिखाती है कि सत्य और साहस भले ही बलिदान माँगें, पर वे कभी पराजित नहीं होते। अमली हारकर भी अमर हो जाती है, जबकि तिमनगढ़ का राजा और रानी जीतकर भी इतिहास में मिट जाते हैं।

- सत्ताधारी कैसे आदिवासी कला और जीवन-दृष्टि को केवल मनोरंजन की वस्तु मानते हैं, न कि सम्मान का पात्र

हरिराम मीणा की 'अमली' केवल नारी-संघर्ष की गाथा नहीं, बल्कि आदिवासी अस्मिता और उनके सांस्कृतिक स्वाभिमान का सशक्त उद्‌घोष है। अमली का चरित्र हाशिए पर स्थित उस पूरे समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है जिसे सदियों से गैर-आदिवासी सत्ता संरचनाओं (राजा और रानी) द्वारा कमतर आँका गया है। अमली का राजा और रानी के सामने अपनी कला का प्रदर्शन करना सत्ताधारी और आदिवासी वर्ग

के बीच के ऐतिहासिक तनाव को दर्शाता है; यह दिखाता है कि सत्ताधारी कैसे आदिवासी कला और जीवन-दृष्टि को केवल मनोरंजन की वस्तु मानते हैं, न कि सम्मान का पात्र। रानी की ईर्ष्या और छल केवल व्यक्तिगत दुर्भावना नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक सांस्कृतिक शोषण का प्रतीक है जहाँ मुख्यधारा का समाज आदिवासी प्रतिभा का लाभ उठाना चाहता है, पर उन्हें सम्मान या न्याय नहीं देना चाहता।

कहानी में अमली का संघर्ष केवल व्यक्तिगत चुनौतियों से नहीं है, बल्कि उस समाज और सत्ता संरचना से है जो उसे उसकी जाति, वर्ग और लिंग के त्रिकोण में फँसाकर कमतर समझती है। अमली का साहस और आत्मसम्मान आदिवासी समुदायों के अपने जल, जंगल, ज़मीन और संस्कृति के प्रति गहरे जुड़ाव से उपजे प्रतिरोध का प्रमाण है। उसका अन्याय के सामने झुकने से इनकार करना, आदिवासी दर्शन का हिस्सा है, जहाँ सामुदायिक सत्य और न्याय को व्यक्तिगत लाभ से ऊपर रखा जाता है। अमली का अंत में गिरना केवल शारीरिक पराजय है; उसका आत्मसम्मान और न्याय की भावना उसे अमर बना देती है, जबकि अत्याचार का प्रतीक सत्ता ध्वस्त हो जाती है। इसके अलावा, कहानी में लोकभाषा का सजीव चित्रण आदिवासी वाचिक परंपरा और उनकी सहज जीवनशैली को बल देता है, जो इस कहानी को उनकी जीवन-दृष्टि के प्रति अधिक प्रामाणिक बनाता है।

- उसका अन्याय के सामने झुकने से इनकार करना, आदिवासी दर्शन का हिस्सा है

अमली के माध्यम से लेखक ने यह दर्शाया है कि हाशिए पर रहने वाली आदिवासी महिला भी अपनी प्रतिभा और अदम्य साहस से इतिहास को बदलने की शक्ति रखती है। अमली का बलिदान यह स्थापित करता है कि सत्ता और अहंकार (राजा-रानी का) भले ही तात्कालिक रूप से मजबूत दिखें, लेकिन वे अस्थायी होते हैं। इसके विपरीत, न्याय, सत्य और आदिवासी प्रतिभा शाश्वत होती है। यह कथा आदिवासी नारी के सशक्तिकरण की एक सशक्त छवि प्रस्तुत करती है, यह संदेश देती है कि बाहरी शोषण और अन्याय के बावजूद, आदिवासी आत्मसम्मान और उनकी मौलिक कला कभी पराजित नहीं होती, बल्कि अमर होकर समाज के लिए प्रेरणा बन जाती है।

- आदिवासी नारी के सशक्तिकरण की एक सशक्त छवि

'अमली' एक प्रेरणादायक कथा है जो यह संदेश देती है कि अन्याय और बलिदान के बावजूद साहस, सत्य और आत्मसम्मान अमर रहते हैं। यह कहानी आदिवासी नारी के संघर्ष, उनके हक और सशक्तिकरण का एक सशक्त प्रतीक है, जो यह दिखाती है कि सत्ता और अहंकार अस्थायी होते हैं, जबकि न्याय और प्रतिभा शाश्वत होती है।

SGOU

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मंगल सिंह मुण्डा की 'महुआ का फूल' और हरिराम मीणा की 'अमली' - दोनों कहानियाँ समकालीन आदिवासी साहित्य की सशक्त रचनाएँ हैं जो न केवल आदिवासी जीवन की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करती हैं, बल्कि उनके भीतर छिपे सामाजिक अन्याय, शोषण, प्रतिरोध और अस्मिता के गहरे स्वर को भी सामने लाती हैं। इन दोनों कहानियों में आदिवासी समाज के दो भिन्न किन्तु समान रूप से संघर्षशील पक्ष दिखाई देते हैं - 'महुआ का फूल' में आर्थिक और सामाजिक शोषण के खिलाफ सामूहिक प्रतिरोध की चेतना है, जबकि 'अमली' में सांस्कृतिक और नैतिक अन्याय के विरुद्ध व्यक्तिगत साहस और आत्मसम्मान की लड़ाई।

मंगल सिंह मुण्डा की 'महुआ का फूल' एक गाँव की उस शिक्षिका राधिका की कथा है जो साहूकार मूलचंद के शोषण से ग्रामीणों को मुक्त कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देती है। राधिका का संघर्ष केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे ग्रामीण समाज की अन्याय के विरुद्ध सामूहिक चेतना का प्रतीक है। वह शिक्षा, जागरूकता और संगठन के माध्यम से परिवर्तन की राह दिखाती है। कहानी में "महुआ का फूल" केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि प्रतिरोध, स्वाभिमान और सामूहिक एकता का प्रतीक बन जाता है। राधिका का फाँसी पर चढ़ना पराजय नहीं, बल्कि उसकी शहादत को जनसंघर्ष की प्रेरक मशाल में बदल देता है।

वहीं, हरिराम मीणा की 'अमली' में एक नटनी की कथा है जो अपने असाधारण कौशल, आत्मविश्वास और न्यायप्रियता के कारण सत्ता से टकरा जाती है। अमली का साहस, रानी की ईर्ष्या और छल, तथा उसके श्राप का सच होना - ये सब इस बात को उजागर करते हैं कि सत्ता और अहंकार का साम्राज्य अस्थायी होता है, जबकि सत्य, न्याय और साहस अमर रहते हैं। अमली का पतन उसके शरीर का पतन है, पर उसकी आत्मा और उसका सत्य सदा जीवित रहता है। वह आदिवासी स्त्री के उस साहस और आत्मगौरव का प्रतीक बन जाती है जो सदियों से अन्याय के खिलाफ संघर्ष करता आया है।

दोनों कहानियों में स्त्री पात्र - राधिका और अमली - आदिवासी नारी शक्ति की सशक्त छवियाँ हैं। वे समाज की परंपरागत सीमाओं को तोड़कर अपने समुदाय के हक और सम्मान के लिए खड़ी होती हैं। राधिका जहाँ शिक्षित, संगठित और सामाजिक चेतना का प्रतीक है, वहीं अमली परंपरागत कला और आत्मसम्मान का प्रतीक है। दोनों ही यह दर्शाती हैं कि स्त्रियाँ केवल सहनशील नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक भी हो सकती हैं।

इन रचनाओं का सामाजिक और साहित्यिक महत्व इस बात में निहित है कि ये आदिवासी समाज को 'हाशिए' से 'केंद्र' में लाती हैं। वे मुख्यधारा की सत्ता-संरचनाओं, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक उपेक्षा के विरुद्ध आदिवासी दृष्टिकोण को स्थापित करती हैं। लेखक दोनों अपने-अपने स्तर पर यह स्पष्ट करते हैं कि आदिवासी जीवन केवल गरीबी या पिछड़ेपन का पर्याय नहीं है, बल्कि उसमें जीवन के प्रति गहरी संवेदना, प्रकृति से एकात्मता और न्याय के प्रति अडिग आस्था है।

SGOU

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'महुआ का फूल' कहानी में राधिका का संघर्ष और सामाजिक चेतना का चित्रण कीजिए।
2. 'अमली' कहानी की अमली का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. 'महुआ का फूल' और 'अमली' की नायिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।
4. दोनों कहानियों में प्रकृति और आदिवासी जीवन का संबंध को स्पष्ट कीजिए।
5. मंगल सिंह मुण्डा और हरिराम मीणा के लेखन में आदिवासी अस्मिता और सांस्कृतिक चेतना की तुलना कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी और विकास का भद्लोक - अश्विवनी कुमार पंकज
2. आदिवासी चिंतन की भूमिका - हरि राम मीणा
3. वाचिकता - वंदना टेटे
4. आदिवासी समाज और शिक्षा - रामशरण जोशी
5. उपनिवेशवाद और संघर्ष - हैरोल्ड एस तोपनो
6. कलम को तीर होने दो (झारखंड के आदिवासी हिन्दी कवि) - रमणिका गुप्ता
7. महुआ का फूल(कहानी संग्रह) - मंगल सिंह मुण्डा

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. वाचिकता - वंदना टेटे
2. आदिवासी प्रतिरोध - केदारनाद मीणा
3. परंपरा इतिहास-बोध और संस्कृति - श्यामचरण दूबे
4. आदिवासी लोक की यात्राएँ - हरि राम मीणा
5. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य - डॉ रजत रानी मीनू, वन्दना

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

Model Qustion Paper Sets

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-I
POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS
M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

FOURTH SEMESTER -M23HD06DE-आदिवासी अस्मिता और हिन्दी साहित्य
CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours Maximum Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. पुरखा साहित्य (Ancestor Literature) किसे कहा जाता है?
2. जसिंता केरकेट्टा की प्रमुख कविताओं के नाम लिखिए।
3. आदिवासी समाज की प्रमुख समस्याएँ संक्षेप में लिखिए।
4. आदिवासी समाज में विस्थापन के प्रमुख कारण लिखिए।
5. जसिंता केरकेट्टा की किसी दो महत्वपूर्ण कविताओं के नाम लिखिए।
6. प्रमुख आदिवासी कहानीकारों के नाम लिखिए।
7. हरिराम मीणा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।
8. 'ब्लेक लिटरेचर' से क्या तात्पर्य है? (5×2 = 10 Marks)

SECTION - B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. विस्थापन से क्या तात्पर्य है? उसके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों पर चर्चा कीजिए।
10. आदिवासी कवियों की प्रमुख विशेषताओं एवं उनके साहित्यिक योगदान का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।
11. 'राष्ट्रगान बज रहा है' कविता में चित्रित समस्याओं पर टिप्पणी लिखिए।
12. आत्मकथात्मक लेखन से क्या तात्पर्य है? इसके प्रयोग, महत्व एवं साहित्यिक विशेषताओं पर विवेचना कीजिए।
13. 'महुआ का फूल' कहानी में अभिव्यक्त शोषण के रूपों पर विचार प्रकट कीजिए।

SGOU

14. भारतीय संदर्भ में आदिवासी आन्दोलन के कारणों, स्वरूप और प्रमुख मांगों पर टिप्पणी लिखिए।

15. आदिवासी साहित्य के विभिन्न रूपों—काव्य, कथा, लोककथा, गीत और मौखिक परंपरा—का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

16. आदिवासी अस्मिता की अवधारणा पर विचार कीजिए तथा साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति के उदाहरण दीजिए।

17. 'राष्ट्रगान बज रहा है' कविता में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता की भावना पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

18. आत्मकथात्मक लेखन से क्या तात्पर्य है? इसके प्रकार, गुणधर्म एवं साहित्यिक उपयोगिता का विवेचन कीजिए। (6×5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

19. आदिवासी कौन होते हैं? उनके जीवन, संस्कृति और पहचान की मुख्य विशेषताओं को सरल शब्दों में समझाइए।

20. आदिवासी अस्मिता क्या होती है? आदिवासी समाज अपनी पहचान कैसे बचाए रखता है—इस पर अपने विचार लिखिए।

21. आदिवासी कविता पर एक सरल लेख लिखिए—इसकी प्रमुख विशेषताएँ, विषय, महत्वपूर्ण कवि और उनकी अभिव्यक्ति पर चर्चा कीजिए।

22. आदिवासी कहानियों में दिखाए गए आदिवासी जीवन, समस्याओं, संघर्ष और संस्कृति पर अपने विचार लिखिए। (2×15 = 30 Marks)

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-II
POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS
M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

FOURTH SEMESTER -M23HD06DE-आदिवासी अस्मिता और हिन्दी साहित्य
CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours Maximum Mark: 70

SECTION A

I. **किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।**

1. आदिवासी विषय पर लिखे गए प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथों के नाम लिखिए।
2. 'विलोपन' से क्या तात्पर्य है?
3. प्रमुख आदिवासी कविताओं के नाम लिखिए।
4. जसिंता केरकेट्टा की प्रमुख कविताओं के नाम लिखिए।
5. 'अमली' कहानी की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
6. प्रमुख आदिवासी कहानियों के नाम लिखिए।
7. वन अधिकार अधिनियम के प्रमुख उद्देश्यों को लिखिए।
8. चुआर आन्दोलन संक्षिप्त विवरण कीजिए

(5×2 = 10 Marks)

SECTION - B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया और आदिवासियों के शोषण पर चर्चा कीजिए।
10. भारत के वन अधिकार कानून पर चर्चा कीजिए।
11. मदन कश्यप की कविता 'आदिवासी' का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।
12. आदिवासी आन्दोलनों के प्रमुख कारणों और उनके प्रभावों पर विचार कीजिए।
13. कोल विद्रोह पर टिप्पणी लिखिए।
14. 'तुमने स्कूल बनाया' कविता में अभिव्यक्त समस्याओं पर विचार कीजिए।
15. 'सबसे बड़ा खतरा' कविता में अभिव्यक्त समस्या पर विचार प्रकट कीजिए।

SGOU

16. आदिवासी कहानियों में चित्रित संघर्ष एवं प्रतिरोध पर टिप्पणी लिखिए।

17. 'राजकुमारों के देश में' कहानी का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए। (6×5 = 30 Marks)

SECTION – C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

18. आदिवासी कौन होते हैं? उनके जीवन और पहचान के मुख्य पहलुओं पर चर्चा कीजिए।

19. भारत के प्रमुख आदिवासी आंदोलनों पर सरल रूप में चर्चा कीजिए।

20. पठित कविताओं के आधार पर आदिवासी कविता में प्रकट प्रतिरोध पर विचार लिखिए।

21. आदिवासी कहानियों की मुख्य विशेषताओं पर सरल टिप्पणी लिखिए। (2×15 = 30 Marks)

SGOU

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ്വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin : 673002
Ph: 04952920228
email:rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery
Kannur, Pin : 670106
Ph: 04952990494
email:rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tirpunithura, Ernakulam
Kerala, Pin : 682301
Ph: 04842927436
email:rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad
Kerala, Pin : 679303
Ph: 04662912009
email:rcddirector@sgou.ac.in

DON'T LET IT BE TOO LATE

SAY NO TO DRUGS

LOVE YOURSELF AND ALWAYS BE HEALTHY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SGOU

आदिवासि अस्मित और हिन्दी साहित्य

COURSE CODE : M23HD06DE

SGOU

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841

ISBN 978-81-990686-1-2